श्रीगणेशाय नमः ।

अथ काश्मीरदैशिकज्योतिःसंग्रहः ।

ॐ अर्के प्रकाशति विश्वं यत्र तत्प्रेरितस्त्वऽयम् । काश्मीरदैशिकं कुर्वे ज्योतिः-केशवभट्टकः ॥ १ ॥

ॐ नवग्रहेभ्यो नमः ।

जिस परमात्मागर भिन्न अभिन्न आदिक निर्णय न होने से अनिर्वाच्य स्वाभाविक, इह दृश्य विश्व, सूरज पर प्रकाश जैसा भासता है. उस परमात्माके इच्छाने प्रेरित हुवा घटीयन्त्र आदिक सा जडरूप यह ज्योतिर्वित् केशव भट्टनामक काश्मीरिकब्राह्मण काश्मीरदेशनिवासीजनों का उपयोगि काश्मीरदैशिकज्योतिषसंग्रहनामक ज्योतिसंग्रह करता है ॥ १ ॥

(ग्रहाः) आदित्यसोमभौमाश्च बुधेज्यशुक्रपङ्गवः । व-
शाः सप्त खेटास्तु राहुकेतुयुता नव ॥ २ ॥

(नक्षत्राणि) अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृग-
शिराः, आर्द्रा, पुनर्वसुः, तिष्यः, अश्लेषा, मघा, पूर्व-
फल्गुनी, उत्तरफल्गुनी, हस्तः, चित्रा, स्वातिः
विशाखा, अनूराधा, ज्येष्ठा, मूलं, पूर्वाषाढा, उत्त-
राषाढा, (अभिजित्) श्रवणं, धनिष्ठा, शतभिषक्,
पूर्वभाद्रपदा, उत्तरभाद्रपदा, रेवती ॥ ३ ॥

(नक्षत्रसंज्ञा) उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च (ध्रुवं स्थिरम्) ।
स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि (चलं चरम्) ॥ पूर्वा-
त्रयं याम्यमघे (उग्रं क्रूरं) कुजस्तथा ॥ विशाखाऽग्नेयभे
सौम्यो (मिश्रं साधारणं) स्मृतम् ॥ हस्ताऽश्विपुष्याऽ-

(ग्रहों के नाम) सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, और
शनि, यह सात ग्रह वारों के स्वामी हैं, तथा राहु केतु
युक्त नवग्रह नामक हैं ॥ २ ॥
(नक्षत्र) ये अठाईस नक्षत्र हैं, परन्तु (अभिजित) क्रमसे
नियमित वर्तमान न होने के कारण मुख्य सत्ताईस ही
माने गये हैं ॥ ३ ॥
(नक्षत्रसंज्ञा) तीन उत्तरा ३ रोहिणी और सूरज को भी
(ध्रुव व स्थिर) कहते हैं। स्वा, पुं, श्र, ध, श, और
चन्द्र को भी (चर व चल) कहते हैं। पूर्वा ३ भ, म,
और भौम को (उग्र व क्रूर) कहते हैं। वि, कृ. और
बुधको (मिश्र व साधारण) कहते हैं। ह, ऽश्वि, पु, ऽभि
और गुरु को (क्षिप्र व लघु) कहते हैं। मृ, रे, चि, अनू,
और शुक्र को (मृदु व मैत्र) कहते हैं। मू, ज्ये, अर्द्रा,
अश्ले, और शनि को (तीक्ष्ण व दारुण) कहते हैं ॥ ४ ॥
(राशि) मेष आदि बारह राशियां हैं ॥ ५ ॥

भिजितः (क्षिप्रं लघु) गुरुस्तथा ॥ मृगाऽन्त्यचित्रा
मित्रर्क्षं (मृदु मैत्रं) भृगुस्तथा । मूलेन्द्राऽऽर्द्राऽहिभं सौ
रि(स्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम्) ॥ ४ ॥

(राशयः) मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके ।
तुलाथ वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भमीनकौ ॥ ५ ॥

(राशिस्वामिनः) अश्वि-भर-कृत्पादो (मेषो भौमस्य) ।
कृत्त्र्यंशं रोहिणी मृगार्धं (वृषो भार्गवस्य) । मृगार्धं
आर्द्रापुनर्वसुत्र्यंशं (मिथुनंबुधस्य) । पुनर्वस्वंऽशंतिष्याऽ-
श्लेषान्तं (कर्कटश्चन्द्रस्य) । मघापूर्वफल्गुन्युत्तरफल्गु-
त्र्यंशं (सिंहः सूर्यस्य) । उत्तरफल्गुत्र्यंशं हस्तचित्रार्धं
(कन्याबुधस्य) । चित्रार्धं स्वातिविशाखात्र्यंशं (तुला
भार्गवस्य) । विशाखांशं अनुराधाज्येष्ठान्तं (वृश्चिकोऽ-

राशिस्वामी) की नक्षत्र को चार चरण हैं, तथा हरराशि नौ चरणवाला होता है । वह क्रमसे दिखाता है । अश्वि ४, भ ४, और कृत्तिका का एक १ चरण सब नौ चरण (मेषराशि) भौमका गृह है । ऐसा आगे भी जानना । कृ ३ रो ४ मृ २ यह नौ चरण (वृषराशि शुक्र का) घर है । मृ २ आर्द्रा ४ पुं ३ यह नौ (मिथुनराशि बुध का) घर है । पुं १ ति ४ श्ले ४ यह नौ (कर्कटराशि चन्द्रका) घर है । म ४ पूफां ४ उफां १ यह नौ (सिंहराशि सूर्य) का घर है । उफां ३ ह ४ चि २ यह नौ (कन्याराशि बुधका) घर है । चि २ स्वा ४ वि ३ यह नौ (तुलाराशि शुक्रका) घर है । वि १ अनू ४ ज्ये ४ यह नौ (वृश्चिकराशि भौम का) घर है । मू ४ पूषा ४ उषा १ यह नौ (धनुराशि गुरुका) घर है । उषां ३ श्र ४ धनि २ यह नौ (मकरराशि शनिका) घर है । धनि २ शतां ४ पूभां ३ यह नौ (कुम्भराशि शनिका) घर है ।

ङ्गारकस्य)। मूलंपूर्वाषाढोत्तराषाढांऽशं (धनुर्देवगुरोः)।
उत्तराषाढात्र्यंशं श्रवणधनिष्ठार्धं (मकरःसौरस्य)। धनि
ष्ठार्धं शतभिषक्पूर्वभाद्रपदात्र्यंशं (कुम्भः सौरस्य)। पू
भाद्रपदांशं उत्तरभाद्रपदारेवत्यन्तं (मीनोजीवस्य)॥ ६

(मासादि) चैत्रवैशाखज्येष्ठाश्वाऽषाढश्रावणभाद्रपात्। आ
श्विनकार्तिकमार्गपौषमाघाः सफाल्गुनाः। मासाः, प
कृष्णशुक्लौ चैत्राद्यौद्वौ तथर्तवः ॥ वसन्तग्रीष्मवर्षा
शरद्धेमन्तशैशिराः। अयनं कर्कनक्रादि षट् षट्
दक्षिणोत्तरे ॥ ७ ॥

(दिनानि) प्रतिपत् द्वितीया तृतीया चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी
सप्तमी अष्टमी नवमी दशमी एकादशी द्वादशी त्रयो
दशी चतुर्दशी (शुक्ले) पूर्णिमा (कृष्णे) अमावस्या ॥ ८ ॥

पूभां १ उभां ४ रे ४ यह नौ (मीनराशि गुरुका) घर है ॥ ६ ॥
(मासदि) चैत्र, वैशाख, जेठ, आषाढ, सावण, भाद्रो, असोन, कतक, मगर, पौष, माघ, और फागन, यह बारह मास हैं। कृष्णपक्ष और शुक्ल दो पक्ष हैं। चेत से दो दो मास एक ऋतु है। जैसा, चेत वैसाख यह दो (वसन्त) जेठ आषाढ यह दो (ग्रीष्म) सावण भाद्रो यह दो (वर्षा) असोन कतक यह दो (शरत्) मगर पौष यह दो (हेमन्त) तथा माघ और फगन, यह दो महीने (शिशिर) ऋतु है ॥ तथा कर्कट संक्रान्ति से छः मास दक्षिणायन और मकरसंक्रान्ति से छः मास उदगयन से कहते हैं ॥ ७ ॥

(दिन) दिनों की नाम है ॥ ८ ॥

(तिथि) १,६,११ इन दिनों का नाम नन्दा। २,७,१२ इन का नाम भद्रा। ३,८,१३ इन का नाम जया। ६ इन का नाम रिक्ता। और ५,१०,१५,३० इन

(तिथयः) नन्दा १,६,११, भद्रा २,७,१२, जया ३,
१३, रिक्ता ४,९,१४, पूर्णा ५,१०,१५, ॥९॥ [करणानि
(शुक्लप्रतिपद्द्वितीयार्धात्) ववः, बालवः, कौलवः, तैति-
लः, गरः, वणिजः, विष्टिः (इति सप्त चराणिकरणानि,
कृष्णचतुर्दशीद्वितीयदलात्) शकुनिः चतुष्पात् नागः
किंस्तुघ्नः (इति चत्वारि स्थिराणि) ॥ १० ॥

(योगाः) विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यशोभनस्त-
था । अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ।
गण्डं वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा । वज्रं सि-
द्धिर्व्यतीपातो वरीयान्परिघः शिवः । सिद्धिः साध्य-
शुभः शुक्लो ब्रह्मैन्द्रवैधृतिः क्रमात् ॥ ११ ॥

(उच्चादि) अजवृषभमृगाऽङ्गनाकुलीरौ झषवणिजौ च दि-

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	तिथयः
१.६,११	२,७.१२	३,८,१३	४,९,१४	५,१०,१५ ३०	दिनानि

र्णातिथि है ॥ ९ ॥ करणों का नाम

शुक्लप्रतिपदाके द्वितीयार्धसे "वव, वालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि" यह सात चरकरण हैं। तथा कृष्णचतुर्दशी प्रथमार्ध तक आठ वार से आते हैं। और चतुर्दशी के द्वितीयदल से "शकुनिः, चतुष्पात्, नाग, किंस्तुघ्न" यह

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
किं	वा	तौ	वै	वव	कौ	गर	वि	वा	तै	व	वव	कौ	गर	वि	पूर्वा शु० पक्ष
वव	कौ	कौ	वि	वा	तै	व	वव	कौ	गर	वि	वा	तै	वणि	वव	उत्तर
वा	तै	व	वव	कौ	गर	वि	वा	तै	व	वव	कौ	ग	वि	च	पूर्वा कृष्णपक्ष
[illegible]	गर	वि	वा	तै	व	बव	कौ	गर	वि	वा	तै	व	शकु	ना	उत्तर

र स्थिरकरण शुक्लप्रतिपदा के प्रथमार्ध तक होते हैं ॥ १०॥

वाकरादितुङ्गाः । दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशैस्त्रिनं वकविंशतिभिश्च तेऽस्तनीचाः ॥ मिथुने वृश्चिके राहुः केतुरुच्चोऽस्तगोऽन्यथा ॥ १२ ॥

सिंहो वृषः प्रथमषष्ठहयाङ्गतौलिकुम्भास्त्रिकोणभवनानि भवन्ति सूर्यात् ॥ १३ ॥

(विवाहादिनिषिद्धकालाः) मलमासभानुमासौ सिंहचापाऽश्रितं रविम् । अस्तं शुक्रेज्ययोर्बाल्यं वृद्धत्वं पितृपक्षकम् । न्यूनमासं विश्वघस्रपक्षं चाऽदर्शनं विधोः ॥ निरंशं भास्करं वर्षप्रान्तपक्षं घटीत्रयम् । भान्ते मासेऽन्त्यैकघस्रं तिथ्यन्ते च घटीद्वयम् । सूर्येन्दुग्रहणादिं च शुभकृत्येषु संत्यजेत् ॥ १४ ॥

पुरः पश्चाद्भृगोर्बाल्यं त्रिदशाहं च वार्द्धकम् । पक्षं पञ्च-

(योग) विष्कुम्भादिक सताईस योग, नामात्मक फल देते हैं ॥ ११ ॥

(उच्चादि) मेष के १० दस अंशतक सूरज, वृष के ३ तीन तक चन्द्र, मकर के २८ अट्ठाईस तक भौम, कन्या के १५ पन्द्राह तक बुध, कर्कट के ५ तक गुरु, मीन के २७ सताईस तक शुक्र, और तुला के २० वीस तक शनि, और मिथुन में राहुः, वृश्चिक में केतु, भी परमोच्च होते हैं, तथा उच्चराशिक सप्तमराशि के अंशोंपर परमनीच हैं। याने तुला में १० दस सूर्य, वृश्चिक में ३ तीन चन्द्र, कर्कट में २८ भौम, मीन में १५ बुध, मकर में ५ जीव, कन्या में २७ शुक्र, मेष में २० शनि, धनु में राहु तथा वृष में केतु परमनीच कहतें हैं ॥ १२ ॥

सिंह सू, का वृ चं, मे भौ, कं बु, धं जी, तुं शु और कुम्भ शनि का मूलत्रिकोण नामक हैं ॥ १३ ॥

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	रा	के	ग्रहाः
मे १०	वृ ३	मं २८	कं १५	क ५	मी २७	तु २०	मि ०	वृं ०	उच्चानि
तुं १०	वृं ३	मी २८	मी १५	मं ५	कं २७	मे २०	धं ०	वृ ०	नीचानि
सिं २०	वृ ३	मे १२	कं १५	धं १०	तुं १५	कुं २०			मूलत्रिकोण
सिं ०	क ०	मे वृं	मि कं	धं मी	वृ तुं	मं कुं	मि ०	वृ ०	स्वगृहानि

(विवाह उपनयन आदिक शुभकार्यों पर निषिद्ध समय कहते हैं ॥) मलमास भानुमास सिंह और धनुराशिमें सूर्य अर्थात् (भाद्रों और पौषमास) जीव और शुक्र का अस्त-काल और उनके अस्तकाल के पहले पीछे यथोक्त दिनों को कहते बाल्यावस्था वृद्धावस्था, पितृपक्ष (द्विसङ्क्रान्ति-मासः क्षयाख्यः कदाचिदित्युक्तेः) मासकी कमीहोना, तेरा

दिनं ते द्वे गुरोः पक्षमुदाहृते ॥ ते दशाहं द्वयोः प्रोक्ते
केश्चित्सप्तदिनं परैः । त्र्यहं लाऽत्ययिकेऽप्यन्यैरर्धाहं
च त्र्यहं विधोः ॥ १५ ॥ [नरादिसंज्ञाः]
प्रोक्ता नराः सूर्यकुजाऽमरेज्याः क्लीबौ शनिज्ञौ युवती सि-
तेन्दू । क्रूराः खेटा राहुमन्दार्कभौमाः पापः सौम्यस्तै-
र्युतः क्षीण इन्दुः । पूर्णश्चन्द्रः सौम्यशुक्राऽमरेज्याः
सौम्याः सर्वे चन्द्रयुक्ता बलाढ्याः ॥१६॥ [केन्द्रादिसंज्ञाः]
अथच केन्द्रचतुष्टयकण्टकं तनुसुखाऽम्बरसप्तमभं स्मृ-
तम् । फणफरं धनलाभसुताऽष्टमं सहजशत्रुनवान्त्यमऽ-
पोक्लिमम् ॥ १७ ॥
मूलत्रिकोणं नवपञ्चमर्क्षं स्यात्त्रित्रिकोणं नवमं च तद्वत् ।
षष्ठं त्रिकोणं रिपुभं निरुक्तं तुर्याऽष्टमर्क्षं चतुरस्रसंज्ञम् ॥

दिनवाला पक्ष, चन्द्रका अस्त, संक्रान्ति, चैत्रकृष्णपक्ष नक्षत्रकी पिछली तीन घटी, मासका पीछला दिन, तिथिके पीछले दो घटी, सूर्य और चान्द का ग्रहण, इह सब विवाह आदिक शुभकर्मों पर छोडना ॥ १४ ॥

शुक्र के पश्चिमोदय पर दस दिन, और पूर्वोदय पर तीन दिन वाल्यावस्था है । तथा पूर्वास्तपर पंद्राह दिन, और पश्चिमास्त पर पांच दिन वृद्धावस्था है ॥ गुरू के उदयपर पंद्रह दिन वाल्यावस्था, और अस्तपर पंद्राह दिन वृद्धावस्था है ॥ उस पर भी मतभेद हैं । कि कई आचार्य दानू शुक्र और जीव को भी दानू अवस्था दस दिन कहते, कई सात दिन, कई आवश्यक पर तीन दिन, कई आधाही दिन कहते हैं । और चान्दकी दानू अवस्था (अचं से उचं तक) अर्थात् "चन्द्रास्त से चन्द्रोदय तक" तीन दिन कहते हैं ॥ १५ ॥

(नरआदिसंज्ञा) सू-भौ-जीवों को पुंग्रह, बु-श-को क्लीव

ौर चं-शु को स्त्रीग्रह कहते हैं। सू-भौ-श-रा-के को ापग्रह इनके साथ बु और क्षीणचन्द्र (क्षंचं)को भी पापग्रह हते हैं। पूर्णचन्द्र बु-जी-शु को शुभग्रह कहते हैं।

पुंग्रहः	स्त्रीग्रहः	क्लीव	पापग्रहः	शुभग्रहः
सू भौ जी	चं शु	बु श	सू भौ श रा के (क्षंचं)सपापोबु	चं बु जी शु

तथा सब ग्रह चान्दके युक्त होने से बलिष्ठ होते हैं। १६ ॥

[केन्द्रादि नाम]

लग्न १ चतुर्थ ४ सप्तम ७ और दशम १० गृहको [केन्द्र चतुष्टय कराटक] कहते हैं। धन २ पञ्चम ५ अष्टम ८ और ग्याराग्रह ११ को [पणफर]। तथा सहज ३ शत्रु ६ नव ९ अन्त्य १२ घर को [आपोक्लीम] कहते हैं॥ १७ ॥

९-५-घर को मूलत्रिकोण। ९ घर को त्रित्रिकोण, ९, घरको त्रिकोण, ४-८ घरको चतुरस्त्र, ३-६-१०-११ घरको

दुश्चिक्यलाभाऽम्बरषष्ठगेहं प्रोक्तं तथैवोपचयं त्रिकं तु
षडन्त्यरन्ध्रं च निजं नवांशं वर्गोत्तमाख्यं विबुः
वदन्ति ॥ १८ ॥ [अदृश्यादिसंज्ञाः

लग्नस्य भोग्या द्युनभस्य भोक्ता अदृश्यखण्डाऽनुदि
च संज्ञे । भोग्यांशकाः द्यूनगृहस्य भुक्ता दृश्यं वि
ग्नस्य तथोदिताख्यम् ॥ १९ ॥

दर्शाऽवधि मासमुशन्ति चान्द्रं सौरं तथा भास्कर
भोगात् । त्रिंशद्दिनं सावनसंज्ञमाहुर्नाक्षत्रमिन्दोर्भगण
भ्रमेण ॥ विवाहाऽदौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावन
स्मृतः । वार्षिके पितृकृत्ये च मासश्चान्द्रमसो मतः ॥२०॥

(चतुष्पदादिसंज्ञा) मेषवृषधनुसिंहाश्चतुष्पदाः मकरपूर्वभा
गश्च । कीटः कर्कटराशिः सरीसृपो वृश्चिकः कथितः ।

उपचय, ६-८-१२ घरको त्रिक, और अपने नवांशको

कण्टक	पणफर	आपोक्लि	उपचय	त्रिक	अपनानवांश
१,४,७ १०	२.५ ८ ११	३,६,९ १२	३,६,१० ११	६,८,१२	वर्गोत्तम

वर्गोत्तम कहते हैं ॥ १८ ॥ [अदृश्यादिसंज्ञाः]

लग्न के जितने अंशहो उतने अंशों तक सप्तम भावको [अदृश्य और अनुदित] कहते हैं। वैसा सप्तम घर के जितने अंशों स लग्न के उतने अंशों तक [दृश्य और उदित] कहते हैं ॥ १९ ॥

शुक्लप्रतिपदा से अमावसी तक चांन्द्रमान से पितृकृत्यादिक पर मास गिनते हैं॥ एक संक्रान्तिसे दूसरे संक्रान्तितक सौरमान से विवाहादिक पर मास गिनते हैं॥ तीस दिनों से सावनमान से यज्ञादिक पर मास है ॥ सताईस नक्षत्रों पर चन्द्रके भोग से नक्षत्रमानसे मास गिनते हैं ॥ २० ॥

मकरस्य पश्चिमार्धं कुम्भो मीनश्च जलचराः ख्याताः
मिथुनतुलाधरकन्याद्विपदाख्या धनुःपूर्वभागश्च ॥ २१॥

चतुष्पदः	कीटः	जलचर	मनुष्य
मे वृ, सिं, धं पश्चार्ध मं का पूर्वार्ध	क वृं	मं का पश्चार्ध कुं. मी,	मि, कं, तुं धं का पूर्वार्ध

यह चतुष्पदादिसंज्ञक राशि हैं ॥ २१ ॥ इति संज्ञाप्रकरणम्

॥ अथ मुहूर्तप्रकरणम् ॥

(सीमन्तोन्नयनं) जीवाऽर्काऽरदिने मृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितिहस्तभे रिक्ताऽमाऽर्करसाऽष्टवर्जतिथिभिः सीमन्तकर्म शुभम् ॥ १ ॥

सू, भौ, जी यह तीन वार, मृ, ति, मू, श्र, पुं ह, यह नक्षत्र, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५, इन दिनं पर, स्त्रियों को दूध देना अच्छा है ॥ १ ॥

(विद्यारम्भः) मृगात्कराच्छ्रुतेस्त्रयेऽश्विमूलपूर्विकात्रये । गुरुद्वयेऽर्कजीवचित्सितेऽह्नि षट्शरत्रिके ॥ शिवार्कदिग्द्विके तिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः । शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ॥ २ ॥ केवल गु, शु वार

(विद्यारम्भ) ऽश्वि, मृ, ऽर्द्रा, पुं, ति, ऽश्ले, पू ३, ह, चि, स्वा, मू, श्र, धं, श, यह नक्षत्र २, ३, ५, ६, १०, ११, १२, यह तिथि सू, बु, जी, शु, यह वार लग्न में शुभग्रह १,४,५,७,९,१०, इन स्थानो में होने पर विद्यारम्भ करना श्रेष्ठ हैं ॥ कई रो,अनू,उ३,रे इन नक्षत्रों पर भी कहते हैं ॥ २ ॥

(मुण्डनं) षट्कृत्तिका पञ्चमघा त्रिमैत्रो ब्रह्माष्टको यश्चतुरुत्तरश्च । क्षौरे स वर्षं चतुराननोऽपि न प्राणितीति प्रकटप्रवादः ॥ चतुर्थीमष्टमीं षष्ठीममावस्यां चतुर्दशीम् । नवमीं चार्कमन्दारान् क्षौरकर्मणि वर्जयेत् ॥ ३ ॥

(मण्डन) कृ, रो, मं, उ३, ऽनू, यह नक्षत्र, तथा १, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३०, यह तिथि और सू, भौ, श, यह वार छोडकर मण्डन करना अच्छा है ॥ ३ ॥

(जातकर्म) तज्जातकर्मादि शिशोर्विधेयं पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेऽह्नि । एकादशे द्वादशकेऽपि घस्रे मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्यात् ॥ ४ ॥

(जातकर्म) बालक को ग्यारवां या बारवां दिन पर जातकर्म करना चाहिये। उन दो दिनों पर नहोने से यह १, ४, ९, १४, १५, ३०, तिथि छोड कर, चं, बु, जी, शुक्रवार पर ऽश्वि, रो, मृ, पुं, ति, ह, चि, स्वा, अनू, उ ३ श्र, धनि, श, रे, इन नक्षत्रों पर करना अच्छा हैं ॥ ४ ॥

(चूडा) चूडा वर्षात्तृतीयात्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्तोऽर्कषष्ठीपर्वोनाऽह्ने विचैत्रोपनयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यका-

नाम् । वारे लग्नांशयोश्चाऽस्वभनिर्धनतनौ नैधने शु-
द्धियुक्ते शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः ॥
धनव्ययत्रिकोणगैरसद्ग्रहैर्मृतावऽपि । क्षुरक्रिया न शोभना शुभैस्तु पुष्टिकारणी ॥ विद्धं क्रूराऽश्रितमृक्षं वर्ज्यमेकार्गलं तथा । कृष्णपक्षेऽप्याऽऽदित्र्यंशे चौलं कार्यं नचाऽन्यथा ॥ सूर्याचन्द्रमसोःशुद्धिर्ग्राह्या गोचरवीक्षणात् ॥ त्रिकर्मलाभोऽरिगतः शुभोऽर्को हानिप्रदो वेदव्ययोऽष्टगश्च । नवद्वितीयाऽऽदिमसप्तपञ्चस्थितो नरस्यैव शुभोऽर्चनादिभिः ॥ साऽब्ध्यस्मरोपचयगस्त्रिकोणेऽब्जः सिते शुभः ॥ ५ ॥

(चूडा) गर्भाधान या जन्म से तीसरा वर्ष आरम्भ करके विषम वर्ष में तथा ४, ६, ८, ९, १२, १४, १५, ३०,

यह तिथि तथा चैत्र (मी-सू) सावण (क-सू) भाद्रों (सिं-सू) पौष (धं-सू) यह मास छोडकर ऽश्वि, मृ, पुं, ति, ह, चि, स्वा, ज्ये, श्र, धनि, श, रे, यह नक्षत्र चं, बु, जी, शु, यह वारपर, तथा अपने जन्मलग्न व राशि से अष्टम घर का लग्न न होने पर । और लग्न से अष्टमघर शुद्धि होने तथा ३, ६, ११, घर में पापग्रह होने पर चूडा करना अच्छा है ॥ तथा २, ५, ८, ६, १२, घर में क्रूर ग्रह अच्छा नहीं, परन्तु शुभग्रह हो तो अच्छे हैं ॥ वेध, युति, एकार्गल यह तीन दोष और कृष्णपक्ष के पञ्चमी तक छोड के, चूडा करना अच्छा है ॥ जन्मराशि से सूर्य और चन्द्रमा की शुद्धि देखना चाहिये ॥ कि जन्मराशि से सूर्य ३, ६, १०, ११, अच्छा १, २, ५, ७, ६, मध्यम और ४. ८, १२, घर में अनिष्ट है । तथा कृष्णपक्ष में चन्द्र १, २, ३, ५, ६, ७, ६, १०, ११, और शुक्लपक्षीय सब स्थानों में शुभ है ॥ ४ ॥

(मौञ्जी) विद्धमृक्षं क्रूरजुष्टं त्याज्यमेकार्गलमपि ।
नभोभाद्रमहस्यांश्च दुर्बलेन्दुं क्रूरग्रहम् । भूनन्दनाऽर्कि-
वारौ च मौञ्जीबन्धे विवर्जयेत् ॥ त्रिप्रेन्दुपौष्णाचर-
वार्धर्क्षिमित्रशाक्रभेष्वऽर्कविद्गुरुसितेन्दुदिने व्रतं सत् ।
द्वित्रीष्विनेशदशाविश्वमिते तिथौ च कृष्णाऽऽदिमत्रिल-
वकेऽपि नचाऽपराह्ने ॥ षष्ठ्यांऽऽदिदिनचत्वारो भूतति-
थ्यां दिनत्रयम् । चतुर्थ्यां दिनमेकं तु ह्यऽष्टावेते गल-
ग्रहाः ॥ कवीज्यचन्द्रलग्नपा रिपौ मृतौ व्रतेऽधमाः ।
व्ययेऽब्जभार्गवौ तथा तनौ मृतौ सुते खलाः ॥ व्रत-
बन्धेऽष्टषट्रिप्फवर्जिताः शोभनाः शुभाः । त्रिषडाये
खलाः पूर्णो गोकर्कस्थो विधुस्तनौ ॥ जन्मर्क्षमास
लग्नादौ व्रते विद्याऽधिको व्रती ॥ आदिगर्भेऽपि वि-

प्राणां क्षत्रादीनामऽनादिमे ॥ रवीन्दुगुरुशुद्धिश्च ग्रा-
ह्या गोचरवीक्षणात् ॥ वटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायं-
द्विसप्तगः । श्रेष्ठो गुरुः खंषट्त्र्याद्ये पूजयाऽन्यत्रनि-
न्दितः । स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गु-
रुः ॥ रिष्फाऽष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थःशुभोप्यऽस-
न् ॥ अष्टवर्गविशुद्धेषु गुरुशीतांशुभानुषु । व्रतोद्वाहौ
प्रकर्तव्यौ गोचरेणाऽन्यथा तु चेत् ॥ ६ ॥

(मौञ्जी) मौञ्जी पर वेध युति, एकार्गल, यह तीन दोष, तथा सावण [क-सू] भाद्रों [सिं-सू] पोष [धं-सू] यह तीन मास, और चन्द्र का अस्त, १, ४, ६, ७, ८, ६, १४, १५, ३०, यह गलग्रहतिथि, और भौ, श यह वार छोड देना ॥ ऽश्विं, मृ, पुं, ति, ह, चि, स्वा, ऽनू, ज्ये, ऽभि, श्र, धं, श, रे यह नक्षत्र सू, चं, बु, जी,

शु, यह वार और २, ३, ५, ६, १०, ११, १२, १३, कृष्णपक्ष के पञ्चमी तक भी, दिन का अपराह्ण याने दिनमान का पीछला तीसरा भाग छोडकर मौञ्जी करना अच्छा है ॥ २ ॥ "लग्नशुद्धि" चं, जी, शु, और लग्नाधिप ६, ८, घर में तथा चं, शु १२ घर में, और पापग्रह १, ५, ८, घर में अशुभ है ॥ मौञ्जी पर शुभग्रह ६, ८, १२, घरों को छोड कर अन्यघर में, पापग्रह ३, ६, ११ घर में और पूर्णचन्द्र वृ, क, लग्न में अच्छे हैं ॥ ३ ॥

जब दो तीन बालकों को इकट्ठा संस्कार हो, तो जन्मनक्षत्र आदि ब्राह्मण बालकों में ज्येष्ठ को ही देखना, अन्यवर्णों कनिष्ठ को भी देखना ॥ जन्मराशि से सू, चं और जी, की शुद्धि भी गोचर से करना ॥ ४ ॥

बालक या कन्या के जन्मराशि से गुरु २, ५, ७, ६, ११, श्रेष्ठ १, ३, ६, १०, मध्यम ४, ८, १२, घर में अनिष्ट

है ॥ और "यह भी विचारना" कि जब अपने उच्च (क) स्वघर (धं, मीं) स्वमित्र (सू, चं, भौ) के घर (मे, क, सिं, वृं) या अपने नवांश या वर्गोत्तम में होवे, तो अनिष्ट-स्थान में भी अच्छा है। तथा अपने नीच (मं) शत्रु (बु, शु) के घर (वृ, मि, कं, तुं) में होवे, तो अच्छेस्थानों में भी अनिष्ट है ॥ ५ ॥

गोचर से बुरे भी अष्टवर्ग से सू, चं, और जी, की शुद्धि होने पर चूडा मौञ्जी और विवाह भी करना चाहिये ॥ ६ ॥

अत्र बिन्द्वऽधिके शुभं रेखाधिकेऽशुभं साम्ये तु पूजा विधेयेति ज्ञेयम् ॥ ७ ॥

सू, चं, जीवों में जो गोचर से अनिष्ट हो, उस की जन्मकुण्डली से अष्टकवर्ग बना कर, बिन्द्वैक्य ४ से

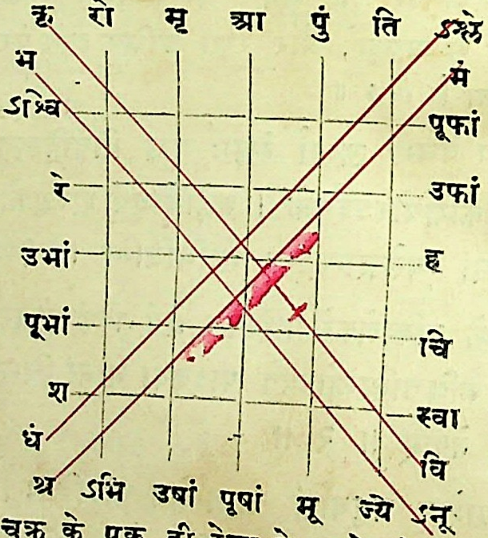
अधिक होने पर शुभ, समता पर (याने) ४ चार होने पर पूजा से अच्छा, और रेखा अधिक होने पर अनिष्ट फल होता है ॥ ७ ॥

(अथ वेधः) ऊर्ध्वा रेखाः पञ्च तिर्यक्स्थिताश्च द्वे द्वे रेखे कोणयोरऽत्रचक्रे । अग्नेर्धिष्ण्यं शम्भुकोणे द्वितीयनाड्यां न्यसेद्धान्यऽतः साभिजिन्ति ॥ १ ॥

चक्रे तस्मिन्नेकरेखास्थितेन ज्ञेयं विद्धं नूनमृक्षं ग्रहेण । कैश्चित्तस्मिन्प्रोच्यते पादवेधो भानां चिन्त्यश्चात्र युक्तिस्तु तेषाम् ॥ २ ॥

आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चाऽऽदिमः । द्वितीयेन तृतीयांशं तृतीयेन द्वितीयकः ॥ विद्धो ज्ञेयः पादवेधक्रम एवं प्रकीर्तितः ॥ ३ ॥

यह वेधचक्र प्रथम श्लोक का अर्थ है ॥ १ ॥



इस चक्र के एक ही रेखा के दूसरे नोक पर ठहरे हुई ग्रह से सीधा ठहरा हुवा नक्षत्र विद्ध होता है ॥

कई आचार्य नक्षत्रों का पाद वेध ही अनिष्ट कहते हैं, उनहों ने यह देखने की रीति भी कही है ॥ २ ॥

कि प्रथमपाद को चतुर्थपाद के, और द्वितीयपाद को तृतीयपाद के साथ पाद—वेध की विधि कहते हैं ॥ ३ ॥

(युतिः) स्वर्भानुमित्राऽसितभौमशुक्रैस्तुषाररश्मिः सहितोऽङ्गनानाम् । दौर्भाग्यवैधव्यभयानि दत्ते शुभं च दम्भोलिभृद्विज्यविद्याम् ॥ १ ॥

रा, सू, श, भौ, शु, से युक्त विवाहनक्षत्र, दुर्गति वैधव्य और भय को देता है । बु, जी, से युक्त हो तो अच्छा है, अर्थात् युतिदोष नहीं ॥ २ ॥

(एकार्गलः) व्याघातशूलपरिघव्यतिपातपूर्वगण्डाऽतिगण्डकुलिशेषु सवैधृतीषु । आदित्यचान्द्रपितृसार्पभदस्रमूलमैत्राख्यपुष्यसुरवार्धकिभानि मूर्ध्नि ॥ १ ॥

(लाट)व्याघात ।		शूल ।		परिघ ।		व्यतिपात ।		विष्कुम्भ	
पुं		मृ		मं		ऽश्ले		ऽश्वि	
आ	ति	रो	आ	ऽश्ले	पूफां	ति	मं	रे	भ
मृ	ऽश्ले	कृ	पुं	ति	उफां	पुं	पूफां	उभां	कृ
रो	मं	भ	ति	पुं	ह	आ	उफां	पूभां	रो
कृ	पूफां	ऽश्वि	ऽश्ले	आ	चि	मृ	ह	श	मृ
भ	उफां	रे	मं	मृ	स्वा	रो	चि	धं	ऽऽर्द्रा
ऽश्वि	ह	उभां	पूफां	रो	वि	कृ	स्वा	श्र	पुं
रे	चि	पूभां	उफां	कृ	ऽनू	भ	वि	ऽभि	ति
उभां	स्वा	श	ह	भ	ज्ये	ऽश्वि	ऽनू	उषां	ऽश्ले
पूभां	वि	धं	चि	ऽश्वि	मू	रे	ज्ये	पूषां	मं
श	ऽनू	श्र	स्वा	रे	पूषां	उभां	मू	मू	पूफां
धं	ज्ये	ऽभि	वि	उभां	उषां	पूभां	पूषां	ज्ये	उफां
श्र	मू	उषां	ऽनू	पूभां	ऽभि	श	उषां	ऽनू	ह
ऽभि	पूषां	पूषां	ज्ये	श	श्र	धं	ऽभि	वि	चि
उषां		मू		धं		श्र		स्वा	

गण्ड	अतिगण्ड	वज्र	वैधृति
मू	ऽनू	लि	त्रि
ज्ये पूषा	वि ज्य	पुं ऽश्ले	ह स्वा
ऽनू उषा	स्वा मू	ऽद्रां म	उफां वि
वि ऽभि	चि पूषां	मृ पूफां	पूफां ऽनू
स्वा श्र	ह उषां	रो उफां	म ज्ये
चि धं	उफां ऽभि	कृ ह	ऽश्ले मू
ह श	पूफां श्र	भ चि	ति पूषां
उफां पूभां	म धं	ऽश्वि स्वा	पुं उषां
पूफां उभां	ऽश्ले श	रे वि	ऽद्रां ऽभि
म रे	ति पूभां	उभां ऽनू	मृ श्र
ऽश्ले ऽश्वि	पुं उभां	पूभां ज्ये	रो धं
ति भ	आ रे	श मू	कृ श
पु कृ	मृ ऽश्वि	ध पूषां	भ पूभां
आ रो	रो भ	श्र उषां	ऽश्विं उभां
मृ	कृ	ऽभि	रे

एकामूर्ध्वयुतां त्रयोदश तथा तिर्यग्गताः स्थापये-द्रेखाचक्रमिदं बुधैर्निगदितं खार्जूरिकं चाऽत्र तु। व्याघातादिषु मूर्ध्नि भं तु कथितं दृष्ट्वैकरेखास्थयोः सूर्याचन्द्रमसोर्मिथो निगदितो ह्यक्पात एकार्गलः ॥ २ ॥

अन्यच्च व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वशूलोऽन्त्यवज्रे परिघोऽतिगण्डे। एकार्गलाख्यो ह्यऽभिजित्समेतो दोषः शशी चेद्विषमर्क्षगोऽर्कात् ॥ ३ ॥

चक्रों से प्रथम और द्वितीयश्लोक का अर्थ है॥ कि इन चक्रों में एक रेखाके दोनों नुकों पर ठहरे हुई सूर्य और चन्द्र का एकार्गल कहते हैं॥ २ ॥

और भी दूसरी युक्ति से देखते हैं। इन योगों पर सूर्ययुक्त नक्षत्र से साभिजित् गिनती करने में जब चन्द्रयुक्त नक्षत्र अयुग्म आवे, तो एकार्गल दोष पडता

सूर्याष्टकवर्गः ४८

सू	१,२,४,७,८, ९, १०, ११
चं	३, ६, १०, ११
भौ	१,२,४,७,८,९, १०, ११
वु	३ ५.६,९,१०.११,१२
जी	५, ६, ९, ११
शु	६, ७, १२
श	१,२.४,७,८,९,१०,११
ल	३,४,६,१०,११.१२

चन्द्राष्टकवर्गः ४९

चं	१, ३, ६, ७, १०, ११
भौ	२. ३, ५, ६, ९, १०,११
वु	१,३,४.५,७,८, १०,११
जी	१,४,७'८,१०,११,१२
शु	३,४,५.७,९,१०,११.
श	३, ५, ६, ११
लं	३, ६, १०, ११
सू	३,६,७,८.१०,११

भौमाष्टकवर्गः ३९

भौ	१,२,३,४,८.१०, ११
वु	३, ५, ६, ११
जी	६, १०, ११, १२
शु	६, ८, ११, १२
श	१,४,७,८,९,१०,११
लं	१,३,६,१०,११
सू	३,५,६,१०,११
च	३, ६,११

वुधाष्टकवर्गः ५४

वु	१.,३.५,६,९,१०,११,१२
जी	६, ८, ११, १२
शु	१,२,३,४,५,८,९,११
श	१,२,४,७,८,९,१०,११
लं	१,२,४,६,८,१०,११
सू	५,६,९,११,१२
चं	२,४,६,८,१०,११
भौ	१,२,४,७,८,९,१०,११

जीवाष्टकवर्गः ५६

जी	१,२,३,४,७,८,१०,११
शु	२,५,६,९,१०,११
श	३, ५, ६, १२
लं	१,२,४,५,६,७,९,१०,११,
सू	१,२,३,४,७,८,९,१०,११
चं	२,५,७,९,११,
भौ	१,२,४,७,८,१०,११
बु	१,२,४,५,६,९,१०,११

शुक्राष्टकवर्गः ५३

शु	१,२,३,४,५,८,९,११,१२
श	३,४,५,८,९,१०,११
लं	१,२,३,४,५,८,९,११
सू	८,११,१२
च	१,२,३,४,५,८,९,११,१२
भौ	३,५,६,९,१०,११,१२
बु	३,५,६,९,११
जी	५,८,९,१०,११

शन्यष्टकवर्गः ३९

श	३,५,६,११
लं	१,४,६,८,१०,११
सू	१,२,४,७,८,१०,११
च	३,६,११
भौ	३,५,६,१०,११,१२
बु	६,८,९,१०,११,१२
जी	५,६,११,१२
शु	६,११,१२

लग्नाष्टकवर्गः ४८

लं	३,६,१०,११
सू	३,४,६,१०,११,१२
चं	३,६,१०,११
भौ	१,२,६,१०,११
बु	१,२,४,६,८,१०,११
जी	१,२,४,५,६,७,९,१०,११
शु	१,२,३,४,५,८,९,१०
श	१,३,४,६,१०,११

है । वह सब शुभकर्मों पर अनिष्ट होता है ॥ ३ ॥

(अथ जामित्रं) चतुर्दशं तु नक्षत्रं जामित्रं लग्नभात्स्मृतम् । शुभयुक्तं तदिच्छन्ति पापयुक्तं विवर्जयेत् ॥ १ ॥

लग्ननक्षत्र से चौदमा १४ नक्षत्र को जामित्र कहते हैं, शुभग्रहयुक्त वह नक्षत्र हो, तो अच्छा, पापग्रहयुक्त हो, तो जामित्र दोष कारक छोडना चाहिये ॥ ४ ॥

(वेधयुत्येकार्गलजामित्राणि काश्मीरेष्ववश्यवर्ज्यानि)

काश्मीरदेश में यह चार दोष वर्ज्य कहे हैं ॥ १ ॥

(जातकमेलापनं) "अत्र काश्मीरे गणो भकूटो नाडी चेति त्रयएव दोषा त्याज्येत्वेन अवलोकयन्ति ॥"

(अथगणः) रक्षोनराऽमरगणाः क्रमतो मघाऽहिवह्निन्द्रमूलवरुणाऽनलतक्षराधाः । पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि मैत्राऽदितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥ १ ॥

स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः । मर्त्य
राक्षसयोर्मृत्युः कलहो देवरक्षसाम् ॥ २ ॥

चक्र से प्रथम श्लोक का अर्थ है ॥ १ ॥

देवगण	ऽश्वि, मृ, पुं, ति, ह, स्वा, ऽनू, श्र, रे
मनुष्य	भ, रो, आ, पू ३, उ ३
राक्षस	कृ, ऽश्ले, म, चि, वि, ज्ये, मू, धं, श

दोनों का एक ही गण में आपस में प्रेयम होवे देव और मनुष्यगण में मध्यम है । मनुष्य और राक्षस हो, तो मृत्यु होवे, देव और राक्षस होने पर आपस में झगडा रहेगा ॥ २ ॥

(भकूटः) मृत्युः षष्टाष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।
द्विद्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ १ ॥

षष्टाऽष्टके गोमिथुनं प्रदेयं द्विद्वादशाख्ये कनकाऽन्नताम्रम् । कास्यं सरूप्यं नवपञ्चके तु विप्रार्चनं हेम च नाडिदोषे ॥ २ ॥ विषमात्कन्यकाराशेः षष्ठं षष्ठाष्टकं न सत् । समात्षष्ठं शुभं ज्ञेयं विपरीतं न शोभनम् ॥ ३ ॥

वर व कन्या की जन्मराशियों को आपस में षष्ट ६ अष्टक ८ हो, तो फल मृत्यु है, वह दोष "गाई बैल" के दान से नष्ट होता है, ९ नव ५ पञ्चक हो तो अपत्यनाश है, सोना अन्न और ताम्र का दान से अच्छा है। २ द्वि १२ द्वादशी हो, तो निर्धन होवे, लुई सोना रूपा देने से अच्छा है ॥ इह तीन भकूटदोष छोड के और कुछ गिनती में आवें, तों अच्छे हैं ॥ नाडीदोष ब्राह्मणपूजा सहित सोने के दान से नष्ट जाता है ॥ और भी भकूट दोष पर

विशेष है । कि विषम (मे, मि, सिं, तु, धं, कुं) कन्याके राशि से वरराशि षष्ठमा हो, तो षष्ठाष्टक दोष है । तथा युग्म (वृ, क, कं, वृं, मं, मी) कन्याराशि से वरराशि षष्ठमा हो, तो अच्छा है ॥ और उस से उलटा "याने" अयुग्म कन्या राशि से वरराशि अष्टमा हो तो अच्छा है । और युग्म कन्या राशि से वरराशि अष्टमा हो तो दुष्ट है ॥ ३ ॥

(नाडी) ज्येष्ठारौद्राऽर्यमाऽम्भःपतिभयुगयुगे दस्रभं चाद्यनाडी पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्राऽन्तकवसुजलभं योनिबुध्न्ये च मध्या । वाय्वऽग्निव्यालाविश्वोडुयुगयुगमऽथो पौष्णभं चान्त्यनाडी दम्पत्योरेकनाड्यां परिणयनमऽसन्मध्यनाड्यां हि मृत्युः ॥ राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं यदि स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव । नाडीदोषो न गणानां

च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदेऽपि शस्तम् ॥ ४ ॥

प्रथमश्लोक का अर्थ चक्र से है ॥ वर व कन्या को एक-नाडी पर विवाह अच्छा नही है । परन्तु मध्यनाडी होवे, तो मृत्यु होवेगा ॥ "किं च" एक राशि में जव

आद्यनाडी	ऽश्वि, आ, पुं, उफां. ह, ज्ये, मू, श, पूभां
मध्यनाडी	भ, मृ, ति, पूफां, चि, ऽनू, पूषां, धं, उभां
अन्त्यनाडी	कृ, रो, ऽश्ले, म, स्वा, वि, उषां श्र, रे

दो नक्षत्र होवे, जैसे मेष में भरणी मनुष्यगण और कृत्तिका रक्षोगण हैं। या एक नक्षत्र में दो राशियां होवे "जैसे अन्त्य-नाडी कृत्तिका में मेष और वृषराशि को तथा द्विद्वादशी भी है" परन्तु वह राश्यैक्य या नक्षत्रैक्य होने से दोष नहीं हैं एकही नक्षत्र में पादों का अलग होने पर भी दोष नहीं ॥४॥

भवनपतिसुहृत्त्वं स्यात्तथैकाधिपत्यं यदि भवनवशि-

त्वं चैव षष्टाष्टकेऽपि । शुभकृदिह विवाहोऽन्यथान्यताराविशुद्धौ यदि खलु फणिचक्रे स्यान्न नाडीसमाजः । ५ ।

योनिचक्रं

योनिः	नक्षत्राणि
हयः	ऽश्वि श
महिषः	स्वा ह
सिंहः	धं. पूभा.
हस्ती	भ रे
छागः	कृ तै
वानरः	पूषा. श्र
नकुलः	उषा. ऽभि
सर्पः	रो मृ
मृगः	ऽनु ज्ये
श्वा	ऽर्द्रा मू
बिडालः	पु. ऽश्ले
मूषकः	म पूफा.
व्याघ्रः	चि वि
गौः	उफा. उभा.

(यह भी विशेष है) राशिस्वामियों की आपस में मैत्री हो, या एक ही स्वामी हो, या राशियों की आपस में वश्यता न हो, और ताराओं की शुद्धि होवे, एकनाडी भी न होवे, तो षष्टाष्टक आदि भकूट होने पर भी विवाह अच्छा है ॥ ५ ॥

(बलशुद्धि) लग्नेन्द्वोः केन्द्ररिःफाष्टस्थानसंस्थाःख-

ता द्वयोः । अन्योन्यवधदा नार्याः सपापो ग्लौः सितस्तु नुः ॥ शुक्रगुर्वोर्युतिर्भौमेज्ययोरन्योन्यहानिकृत ॥ उग्रग्रहैः सितचतुरस्रसंस्थितैर्मध्येस्थिते भृगुतनयेऽथचोग्रयोः । सौम्यग्रहैरऽसहितसन्निरीक्षिते भार्यावधो दहननिपातपाशजः ॥ नृनार्योर्जातके ह्येतत्तुलापुटवदुन्नयेत् ॥ ६ ॥ नैसर्गिकशत्रुमित्रचक्रम् ।

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	ग्रहाः
चं,भौ जी	सू,बु	सू,चं जी	सू,शु	सू भौ चं	बु,श	बु,शु	मित्राणि
बु	भौ जी शु,श	शु,श	भौ जी श	श	भौ जी	जी	समाः
शु,श	०	बु	चं	बु, शु	सू,चं	सू भौ चं	शत्रवः

दोनों को जन्मलग्न व राशि से १, ४, ७, ८, १०, १२ मा स्थान में पापग्रह हो, शुक्र व जीव या भौम व जीव का योग हो, तथा कन्या का पापयुक्त चन्द्र, वर का पापयुक्त शुक्र हो, तो आपस में अनिष्ट करते हैं॥ तथा वर को शुक्र से ४, ८ मा स्थान में पाप ग्रह हो, या शुभग्रह के योग या दृष्टि के विना पापग्रहों के वीच में शुक्र हो, तो कन्या का वध करता है॥ वर और कन्या के जातक में अनिष्टस्थानों की गिनती कर के आपस में समानता होने पर विवाह अच्छा है, विषमता होने पर आपस में अनिष्ट जानना चाहिये॥ ६॥

(वाग्दानं) विवाहोदितभैः कार्या कन्यादानप्रतिश्रुतिः॥ १॥

३ पू., धं, ध

विवाह नक्षत्र रो, मृ, म, उ३ ह, स्वा, ऽनू, मू, रे, पर कन्यादान की प्रतिज्ञा देना चाहिये॥ १॥

(विवाहः) चापाऽन्त्यसिंहयुग्मस्थं त्यजेद्भानुं करग्रहे । अदृश्येन्दुं कवीज्याऽस्तबाल्याद्यं चाऽरवासरम् ॥ मूलमैत्रमृगरोहिणीकरैः पौष्णमारुतमघोत्तरान्वितैः । निर्व्यधैर्हि खचरैर्मृगीदृशां पाणिपीडनविधिर्विधीयते ।१।

मिसं (आषाढ) सिंसू (भाद्रों) धंसू (पौष) मीसू (चैत) चन्द्र का अस्त (अंचं)जीव, और शुक्र का अस्त व बाल्यावस्था वार्धक्यावस्था और भौमवार भी छोड कर, ग्रहों के वेधरहित रो, मृ, म, उ३, ह, स्वा, ऽनू, मू, रे इन नक्षत्रों पर कन्याओं का विवाह होना अच्छा है ॥ १ ॥

(लग्नशुद्धि) त्याज्या लग्नेऽब्धयो मन्दात्षष्टे शुक्रेन्दुलग्नपाः । रन्ध्रे चन्द्रादयः पञ्च सर्वेऽस्तेऽब्जगुरू समौ ॥ रात्रावऽप्युदिते दिष्टे विवाहः शस्यते बुधैः ।१।

लग्न में शने से 'श, सू, चं, भौ" चार और उपग्रह रा, के, दो तथा षष्ठमें शु, चं, लग्नस्वामी तीन अष्टम में चान्द से "चं, भौ, बु, जी, शु' पांछ, सप्तममें सब ग्रह छोडना याने अनिष्ट हैं, परन्तु सप्तम में चं, जी, हो, तो सम हैं ॥ कहे हुई विवाह के समय पर रात में भी विवाह करना चाहिये ॥ १ ॥

(अत्र विशेषमाह) लग्नात्पापावृज्वऽनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तदा । कर्तरीनाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥ कर्तरीदोषदुष्टं यत्तल्लग्नं परिवर्जयेत् । अपि सौम्यग्रहैर्युक्तं गुणैः सर्वैः समन्वितम् ॥ आदौ सम्पूर्णफलदं मध्ये मध्यफलं भवेत् । अन्ते स्वल्पफलं ज्ञेयं लग्नं सर्वत्र कर्मणि ॥ दोषाणां शतमपि हन्ति सोमपुत्रः केन्द्रस्थो द्युनमपहाय दृश्यमूर्तिः दैत्येज्यो द्विगु-

णामिदं पुनर्बलीयानाऽचार्यः शमयति लग्नमऽप्यऽव-
श्यम् ॥ १ ॥

लग्न से द्वादश में सीदा गतिवाला याने (मार्गी) और द्वितीय
में पीछे चलने वाला याने (वक्री) पापग्रह हो, तो वह दो लग्न-
कों मृत्यु दुर्गति और शोकदेने वाला कर्तरीनामक दोष है ।
यद्यपि शुभग्रह कृत सब गुणवाला भी हो, तो भी कर्त-
री दोषदुष्टलग्न छोडना ॥ लग्न प्रथम १० अंश तक सम्पू-
र्णफल, २० अंश तक मध्यफल और, अन्त २० अंश से ३०
अंश तक स्वल्पफल ही सब कामों पर देता है ॥ उदित बुध
१, ४, १०, में हो, तो सौ, शुक्र हो, तो दो सौ, और
जीव हो, तो लाख दोष अवश्य नष्ट करता है ॥ १ ॥

विवाहे सप्तमं शुद्धं मौंजीबन्धे तु पञ्चमम् । गृह-
प्रवेशे हिबुकं यात्रायां च तथाऽष्टमम् ॥ आदिगर्भ-

सुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौ करग्रहः । नोदितोऽथ त्रिबुधैः प्रशस्यते चेद्द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः ॥ (आरभ्य जन्मदिवसं यावत्त्रिंशद्दिनं भवेत् । जन्ममासः स विज्ञेयः सर्वकर्मसु निन्दितः)। जातेर्दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथाऽत्रिः । तज्जन्मपक्षं किल भागुरिस्तु व्रते विवाहे गमने क्षुरे च । ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं संप्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं स्यान्नैव युक्तं कदापि । केचित्सूर्यं वह्निगं प्रोज्झयमाऽहुर्नैवान्यथा ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥ वरस्य भास्करबलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम् । द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहे नान्यथा विधिः ॥ २ ॥

विवाह पर ७ मा, मेखला ५ मा, गृहप्रवेश ४ मा, और यात्रा पर ८ मा, गृह शुद्ध (ग्रहरहित) होना चाहिये ॥

आदिगर्भपुत्र या कन्या को जन्ममास जन्मनक्षत्र और जन्मतिथि पर विवाह करना नहीं कहते हैं। द्वितीयगर्भ से उत्तम कहते हैं ॥ जन्मदिन से तीस ३० दिन गिनती से जन्ममास सब कामों पर अनिष्ट है ॥ जन्ममास पर वसिष्ठ जन्मदिन ही, गर्ग पांछ दिन, अत्रि ३ दिन, भागुरि पन्द्राह दिन, मेखला, विवाह, यात्रा, और चूडाकरने पर वर्जनीय कहता है ॥ ज्येष्ठमास १ आद्यगर्भपुत्र २ प्रथमगर्भकन्या ३ में से दो ज्येष्ठ मध्यम कहते हैं। परन्तु तीनों ज्येष्ठ होने पर यथोक्तकार्य कभी योग्य नही है। कई आचार्य कृत्तिका पर ठहरा हुवा सूर्ज है (याने) वृष संक्रान्ति के दस तारीख तक ही ज्येष्ठमास त्याज्य कहते हैं। शेष २० वीस दिन अच्छे कहते ॥ वर को गोचरसे सूरज कन्या को वृहस्पति, और दोनों को चान्द की शुद्धि विवाह पर वक्ष्यमान रीति से देखना चाहिये ॥ इति विवाहविधिः ।

(वास्तुप्रतिष्ठा) कर्किनक्रहरिकुम्भगतेऽर्के पूर्वपश्चिममुखानि गृहाणि । तौलिमेषवृषवृश्चिकयाते दक्षिणोत्तरमुखानि विदध्यात् ॥ कुजस्य वारे वेलायां वर्षे मासे दिने तथा । वेश्मकार्यं न कुर्वीत वह्निदाहभयाद्बुधः ॥ (भं विद्धं चाऽशुभाक्रान्तं विष्टिमेकार्गलं त्यजेत्)। भौमाऽर्करिक्ताऽमाऽद्यूने चरोनेऽङ्के त्रिपञ्चके । व्यष्टाऽन्त्यस्थैः शुभैर्गेहारम्भस्त्र्यायाऽरिगैः खलैः ॥ पापैस्त्रिषष्ठाऽयगतैस्त्रिकोणकेन्द्राऽऽश्रितैः साधुभिरालयस्य । वदन्ति निर्माणमिहाऽष्टमस्थः क्रूरस्तु कर्तुर्मरणं करोति ॥ मृदुध्रुवस्वातिवस्वऽर्कतिष्यैः सवारुणैर्वास्तुक्रियाऽतिशस्ता ॥ १ ॥ क, सिं, मं, कुं संक्रान्ति में पूर्वपश्चिममुखवाला और मे, वृ, तु, वृं, संक्रान्ति में दक्षिणोत्तरमुखवाला घर

बनाना अच्छा है ॥ भौम के वार कालवेला वर्ष मास और दिन में घर न बनाना, क्योंकि उस को आग का डर है ॥ वेध, पापयुति, एकार्गल, विष्टि। और भौ, सू, यह वार। तथा १, ४, ६, १४, ३० यह तिथि, मे, क, तुं, मं यह चरलग्न, (इहकेल) बढाने पर धनिष्टपञ्चक। और ८, १२, घर में चं, बु, जी, शु यह शुभग्रह अशुभ है। और अष्टमगृह में क्रूरगृह गृहकर्ता को घातक है॥ मृ, रो, पु, ति, उ३, ह, चि, स्वा, ऽनू, धं, रे यह नक्षत्र। और चं, बु, जी, शु, श यह वार पर घर की काम अच्छा है ॥ यहां कई वत्सचक्र भी विचारती है ॥ जैसा कि—

कृतिकाद्याः सप्त पूर्वे मघाद्याः सप्त दक्षिणे। मैत्राद्याः सप्त पश्चात्तु धनिष्ठाद्यास्तथोत्तरे॥ धनलाभः प्रवासः स्यादायुश्चौरभयं क्रमात्। दक्षाऽग्रवामपृष्ठस्थे गृहकर्तुर्निशाकरे ॥ (वत्सचक्र इह है)

पू	कृ रो मृ आ पुं ति ऽश्ले	प्रवासः	अग्रे
द	म पूफा उफा ह चि स्वा वि	धनलाभ	दक्षे
प	ऽनू ज्ये मू पूषां उषां ऽभि श्र	चौरभीः	पृष्ठे
उ	धं श पूफां उभां रे ऽश्वि भ	आयुः	वामे

कृतिका से साथ पूर्व में, मघा से सात दक्षिण में, अनूराधा से सात पश्चिम में, और धनिष्ठा से साथ उत्तर में हैं। घरकारक को यह नक्षत्र दाहें तरफ धनलाभ, आगे तरफ सफर, वाहें तरफ आयु, और पीछले तरफ चौर भय करते हैं ॥

(इहकेलिः) विपञ्चके वास्तुकाले चेहकेलिप्ररोहणम् ॥

धनिष्ठार्ध से रे, तक (कुंचं, मीचं) पञ्चक छोड के वास्तुमुहूर्तों पर इहकेलि चडाना अच्छा है ॥ १ ॥

(अथ प्रवेशः) वैशाखाद्यास्त्रयो मासा आश्वियुङ् मा-

र्गशीर्षकौ । फाल्गुनश्चेति षण्मासाः प्रवेशे स्युः शुभावहाः ॥ चित्राऽनुराधामृगपौष्णपुष्यस्वातिश्रविष्ठाध्रुववारुणेषु । वारेष्वऽसूर्यक्षितिजेष्वऽरिक्तातिथौ प्रशस्तो भवनप्रवेशः ॥ वेधमेकार्गलं क्रूराश्रितं भंच विधुत्रयम् । चरभांशोदयं त्याज्यं प्रवेशे नववेश्मनः ॥ त्रिकोणकेन्द्रगैः शुभैरऽकेंऽष्टमाऽन्त्यगैः । असद्ग्रहैः स्थिरोदये गृहं विशेद्बले विधोः ॥ १ ॥ भान्यऽष्टं सूर्यभात्षष्ठाद्द्वाविंशाच्चैव भानि षट् । कुम्भचक्रे वरिष्टानि गेहं प्रविशतां नृणामित्यऽप्येके प्रमाणयन्ति । २

कलशचक्रे सूर्यर्क्षाच्चन्द्रर्क्षं यावत्

५	१३	२१	२७	नक्षत्र
ऽशुभ	शुभं	ऽशुभं	शुभ	फल

वैशाख, जेठ, आषाढ, असोन, मगर, और फगन यह छः मास। रो, मृ, ति, उ३, चि, स्वा, ऽनू धं श, रे यह नक्षत्र। चं, बु, जी, शु, श, यह वार। १, ४, ५, ७. ६, १० घर में शुभग्रह। वृ, सिं, वृं, कुं, यह स्थिरलग्न, और गोचर से अच्छे स्थानों पर चन्द्रमा हो, यह ग्रह प्रवेश पर अच्छे हैं। ४, ६, १४, यह रिक्तातिथि। वेध, पापयुति, एकार्गल (अंचं) मे क, तुं, मं, यह चरलग्न व उनके नवांश। और १, ४, ७, ८, १०, १२, घर में पापग्रह, यह सब प्रवेश पर छोड देना चाहिये॥ कुम्भचक्र भी कई विचारते हैं। सूर्याक्रान्त नक्षत्र से ६ से आठ, २२ बाईस से ६ कुम्भ-चक्र में अच्छे हैं। बाकय अशुभ है॥

(अथ दहनवास्तुप्रतिष्ठा।) हस्तेन्द्रमैत्रश्रवणाऽनिलवैश्वदेवातिष्याः पुनर्वसुमृगाऽश्विनवासवर्क्षम्। भाग्यं द्विदैव-गुरुशुक्रबुधेन्दुवाराः कुर्वन्तु ते दहनवास्तुशिखिप्रतिष्ठा १

ऽश्वि, मृ, पुं, ति, पूफां, ह, स्वा, वि, ऽनू, ज्ये, उषां, श्र, धं, यह नक्षत्र (चं बु जी शु) यह वार पर चूल्हा बनाना या तपाना अच्छा है ॥ १ ॥

(अथ यात्रा) न षष्ठी नच द्वादशी नाऽष्टमी नो सिताद्या तिथिः । पूर्णिमाऽमा न रिक्ता ॥ हयाऽदित्यमित्रेन्दुजीवाऽन्त्यहस्तश्रवोवासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ॥ तिस्रुत्तरा वारुणनैर्ऋतेन्द्रपूर्वात्रयं ब्रह्मभकं दशैव । मध्यानि नेष्टान्यऽनलाऽनिलेशद्विदेवचित्राऽहिमघाऽन्तकानि ॥ केन्द्रे कोणे सौम्यखेटाः शुभाः स्युर्याने पापास्त्र्याऽयषट्खेषु चन्द्रः । नेष्टो लग्नाऽन्त्याऽरिरन्ध्रे शनिः खेऽस्ते शुक्रोऽस्ताऽन्त्याऽरिरन्ध्रे भपश्च ॥ १ ॥

ऽश्वि मृ पुं ति ह ऽनू श्र धं रे यह नक्षत्र यात्रा पर श्रेष्ठ हैं । और रो, पू३, उ३, मू, ज्ये, श, यह नक्षत्र

मध्य है । १, ४, ५, ७ ९, १० इन घर में चं, बु, जी शु, तथा ३, ६, १०, ११, इन घर में सू, भौ, श, रा, के यह ग्रह अच्छे हैं । तथा भ, कृ, ऽर्द्रा, ऽश्ले, म, चि, स्वा, वि, यह नक्षत्र । और शुक्लप्रतिपत् १, ४, ६, ८, ९, १२, १४, १५, ३० यह तिथि । पुनः १, ६, ८, १२, घर में चन्द्रमा । ७, १०, घर में शनि, । ६, ७, १२, घर में शुक्र व लग्नेश अशुभ है ॥ १ ॥

(दिक्शूल) पूभागुर्वोस्त्यजेद्याम्यां प्राचीं ज्येष्ठेन्दु-पङ्गुषु । रोहिण्यऽर्कभृगुष्वाऽप्यामुफाज्ञाऽरेषु चोत्तराम् ॥ आग्नेय्यां च गुरौ चन्द्रे नैर्ऋत्यां गुरुशुक्रयोः । ईशा-न्यां चन्द्रजे वायौ मङ्गले गमनं त्यजेत् ॥

नव[९]भू[१]म्यः शिव[११]वह्न्यो[३]ऽष्टौ[८]विश्वे[१३]ऽर्क[१२]कृताः[४] शक्र[१४]रसा[६]स्तुरङ्ग[७]-तिथ्य[१५] । [२]द्विदिशो[१०]ऽमा[३०]वसवश्च पूर्वतः स्युस्तिथयः सं-

पूर्वे	आग्ने	दक्षि	नैर्ऋ	पश्चि	वाय	उत्तरे	ईशा	दिशः
ज्ये चं,श	चं,जी	पूभां जी	जी शु	रो सू शु	भौ	उफां भौ बु	बु	तर्फों के निषिद्ध वार व नक्षत्र
१,९	३ ११	५ १३	४ १२	६ १४	७, पूं	२ १०	८ अं	योगिनी
श	०		चं	भौ	बु	जी	शु	शुक्ले कालः
	शु	जी	बु	भौ	च	सू	०	कृष्णे कालः
मे सिं धं		वृ कं मं		मि तुं कुं		क वृं मी		राशि संमुखे दक्षिणे शुभः

काल व योगिनी आगे और बाँए तर्फ अशुभ हैं

सुखवामगा न शस्ताः ॥ दद्याद्दिनग्रहं पूर्वे क्षीणे याम्ये सितोत्तरे । यस्यां दिशिवसेत्पङ्गुस्तत्र कालं विनिर्दिशेत् ॥ (शुक्ले) आदित्य दक्षिणे काल-श्चन्द्रे नैर्ऋतिकोणतः । भौमे तु पश्चिमे कालो बुधे वायव्यकोणगः ॥ गुरुणा चोत्तरे कालः शुक्रे चै-शानकोणगः । शनौ प्राच्यां सिते पक्षे विपरीतस्त-

थोत्तरे ॥ दक्षिणे पृष्टतो राज्यं मुखे वामेऽन्तकप्रदः ॥ चन्द्रश्चरति पूर्वादि क्रमेण दिक्चतुष्टयम् । मेषादिकेषु यात्रायां संमुखे दक्षिणे शुभः ॥

(घातचन्द्रः) भू[1]पञ्चा[5]ऽङ्क[9]द्व्य[2]ऽङ्ग[6]दिग्[10]वह्नि[3]सप्त[7]वेदा[4]ऽष्ट[8]शा[11]ऽर्का[12]श्च घातख्यचन्द्रः । मेषादीनां राजसेवा विवादे वर्ज्या युद्धाद्ये नाऽन्यत्रवर्ज्याः ॥

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृं	धं	मं	कुं	मी	राशीनां
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	
मे	कं	कुं	सिं	मं	मि	धं	वृ	मी	सिं	धं	कुं	घातचन्द्रः

हित्वा चौरं तथा यात्रां जन्मतारा शुभात्रहेत्युक्तेः ।

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्य	साध	नैधन	मैत्र	परममै	ताराः
जन्मभं	२	३	४	५	६	७	८	९	नक्षत्राणि
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	
१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	
शु	जी	बु	भौ	श	रा	के	चं	सू	स्वामी
पीडा	ऽध्वा	ऽन्न	ऽग्नि	भी	वस्त्र	विद्या	स्त्री	तल्प	दाः
शाक	ऽन्न	गुड	कर्पूर	लवण	माष	स्वर्ण	आ	तुण्डु	दानैः

(अथ तारा) जन्माख्यसंम्पद्विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः वधमैत्राऽतिमैत्राः स्युस्तारास्त्रिजन्मभात्स्मृताः ॥ शुक्रेज्यसौम्याऽरशनिराहुकेत्विन्दिनेश्वराः । पीडाऽध्वाऽन्नाऽग्निर्भीर्वस्त्रविद्यास्त्रीतल्पदाः क्रमात् ॥ शाकाऽन्नगु-

[३]ड[४]र्कपूरलव[५]णमा[६]षस्वर्णतः । आज्यतुण्डु[१]लदानैश्च सर्वाः सौख्याऽऽस्पदा मदाः ॥ १ ॥

(अथ वस्त्रसुवर्णादि) पौष्णध्रुवाऽश्विकरपञ्चकवासवेज्याऽदित्ये प्रवालरदशङ्खसुवर्णवस्त्रम् । धार्यं विरिक्तशनिचन्द्रकुजेऽह्नि रक्तं भौमे ध्रुवाऽदितियुगे सुभगा न दद्यात् । विप्राज्ञयोत्सवादौ च राज्ञा प्रीत्याऽर्पितं च यत् । निन्द्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ वस्त्रं धार्यं जगुर्बुधाः ।१।

अश्वि, रो, पुं, ति, उ३, ह, चि, स्वा, वि, अं, धं, रे यह नक्षत्र । सू, बु, जी, शु इन वारों पर ४, ६, १४ यह दिन छोड कर, वस्त्र सोना आदि धारना अच्छा है ॥ परन्तु लालवर्णवस्तु हो, तो भौमवार भी अच्छी है । भर्तावाली औरत को रो, पुं, ति, उ३ पर कुछ न धारन करना ॥ ब्राह्मण की आज्ञा से विवाह आदि उत्सव

पर, और राजा ने प्रेम से दिये हुये वस्तुओं का धारना निन्द्यमुहूर्त पर भी अच्छा है ॥ १ ॥

(अथ नष्टलाभादिज्ञानं) अन्धके मन्दनेत्रे च मध्याक्षे साधुलोचने । रोहिण्यादिचतुष्केऽत्र नष्टलाभोऽथ यत्नतः । प्राप्तिर्दूरेश्रुतिर्लाभाऽभावो भेषु क्रमो ह्ययम् ॥ १ ॥

रो ति उफां वि पूषा धं रे				ऽन्धके नष्टलाभः	भ कृ रो ऽश्ले
मृ ऽश्ले ह ऽनू उषा श ऽश्व				मन्दाक्षे यत्नेनाप्तिः	म पू३ उ३ वि ज्ये म इनपर
आ म चि ज्ये ऽभि पूभां भ				मध्याक्षे दूरेश्रुतिः	विष्टि व्यती· पात पर भी
पुं पूफां स्वा मू श्र उभां कृ				साध्वक्षे लाभाऽभावः	अमानत रखा
सू,चं	भौ बु	जी,शु	श	वारः	था दियाहुवा या उद्धारदेया
निकटे प्राप्ति	दूरे प्राप्ति	ऽलाभः	गृहेप्राप्तिः	फल	नष्टहुवा वस्तु वापस न आवे

तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रेय द्द्रव्यं दत्तं निवेशितम् । प्रयुक्तं च विनष्टं च विष्ट्यां पाते च नाऽप्यते ॥ २ ॥ निकटे सोम-सूर्याभ्यां दूरस्थं बुधभौमयोः । न लभेद्गुरुशुक्राभ्यां गृहे प्राप्तिः शनैश्चरे ॥ ३ ॥

(ऋणं) सङ्क्रान्तौ वृद्धियोगेऽर्के हस्ते नाऽरे चरेदृण-म् । न देयं ज्ञेऽथ तच्छेदः कुजे सौम्ये च सञ्चयः ॥१॥

संक्रान्ति वृद्धियोग आतवार व भौमवार और हस्त-नक्षत्र पर ऋण न करना । बुधवार पर ऋणच्छेद न करना ॥ और बुधवार भौमवार पर धन का सञ्चय करना अच्छा नही ॥ १ ॥

(अग्निवास व कोष्ट) सैका तिथिर्वारयुता कृताऽप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः । सौख्याय होमः शशियुग्मशेषे

प्राणाऽर्थनाशौ दिवि भूतले च ॥ १ ॥ सूर्यभात्त्रि-

पाताले	भूमौ	दिवि	वह्निवासः
२	० । ३	१	शेष होने पर
ऽर्थ नाशकरे	सौख्य देवे	प्राणनाश	होमे फल

त्रिभे चन्द्रे सूर्यविच्छुक्रपङ्गवः । चन्द्राऽरेज्यागुशिखि-नो नेष्टा होमाऽहुतिः खले ॥ २ ॥

तिथि और वार को एकयुक्त करके चार से भागदेने पर शेष दो २ रहे, तो पाताल में अग्निवास होमक को धन नष्ट करे । शून्य या तीन ३ रहे, तो धरती पर वास सुखदेवे । और एक रहे, तो स्वर्ग पर वास प्राण लेवे । "जैसा वैशुदि दशम्यां वुधे वह्निवास देखना कृष्णप्रतिपदा से दशमी २५ सूर्यवार से वुध ४ और एक जमा ३० चार से भाग देकर शेष २ रहा, 'याने'

पाताल में वह्निवास धन को नाश करे ॥ १ ॥ सूर्ययुक्त नक्षत्र से तीन ३ गिनती से "सू, बु, शु, श, चं, भौ, जी, रा, के" होते हैं पापग्रहों पर होम न करना॥ जैसा माघशुदि तृतीयस्यां बुधे पूभां नक्षत्र, सूर्ययुक्त वर्तमान श्रवणधनिष्ठ नक्षत्र से तीसरा सूर्य पापग्रह है इसलिये होम अच्छा नहीं ॥ २ ॥

(अथाऽग्न्याधानं) अग्नेः प्रतिग्रहं कुर्याद्विशाखाकृत्तिकामृगे । रेवतीरोहिणीपुष्यज्येष्ठायामुत्तरात्रये ॥ त्रिकोणकेन्द्रोपचयेषु सूर्ये बृहस्पतौ शीतकरे कुजे च । शेषग्रहेषूपचयस्थितेषु धूमध्वजोत्पादनमाऽमनन्ति ॥ १ ॥

कृ, रो, मृ, ति, उ ३, वि, ज्ये, रे, यह नक्षत्र। १, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११, यह घर में सू, चं, भौ, जी, और ३, ६, १०, ११ यह घर में बु, शु, श, रा, के, हुने

पर अग्निग्रहण करना अच्छा है ॥ १ ॥

(सब कामोंपर) जीवसौम्येन्दुशुक्राणां वाराः सर्वार्थसाधकाः । अश्विनीपुष्यहस्तेन्दुमैत्राऽदित्यश्रवोऽभिधाः ॥ धनिष्ठारेवती चैव शस्ताः सर्वत्र कर्मणि । व्ययनैधनसंशुद्धौ सदृष्टोपचयोदये । सर्वारम्भेषु संसिद्धिश्चन्द्रे चोपचयस्थिते ॥ १ ॥

चं, बु, जी, शु, यह बार । ऽश्वि, मृ, पुं, ति, ह, ऽनू, श्र, धं, रे, । यह नक्षत्र । ८, १२, घर शुद्ध होने पर । १, ३, ६, १०, ११, घर पर शुभदृष्टि और ३, ६, १०, ११, चन्द्र होने पर सर्वारम्भ अच्छा है ॥ १ ॥

(पञ्चक में वर्ज्यकार्य) वासवोत्तरदलादिपञ्चके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम् । प्रेतदाहतृणकाष्ठसञ्चयं शय्य-

काविंतरणं विवर्जयेत् ॥

धनिष्ठोत्तरार्ध से रेवती तक (कुंचं, मीचं) इस पञ्चक पर दक्षिणदिशा की यात्रा। घर की इहकेलि चढाना। शवका जलाना। घास या काष्ठ की सञ्चय करना। और नया पलंग बिछाना भी अनिष्ट हैं ॥ १ ॥

(त्रिपुष्करयोग) भद्रातिथी रविजभूतनयाऽर्कवारे द्वीशाऽर्यमाऽजचरणाऽदितिवह्निविश्वे। त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे ॥१॥

२, ७, १२, यह भद्रा तिथि। सू, भौं, श, यह वार। और कृ, पुं, उफां, वि, उषां, पूभां, इन नक्षत्रों पर हों, तो त्रिपुष्करनाम योग "मरणे, खोने, और किसी वस्तु के वृद्धि होने पर" त्रिगुणफल देता हैं। यांन उस पर कोई मरे, तो उसघर के तीन मरेंगे। या कोई लाभ

हो, तो तीन दफा लाभ होवे ॥ तथा उस तिथि व वार पर मृ, चि, धं, हो, तो द्विपुष्करनाम योग दोना फल देता हैं याने कोई वस्तु नष्ट हो दो दफा होवे, या लाभ हो तो दो दफा होवे ॥९॥

(प्रेतदीपदान) कार्तिक्यां माघमासे वा फाल्गुने मास एवहि । दीपदानं हितं कृष्णाषष्ठ्यां फाल्गुनमाघयोः ॥ जीवाऽर्कजे नैव कुजाऽर्कवारे रिक्ते तिथौ चन्द्रबले विहीने । ऋक्षाणि वर्ज्यानि त्रिपुष्कराणि शेषेषु दीपान्परिकल्पयन्ति ॥ १ ॥

कार्तिकअमावसी [दीपमाला] या पूं, और माघ व फगन की कृष्णाषष्ठी पर और माघ व फगन में सू. भौं, जी, श, यह वार । ४, ९, १४, रिक्ता और अंचं यह तिथि । कृ, पुं, उफां, वि, उषां, पूभां, यह नक्षत्र छोड के शेष पर प्रेतदीपश्राद्ध करना अच्छा हैं ॥ १ ॥

(क्षुत्फल) औषधे वाहनारोहे विवादे शयनेऽशने।
विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तसु शोभनम् ॥ १ ॥

दवाई करना, सवारीपर चढना, आपस में संवाद करना, सोना, खाना, विद्यारम्भकरना, और बीज बोना इन सात कामों पर छीकना अच्छा है ॥ १ ॥

(गोप्रसूति) हेमन्ते शनिवासरेऽथ शिशिरे चन्द्रे वसन्ते गुरौ ग्रीष्मेऽर्केऽथ कुजे शरद्यऽथबुधे प्रावृष्यऽलं सर्वदा। शुक्रे गौर्यदि सूयते गृहपतिर्यात्यऽन्तकस्या-ऽलयं वर्षान्तं बहुभृत्यबन्धुतनयकृत्यऽर्थधर्मक्षतिः ॥१॥

हेमन्त में शनि, शिशिर में चन्द्र, वसन्त, में गुरु,

हेम	शिशि	वस०	ग्रीष्म	वर्षा	शरत्	सब ऋतु	इन ऋतुवों में अनिष्ट
श	चं	जी	सू	भौ	बु	वों में शु	वार

ग्रीष्म में सूर्य, वर्षा में भौ, शरद में बुध, और सब ऋतुओं में शुक्र के वारपर जब गाई ब्र्यायेगी, तब घर का स्वामी सब परिवार के साथ एक वर्षतक नष्ट हो जायेगा ॥ १ ॥

(गण्डान्त) रेवत्यन्ते चतुर्भागे ह्यऽश्विन्याः प्रथमांशके । अश्लेषान्ते मघापूर्वे ज्येष्ठान्ते मूलमाऽदितः॥ १ ॥

रे, ऽश्ले, ज्ये, इन नक्षत्रों का पीछला भाग १५ पंद्राह घटी, और ऽश्वि, म, मू, इन नक्षत्रों का पहला भाग १५ पन्द्राह घटी गण्डान्त का मान यद्यपि लोक में ३० तीस घटी विदित है । तथापि [पौष्णाऽश्विन्योः सार्पपित्र्यर्क्षयोश्च यश्च ज्येष्ठामूलयोरऽन्तरालम् । तद्गण्डान्तं स्याच्चतुर्नालिकं हि यात्राजन्मोद्वाहकालेष्वऽनिष्टम्] ॥ २ ॥

रे, ऽश्वि, ऽश्ले म । और ज्ये, मूल के वीच में जो चार घटी गण्डान्तका प्रमाण है उतनाही समय यात्र जन्म

और विवाह पर अनिष्ट दायक है सब ३० घटीरूप नहीं है, यह इस प्रमाण से प्रकट होता है ॥ ३ ॥

(गण्डान्तजातका फल) जातो न जीवति नरो मातुरऽनिष्टो भवेत्स्वकुलहन्ता । यदि जीवति गण्डान्ते बहुरथतुरगाधिपो भूपः ॥ ३ ॥

गण्डान्त पर जन्मवाला बालक प्रथम जीन्दाही न रहेगा । जब जीन्दा रहे, तब माई और अपने कुल को नष्ट करेगा । परन्तु स्वयं बहुत भाग्यवान् राजा होवेगा ॥ ३॥

(अभुक्तमूलजातफल) अभुक्तमूलं घटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठाऽन्त्यमूलादिभयं हि नारदः । जातं शिशुं तत्र परित्यजेद्वा मुखं पिताऽस्याऽष्टसमं न पश्येत् ॥ ४ ॥

वह ज्येष्ठ और मूल के बीच में ४ चारघटी रूप अभुक्तमूल नामक गण्डान्त पर पैदा हुवा बालक छोडना।

या पिता आठ वर्षतक उस का मुंह न देखे, यह नारद कहते हैं ॥ ४ ॥

(अष्टवर्षमध्ये तन्मुखदर्शने फलम्) आद्ये पिता नाशमुपैति मूलपादे द्वितीये जननी तृतीये । धनं चतुर्थेऽस्य शुभोऽथ शान्त्या सर्वत्र सत्स्यादहिभे विलोमम् ॥ ५ ॥ दिवाजातस्तु पितरं रात्रौ च जननी तथा । आत्मानं सन्ध्ययोर्हन्ति गण्डयोगोद्भवः शिशुः ॥ ६ ॥ मूलादिपादो दिवसे यदिस्यात्तज्ज्ञः पितुर्नाशनकारणं स्यात् । मूलादिपादो यदि रात्रिभागे तदात्मनो नास्ति पितुर्विनाशः ॥ द्वितीयपादो दिनगो यदिस्यान्न मातुरऽल्पोऽपि च तत्र दोषः ॥ ७ ॥

मूल के प्रथम १ पाद पर पिता, दूसरे २ पर माई,

तीसरे ३ पर धन नष्ट होवे और चौथमे ४ पर शुभ है। अश्लेष का फल उस से उलटा। याने पहले १ पर शुभ, दूसरे २ पर धन, तीसरे ३ पर माई, और चौथमे ४ पर पिता का नाश होवेगा ॥ और शान्ति करने से सब दुष्टयोगों का फल नष्ट होता है ॥ ५ ॥ गण्ड पर यह विशेष भी है कि दिन में पैदाहुवा पिता को, रात में माई को, सन्ध्या में अपने आप को गण्डोत्पन्नलड़का नष्ट करता है ॥ ६ ॥ किञ्च मूल के पहले १ पाद पर दिन में पैदाहुवा हो, तो पिता को अनिष्ट है, रात्र में नही। तथा दूसरे २ पर रात में पैदाहुवा हो, तो माई को अनिष्ट है, दिन में थुडा भी दोष नही ॥ ७ ॥ इति गण्डान्तनिर्णयः ॥

(वारवेला) पादोनरेखापरपूर्वयोजनैः पलैर्युतोनास्तिथयो दिनार्धतः। ऊनाधिकास्तद्विचरोद्भवैः पलैरूर्ध्वं तथाऽधो दिनपप्रवेशनम् ॥ १ ॥ वारप्रवृत्ते घ-

बालकों को मूलवृक्ष का फल			कन्याओं का मूलपुरुष का फल		
घटी	स्थान	फल	घटी	स्थान	फल
७	मूलं	मूलघ्न	४	सिर	पशुघ्न
८	स्तम्भ	वंशघ्न	६	मुंह	धनघ्न
१०	त्वचा	मातृघ्न	५	गले	धनंद
११	शाखा	मातुलघ्न	५	हृदयं	कौटिल्यं
१२	पत्रं	राज्यदं	१४	बाजों	लाभद
५	पुष्पं	मित्रदं	४	हाथ	बलद
४	फलं	श्रीदं	४	गुह्य	कामिनी
३	शिखा	अन्यजीवि	४	टांगे	मातुलघ्न
			४	गुठने	भ्रातृघ्न
			१०	पैर	वैधव्य

मूलका मासों में	संक्रान्तियों में	निवास	का फल
चैत्र,श्रा०,का०,पौष	मे, क, ध, मं,	धरती	शून्य
बै०ज्येठ.मगर,फगन	मि, कं, तुं, मी,	पाताल	धनाप्ति
आ०भाद्रों,अ०,माघ	वृ, सिं, वृं, कुं,	स्वर्ग	राज्याऽप्ति

टिका द्विनिघ्ना कालाख्यहोरापतयः शराप्ताः । दिनाधिपाद्या रविशुक्रसौम्यशशाङ्कसौरेज्यकुजाः क्रमेण । २ ।

पलात्मक देशान्तरयोजनों से पन्द्राह घटी पश्चिम में युत और पूर्व में हीन करना । फिर दिनार्ध से कम होने पर सूर्योदयसे पीछे वारवेला होवे याने इष्टकाल को अधिक करना, और दिनार्ध से अधिक होने पर सूर्योदय से पहले वारवेला होवे, याने इष्टकाल से काटना ॥ जैसा यहां काश्मीर में मध्यरेखासे पश्चिम होने से धनात्मक ३५ पञ्चतीस योजन हैं । पन्द्राह घटियां

दिनवार के उदय से दूसरे उदय तक वारवेला का चक्र

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	२ । ३०	२२ । ३०	४२ । ३०
शु	श	सू	चं	भौ	बु	जी	५ । ०	२५ । ०	४५ । ०
बु	जी	शु	श	सू	चं	भौ	७ । ३०	२७, ३०	४७ । ३०
चं	भौ	बु	जी	शु	श	सू	१० । ०	३० । ०	५० । ०
श	सू	चं	भौ	बु	जी	शु	१२, ३०	३२, ३०	५२ । ३०
जी	शु	श	सू	चं	भौ	बु	१५ । ०	३५ । ०	५५ । ०
भौ	बु	जी	शु	श	सू	चं	१७, ३०	३७, ३०	५७ । ३०
सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	२० । ०	४० । ०	६० । ०

को युक्त करके हुई १५ । ३५ कल्पित दिनार्ध १७ । ३७ से हीन होने से सूर्योदय के पीछे वारप्रवृत्ति होवे । इस लिये उन का अन्तर २ । २ कल्पित इष्ट को १५ । १५ मिलाकर १७ । १७ वारवेला लाना ॥ १ ॥ वारवेला के वास्ते इष्टकाल को दोना करना और पांच से भाग देकर दिनपति से वारवेला क्रम से सू, शु, बु चं, श, जी, और भौ की होवे ॥ जैसा । इष्टकाल १७ । १७ दोना ३४ । ३४ पांच से भाग देकर लब्ध ६ । शेष ४ । ३४ दिनेश शनिवार से ६ व्यतीत बुध, वर्तमान चन्द्रमा की वारप्रवृत्ति है ॥२॥

(मुहूर्तगणना) दिनस्य यः पञ्चदशो विभागो रात्रेस्तथा तद्धि मुहूर्तमानम् ॥ १ ॥ यस्य ग्रहस्य वारेऽपि यच्च कर्म प्रकीर्तितम् । तत्तस्य कालहोरायां सर्वमेव विधीयते ॥ नक्षत्रोक्तं च वेलायां तन्नक्षत्रस्य चाच-

रेत् ॥ २ ॥ अष्टमो ह्यऽभिजिदाह्वयःक्षणो दक्षिणाभिमुखयानमऽन्तरा । कीर्तितोऽपरककुप्सु सूरिभिर्यायिनामऽभिमतार्थसिद्धिदः ॥ ३ ॥

दिनमान और रात्रिमान को भी १५ पंद्राह से भाग देकर लब्ध नक्षत्रमान निकलेगा ॥१॥ जिस ग्रह के वार पर जो कर्म कहा है । वह सब कर्म उस ग्रह की कालवेला पर भी करना । तथा नक्षत्रोक्त भी सब कर्म उस नक्षत्र की वेला पर करना चाहिये ॥ २ ॥ मुहूर्तों में जो अभिजित् नामक मुहूर्त है उस पर दक्षिण के यात्रा के विना और दिशायों की यात्रा अभीष्ट सिद्धि देती है ॥ ३ ॥

(मध्याह्न रोहिणी और कुतप की विधिः)

अह्नः पञ्चविभक्तस्य तृतीयः कुतपः स्मृतः । चतुर्थं रोहिणं नाम रौहिणं नतु लङ्घयेत् ॥ १ ॥

पूर्वदिनमान और वर्तमानदिनमान को पांछ से भाग देकर

अहोरात में नक्षत्रवेला

दिन	द्रीं	श्ले	नू	मं	धं	पू-षां	उ-षां	भि	रो	ज्ये	वि	मू	श	उ-फां	पू-फां
	२	४	७	९	११	१४	१६	१९	२१	२३	२६	२८	०३	३२	२५
	२२	४५	७	३०	५२	१५	३७	०	२२	४५	७	३०	५२	१५	३७
रात्रौ	द्रीं	पू-भां	उ-भां	पू-षां	श्वि	भ	कृ	भि	मृ	पुं	ति	श्र	ह	चि	स्वा
	१	२	४	६	८	९	११	१३	१४	१६	१७	१९	२१	२२	२४
	३७	१५	५२	३०	७	४५	२२	०	३७	१५	५२	३०	७	४५	२३

लब्ध त्रिगुणा और द्विगुणा से अपना अपना तिथ्यन्त काट के शेष जिस दिन का अधिक हो उसी दिन में मध्याह्न है, समता पर पूर्वदिन में ही ॥ वैसा ही लब्ध चौगुणा त्रिगुणा से अपना २ तिथ्यन्त काट के शेष जिस दिन का अधिक हो, उसी दिन में रोहिणी है, समता पर पूर्वदिन

में ही ॥ तथा पूर्वतिथ्यन्त और वर्तमानतिथ्यन्त का योग वर्तमान दिनमान से कम या सम हो, तो पूर्वदिन में कुतप हैं, अधिक हो तो अपने दिन में ॥ जैसा संवत् ५०११ कावदि द्वादशी दिन पर द्वादि ८। २८ दिनमान २७। २० से पांछ से लब्ध ५। २८ त्रिगुणा १६। २४ तिथ्यन्त ८। २८ से हीन होवा ८।४॥ तथा त्रोदि १३। २६ दिन २७। १६ पञ्चांश ५। २७ द्विगुणा १०। ५४ तिथ्यन्तहीनित २। ३५ से द्वादशीहीनित मान ८। ४ अधिकहोने से उसी द्वादशीदिन में मध्याह्न है॥ वैसा द्वादशी का पञ्चांश ५। २८ चौगुणा २१। २८ त्रयोदशी का पञ्चांश ५। २७ त्रिगुणा १६। २१ से अपना २ तिथ्यन्त हीन करके द्वा १३। २० त्रो २। ५२ द्वादशी दिन अधिक होने से द्वादशी में रोहिणी है ॥ तथा द्वादि। ८। २८ त्रोदि १२। १६ का योग २०। ५७ त्रयोदशी के दिनमान २७। १६ से हीन होने से द्वादशी में ही कुतप है ॥

श्राद्ध उनही दिनों में अपने २ मतो से करना जिनों में मध्याह्न आदि की व्याप्ति होवे ॥ १ ॥ (काश्मीरिकनक्षत्रपत्री देखने की रीति) काश्मीरिक आचार्योंने दो प्रकार अहोरात का प्रमाण मुकरर किया है ॥ एकतु सूर्योदय से सूर्योदय तक, त्र्यह त्रिस्पृक सूतक मृतक अशौचादि विषय पर। दूसरा व्यतीत रात के आधरात से आईहुई आधरात तक व्रतादि-विषय पर। सूर्योदय से ही व्यवहारिक का प्रचार होने से उसी को तीन खण्ड किई है, और उन के मालूम करावने वाले छः चिह्न भी रखे। जैसा "शे, क्ष" यह दो व्यतीत आधरात से सूर्योदय तक "गि, दि" यह दो सूर्योदय से सूर्यास्त तक और "रा, प्र" यह दो सूर्यास्त से आईहुई आध-रात तक नियमित हैं॥ प्रथम "शे, गि, रा" शिरो होने का दूसरा "क्ष, दि, प्र" समाप्त होने का चिह्न है॥ १ म खण्डों की रीति। जैसा। प्रशे १० गंक्ष १० याने व्यतीत आधरात

के सूर्योदय तक दस घटी रहने पर प्रतिपदा का शिरो और गण्डान्त का समाप्त होता है॥ २ रे खण्डों की रीति। द्विदि १५ विगि १५ अर्थात् सूर्योदय से पंद्राह घटी व्यतीत होने पर द्वितीया का समाप्त और विष्टि का शिरू होता है॥ ३ रे खण्डों की रीति। नप्र ६ संरा ६ याने सूर्यास्त से छः घटी व्यतीत होने पर नवमी का समाप्त और संक्रान्ति का शिरो होता है॥

संक्रान्त्यृक्षं तिथियुतं ग्रहवारसमन्वितम्। द्रव्यवर्णसमायुक्तं त्रिभिर्भागं प्रदापयेत्। एकशेषेऽर्घहानिः स्याद्धिः शेषे मध्यमं फलम्। निःशेषे चार्घहानिः स्यात्प्रतिमासं विचारयेत्॥ पौषमासस्य संक्रान्तीरवेर्वारे भवेद्यदि। धान्यस्य द्विगुणं मूल्यं भौमवारे चतुर्गुणम्। त्रिगुणं शनिवारे च बुधे शुक्रे समं भवेत्॥ सुराचार्ये तथा सौम्ये मूल्यमर्धं सुनिश्चितम्॥ १॥

संक्रान्तिदिननक्षत्र से रोहिणीनक्षत्र तक

१,२,८,९,१५, १६,२२,२३	३,७,१०,१४ १७,२१,२४, २८	४,६,११,१३ १८,२०,२५ २७	५,१२,१९, २६	नक्षत्रों पर संक्रान्ति का वास
समुद्रे महावृष्टिः	तटे सुवृष्टिः	सन्धौ खण्डवृष्टिः	पर्वते बिन्दुवृष्टिः	फल
चतुष्पदे तैतिले नाग पर	बव बालक गर वणिज, विष्टि पर	किंस्तुघ्न, शकुनि पर	इन करणों पर	संक्राति, चन्द्रोदय के दिन नक्षत्रों से भी फल के वास्ते मुहूर्तज्ञान करना
शयिता	आसीना	उत्थिता	स्थितिः	
भ ऽद्रा ऽश्ले स्वा ज्ये श मुहूर्त १५ महार्घः	रो उ३ पुं वि मुहूर्त ४५ मितार्घवर्षौ	ऽश्वि कृ मृ ति मं पू३ ह चि ऽनू मू श्र ध रे मुहूर्त ३० समार्घः		
जघन्यनक्षत्र	बृहन्नक्षत्र	समर्क्ष ऋक्षनाम		

संक्रान्तिकाल का नक्षत्र तिथि वार और स्वेष्ट द्रव्य के अक्षरों के योग को तीन से भाग देकर शेष (१) एक हो, तो वह द्रव्य सस्ता (२) दो हो, तो मूलकी समता, और (०) शून्य हो, तो मांगा होवे। (जैसा) संक्रान्ति नक्षत्र कृ ३ तिथि पञ्चमी ५ वार भौम ३ स्वेष्ट द्रव्य धान्याक्षर २ जमा १३ तीन से शेष एक रहा। फल है कि उस मास में धान्य का मूल्य सस्ता होवे॥ पौषमास के संक्रान्ति रविवार हो, तो धान्य का मूल्य द्विगुणा होवे, भौमवार पर चौगुणा होवे, शनिवार पर त्रिगुणा, बुध और भार्गववार पर सम रहे, तथा गुरुवार पर आधा ही रहेगा॥ १॥ सूर्ययुक्त नक्षत्र से जन्मर्क्ष होने के फल पर-

संक्रान्तिफलम् संक्रान्तिधिष्ण्याऽधरधिष्ण्यतस्त्रिभे शुभं निरुक्तं जनिभे ततोऽङ्गभे। सुखं त्रिभे पीडनमङ्गभे शुभं त्रिभेऽर्थहानी रसभे धनागमः॥ १॥

(गोचरादिफलविपाक) दिनकररुधिरौ प्रवेशकाले गु-

रुभृगुजौ भुवनस्य मध्ययातौ । रविसुतशशिनौ विनिर्गमस्थौ शशितनयः फलदस्तु सर्वकालम् ॥ देवब्राह्मणवन्दनाद्गुरुवचःसम्पादनात्प्रत्यहं साधूनामभिवादनाच्छुचिवचःश्रेयस्कथाकर्णनात् । होमादध्वरदर्शनाच्छुचिमनोभावाज्जपाद्दानतो नो कुर्वन्ति कदाचिदेव पुरुषस्यैवं ग्रहाः पीडनम् ॥ (रोगिविषय ग्रहगोचर फल)

रविरु[३]प[६]चं[१०]ये[११]ष्विन्दुः [१ ३ ६ ७ १० ११]साद्यसंरेषु कुजार्कजौ विद[३]श[६]सु[११] गुरुर्द्यू[७]नस्वा[२]ऽयं[११]त्रिको[५]ण[९]गृहास्थितः । स्म[७]रारिपु[६]वियं[१०]द्धुर्जे[४] शुक्रो बुधो [१२]व्ययवर्जितेष्वऽविषमगृहेष्वाऽयेचोर्कः[११] शुभः खलु गोचरे ॥ गोचरेण नवमो द्वितीयकः पञ्चमोऽपि हितकृन्निशाकरः । वर्धमानतनुरिष्यते बुधैर्देवमन्त्रिसदृशः फलेन तु ॥ असत्फलः सौम्यनिरीक्षितो यः शुभ-

प्रदश्चाप्यऽशुभेक्षितश्च । तौ निष्फलौ द्वावपि खेचरेन्द्रौ यः शत्रुणा स्वेन निरीक्षितश्च ॥ स्वनीचगेऽस्तगेऽपि-वा रिपोर्गृहस्थिते ग्रहे । वृथाफलं प्रकीर्तितं समस्तमेव सूरिभिः ॥ सू ३ । ६ । १० । ११ । चं १ । २ । ३ । ५ ६ । ७ । ९ । १० भौ ३ । ६ । ११ बु २ । ४ । ६ । ८ । १० । ११ जी २ । ५ । ७ । ९ । ११ शु १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । ११ श रा के ३ । ६ । ११ शुक्लपक्ष का चन्द्रमा जीवतुल्य स्थानों से फल देता है ॥

(ताराफल) धवलपक्षादिगते हिमांशौ शुभे शुभं पक्षमुदाहरन्ति सितेतरादावऽशुभे शुभं स्यात्पक्षाव-ऽनिष्टौ भवतोऽन्यथा तौ ॥ १ ॥ जिस को शुक्लपक्ष के शिरू पर चन्द्र गोचर से शुभ हो, उस को तो पक्ष ही शुभ है। कृष्णपक्ष के आदि पर चन्द्र अशुभ हो, तो भी

फल शुभ है । अन्यथा होने पर अशुभ देता है ॥ १ ॥

(देवादि कृत दोषज्ञान और दोषहारक दान कहता है)

सर्वेऽन्त्य[12]स्थाश्चन्द्रसूर्यौ लग्ना[2]ऽष्ट[8]स्थौ शशी रसे[6] । भौमाद्या दिक्[10]स्थिता ज्ञाद्या सप्तस्था दोषकारकाः ॥ रवेः क्षेत्र[1]-खे[2]-शाकिन्यो[3] योगिन्य[4]ऽमर-वै[5]रिपाः[6] । प्रेत[7]-च्छाया[8] दोषदाः स्युर्बलिदानाच्छुभप्रदाः ॥ सूर्ये धेनुश्च ताम्रं च गोधूमं रक्तचन्दनम् । चन्द्रे शङ्खश्चन्दनं च वस्त्रं च श्वेततण्डुलाः ॥ कुजे वृषः प्रदातव्यो रक्तवस्त्रं तिलोदनम् । बुधे कर्पूरकं मुद्गा हरिद्वस्त्रं हरिन्मणिः ॥ पीतवस्त्रद्वयं जीवे हरिद्राचणकानि च । अश्वः शुक्रे सितो देयः शुक्लधान्यानि यानि च ॥ शनौ तैलं तिला देयाः कृष्णागौर्लोहमुत्तमम् । राहौ च महिषी-

छागौ माषाश्च तिलसर्षपाः ॥ अजामेषौ तु दातव्यौ केतावऽन्नं विमिश्रितम् । स्वर्णगोविप्रपूजाभिः सर्वेषां शान्तिरुत्तमा ॥ ७ ॥

प्रश्न लग्न में १२ द्वादशस्थान में सब ग्रह, तथा लग्न व अष्टमस्थान में सूर्य व चन्द्र, षष्ठस्थान में चन्द्र, दशमस्थान में भौम आदि भौ, बु, जी, शु, श, रा, के, सप्तमस्थान में बुध आदि बु, जी, शु, श, रा, के इह ग्रह हो, तो दोषकारक हैं। यदि सूर्य दोषकारक हो, तो प्रेत का दोष, गाई ताम्बा ज्यौंवों और रक्तचन्दन दान से नष्ट होता है। तथा चन्द्र हो, तो आकाश का दोष, शङ्ख चन्दन श्वेतवस्त्र व श्वेततुण्डल दान से नष्ट होता है। भौम हो, तो शाकिनियों का दोष वृषभ रक्तवस्त्र तिलयुक्तअन्न दान से हटता है। बुध हो, तो योगिनियों का दोष, कर्पूर मूद हरितवस्त्र व नीलमणि

के दान से हटता है। गुरु हो, तो देवों का दोष पीतवस्त्र हरिद्रा चणा के दान से नष्ट होता है। शुक्र हो, तो पानी का दोष घोडा श्वेतधान्य के दान से हटता है। शनि हो, तो प्रेतों का दोष, तिलतेल कृष्णधेनु और लोह दान से हटता है। और राहु या केतु हो, तो छाया का दोष भैंस बकरी माष तिल व सर्षप दान से। तथा केतु पर भेड बकरी और सप्तान्न दान से नष्ट होजाता है॥ तथा सोना गोदान और ब्राह्मणों की पूजा से सबों का दोष नष्ट होता है॥ ७॥

(अष्टमाधिपति का फल) जन्मराशितनुभ्यां च अष्टमाधिपतेर्दिने। मासे वर्षे च दारिद्र्यशोकसन्तापदुःखिता॥ (सूर्य भौम और शनि का गोचर से संज्ञा व फल) गोचरेणाऽन्त्यप्रथमद्वितीयेऽर्काऽरसू·

र्यजाः । दिनेश्वराऽङ्गारकाऽर्किवाराः स्युः क्रमतोऽशुभाः ॥

गोचर से बारवां १२ प्रथम १ और दूसरा २ सूर्य हो, तो ईशवार, भौम हो, तो मङ्गलवार, और शनि हो वडशरवार नामक यथायोग्य अशुभफल देते हैं ॥

(नक्षत्र और गोचर के अङ्ग चार से शनि का फल)

जन्मभाद्दद्ने लेकं[१] गुदे द्वे[२] मस्तके त्रयम्[३] । द्वे[२] नेत्रे हृदये पञ्च[५] वामहस्ते चतुष्टयम्[४] ॥ पदोः षट्कं[६] दक्षहस्ते चत्वार्यृक्षाणि[४][८] दापयेत् ॥ यस्मिन्नृक्षेस्थितः सौरिः फलं तत्रार्ति[१]मृत्युकौ[२] । राज्यं[३] लक्ष्मीं[४] च सौख्यं[५] च भङ्गं[६] क्लेशं[७] जयं[८] वदेत् ॥ दक्षहस्ते विशत्यार्किः षण्मासान्[६] नखवासरान्[२] । त्रीन्[३] मासान्मुखगस्तिष्ठेत्सदिग्घस्त्रांस्ततो[१] गुदे । षण्मासान्[६] नखघस्त्रांश्च[२] दिङ्मासा[१]-

न्मस्तके ततः । सखों[20]श्विघस्त्रषण्मासान्नेत्रयोर्निवसेत्ततः ।
त्र्यंशोनां[20]त्यं[16]ष्टिमासेषु हृदये वामहस्तके । सत्र्यंशां[10]त्रिश्वं[13]-

(नक्षत्र और गोचर के अङ्गचार से शनि का फलचक्र)

नक्षत्र	नक्षत्र	मासदिन	मास दिन	अङ्गों पर	फल
०	०	६।२०	६। २०	दाहे हाथ	जितना
१	१	३।१०	१०।०	मुंह पर	दुःख
२	३	६।२०	१६।२०	गुदा पर	मौत
३	६	१०।०	२६।२०	सिर पर	राज्य
२	८	६।२०	३३।१०	आंखों पर	धौलत
५	१३	१६।२०	५०।०	छाती पर	सुख
४	१७	१३।१०	६३।१०	बाहे हाथ	भङ्ग
६	२३	२०।०	८३।१०	पैरों पर	दुःख
४	२७	६।२०	९०।०	दाहे हाथ	जितना

मासेषु नंखमासान्पदोस्तथा । त्र्यंशोनंसप्तमासेषूषित्वा-
ऽथो दन्तिपाणिकम् । निर्याति सूर्यतनयः फलं प्राग्व-
दुदाहृतम् ॥ (जातककी ग्रहदृष्टिः) त्रिदशं-त्रिकोणं-च-
तुरस्र-सप्तमानऽवलोकयन्ति चरणाभिवृद्धितः । रविजाऽ-
मरेज्यरुधिराः परे च ये क्रमशो भवन्ति किल वीक्ष-
णेऽधिकाः ॥ (अन्यच्च) तृतीयदशमं सौरिस्त्रिकोणं तु
बृहस्पतिः । चतुर्थाष्टमयोर्भौमः शेषाः पश्यन्ति सप्तमम् ॥

ग्रहदृष्टयः

श रा के	बृहस्पति	भौम	सू चं बु शु	ग्रहाः
३ । १०	५ । ९	४ । ८	७ । ०	पूर्णदृष्टिः
५ । ९	४ । ८	७ । ०	३ । १०	त्रिपाददृष्टिः
४ । ८	७ । ०	३ । १०	५ । ९	अर्धदृष्टिः
७ । ०	३ । १०	५ । ९	४ । ८	पाददृष्टिः

(वालकों को दान्त जमने का फल) मासे चैत्प्रथमे भवेत्सदशनो बालोविनश्येत्स्वयं हन्यात्स क्रमतोऽनुजात-भगिनी-मात्रऽग्रजान्ध्यादिके । षष्ट्यादौ लभते हि भोगमतुलं तत्तत्सुखं पुष्टितां लक्ष्मीं सौख्यमथो जनौ सदशनो वोर्ध्वं स्वपित्रादिहा ॥ १ ॥

प्रथम मास में वालक को जमा हुवादान्त अपने आप को, दूसरे में छोटे भाईयों को, तीसरे में बहिन को, चौथे में माई को. और पांछवे में बडेभाई को मारता है, छडवें में बहुत भोग, सातवे में नानासुख, आठवें में पुष्टि, नवमे में लक्ष्मी, और दसवें में सुख देता है। जब उपर के तर्फ दान्तसहित जमेगा, तो पिता आदि सब वन्धुओं को नष्ट करेगा ॥ १ ॥

(भूला में रखना और सूरज दिखाना) दन्ताऽर्कभूप-

धृतिदिङ्मितवासरे स्याद्वारे शुभे मृदुलघुध्रुवभैः शिशूनाम् । दोलाधिरूढिरऽथ निष्क्रमणं चतुर्थमासे गमोक्तसमयेऽर्कमितेऽह्नि वा सत् ॥

३२ । १२ । १६ । १८ । १०वे दिन में, तथा चं, बु, जी, शुक्रवार पर, और ऽश्वि, रो, मृ, ति, उ३, ह, चि, ऽनू, ऽभि, रे इन नक्षत्रों पर झूला में बालक सोलाना अच्छा है । तथा चौथमे मास में अश्वि, मृ, पुं, ति, ह, अनू, श्र, धं, रे, इन यात्रोक्त शुभवारयुक्त नक्षत्रों पर, वा १२ बारवां दिन में बालक को घर से निकालना याने सूरज दिखाना अच्छा है ॥ १ ॥

(बालकों को गाई बकरी आदि का दूध पिलाना और रोटी खिलाना) एकत्रिंशद्दिने चैव पयः शङ्खेन पाययेत् । अन्नप्राशननक्षत्रदिवसोदयराशिषु । रिक्तानन्दाऽष्टदर्श

[१२]हरिदिवसमऽथो सौरिभौमाऽर्कवारं लग्नं जन्मर्क्षलग्ना-ष्टमगृहलवगं मीनमेषालिगं च । हित्वा षष्ठात्समे मा-स्यऽथच मृगदृशां पञ्चमादोजमासे नक्षत्रैः स्यात्स्थि-राख्यैः समृदुलघुचरैर्बालकाऽन्नाशनं सत् ॥ १ ॥

एकतीस दिन में शंख से बच्चों को दूध पिलाना, या अ-न्नप्राशन मुहूर्तों दिनों लग्नों व राशियों पर ॥ तथा १, ४, ६, ८, ९, ११, १२, १४, ३० यह दिन, सू, भौ, शनिवार, और जन्मराशि व लग्न से अष्टमराशि व नवांश का लग्न और मी मे वृं लग्न को छोड कर, बालकों को छटवें मास से सममास में और लडकियों को पांछवेंमास से विषममास में ऽश्वि, रो, मृ, पुं, ति, उ३, ह, वि, स्वा, ऽनू, श्र, धं, श, रे यह नक्षत्रों पर रोटी खिलाना अच्छा है ॥ १ ॥

(कान आदिकों का सूराख करना) हित्वैतांश्चैत्र-पौषाऽवमहरिशयनं जन्ममासं च रिक्तां युग्माब्दं ज-न्म[10]ता[19]रा[6]मृ[7]तुर्मुनिवसुभिः सम्मिते मास्यऽथो वा । ज-न्माहात्सूर्यभूपैः परिमितदिवसे ज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारेऽथौ-जाब्दे विष्णुयुग्माऽदितिमृदुलघुभैः कर्णवेधःप्रशस्तः ॥ संशुद्धे मृतिभुवने त्रि[5]को[9]णके[14]न्द्र[10]त्र्या[3]ऽय[11]स्थैः शुभखचरैः कवीज्यलग्ने । पापाख्यैरऽरिसहजाऽयगेहसंस्थैर्लग्नस्थे त्रिदशगुरौ शुभावहः स्यात् ॥ १ ॥

चैत्र, पौष, क्षयह, हरिस्वाप याने (आषाढ शुक्लद्वादशी से कतक शुक्लद्वादशी तक चार मास) जन्ममास रि-क्ता तिथि, समवर्ष, और जन्मतारा (१ । १० । १९) को छोडकर छः साथ आठवें मास में, या जन्मदिन से

१२ । १६ दिन में, चं, बु, जी, शुक्र वार में अश्वि मृ पुं ति ह चि अनू अभि, श्र, धं, रे, इन नक्षत्रों पर कान आदि का सूराख करना अच्छा है ॥ अष्टमगृह में कोई ग्रह न होवे, १, ३, ४, ५, ७, ६, १०, ११ घर में शुभग्रह हो, शुक्र या गुरु का घर (वृ, तुं, धं, मी) लग्न होवे, ३, ६, ११, घर में पापग्रह होवे, बृहस्पति लग्न में हो, तो बहुत अच्छा है ॥ १ ॥

(भानुमास) असङ्क्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटः स्याद्द्विःसङ्क्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् । क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यथा स्यात्तथा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं चेत् ॥ (मलिम्लुचमास) द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैःषोडशभिस्तथा । घटिकानां चतुष्केण सम्पतत्यऽधिमासकः ॥ १ ॥

(चौलादि संस्कारों के विषय पर) पञ्चमासाधिके मातुर्गर्भे चौलं शिशोर्न सत् । पञ्चवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपि मातरि ॥ ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादि नाऽऽचरेत् । ज्येष्ठापत्यस्य नोज्यैष्ठे कैश्चिन्मार्गेऽपि नेष्यते ॥

माई का गर्भ पांछ मास से अधिक हो, तो बालक को चूडा न करना । जब लडका पांछ वर्षों से अधिक हो, तो माई गर्भिणी होने पर भी यथेष्ठ करना चाहिये । जब माई रजस्वला या जमी हो, तो चूडादि कोई संस्कार न करना ॥ तथा आदिगर्भलडके को ज्येष्ठमास में कोई चौला या उपनयन या विवाह न करना । मगरमास में भी कई आचार्य न करना कहते हैं ॥१॥

(यात्रा से आकर गृह प्रवेश) यात्रानिवृत्तौ शुभदं प्रवेशनं मृदुध्रुवत्रिप्रचरैः प्रवेशिनाम् । त्रिको-

सकेन्द्राऽयधनत्रिगैः शुभैर्लग्ने त्रिषष्ठाऽयगतैश्च पापकैः। शुद्धाऽम्बुरन्ध्रैर्विजनोर्भमृत्यौ व्यऽर्कार-रिक्ता-चर-दर्श-चैत्रे। अग्रेऽम्बुपूर्णं कलशं द्विजांश्च कृत्वा विशेद्वेश्म भकूटशुद्धम् ॥ १ ॥

ऽश्वि रो मृ पुं ति उ३ ह चि स्वा ऽनू श्र धं श रे नक्षत्र, १ २ ३ ४ ५ ७ ६ १० ११मा घर में शुभग्रह ३ ६ ११मा में पापग्रह । तथा ४, ८म घर की शुद्धी पर और सू भौ वार ४ ६ १४ ३० यह तिथि, चैत्र-मास, जन्मलग्न से अष्टमराशि तथा मे क तुं मं यह चरलग्न भी छोड के लग्न पर, तथा गौचरराशि से षष्ठाष्टक न होने पर यात्रा से वापस आकर जलपूर्ण घडा व ब्राह्मणों को आगे कर के अपने घर को घुसना चाहिये ॥ १ ॥

(नौका की यात्रा) अश्विकरेज्यसुधानिधिपूर्वामित्रधनाऽच्युतभे शुभलग्ने । तारकयोगतिथीन्दुविशुद्धौ नौगमनं शुभदं शुभवारे ॥ १ ॥ अश्वि मृ ति पू ३ ह अनू श्र धं यह नक्षत्र, शुभलग्न जन्मतारा योग तिथि और चन्द्र के शुद्धी पर शुभग्रहों की वार पर नौका यात्रा अच्छी है ॥ १ ॥ (वृक्ष बोना, राजा देखना, मद्यारम्भ और गावों का क्रय विक्रय करना)

राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणाक्षिप्रैर्लतापादपाऽरोपोऽथो नृपदर्शनं मृदुध्रुवक्षिप्रश्रवोवासवैः । तीक्ष्णोग्राऽम्बुपभेषु मद्यमुदितं क्षिप्रान्त्यवह्नीन्द्रभादित्येन्द्वम्बुपवासवेषु हि गवां शस्तः क्रयो विक्रयः ॥ २ ॥

ऽश्वि रो मृ ति उ ३ ह चि वि ऽनू मू श रे, यह नक्षत्रों

पर वृक्षों का बोना । अश्वि रो मृ ति उ ३ ह चि अनू श्र धं रे इन पर राजों का दर्शन करना । भ आर्द्रा ऽश्ले म पू ३ ज्ये मू श, पर मद्य की काम करना । और ऽश्वि कृ मृ पुं ति ह ज्ये धं श रे, इन पर गाईआदियों का खरीदना या वेचना अच्छा है ॥ २ ॥ (पशुओं का यात्रादि)

लग्ने शुभे चाष्टमशुद्धिसंयुते रक्षा पशूनां निजयोनिभे चरे । रिक्ता[४।९।१४] ऽष्टमीदर्श[३०]कुजश्रवोध्रुवत्वाष्ट्रेषु यानं स्थिरवेशनं न सत् ॥ ३ ॥ अष्टमघर के शुद्धियुक्त शुभलग्न पर, और अपने २ योनिनक्षत्र पर व चर (स्वा पुं श्र धं श) पर पशुओं की रक्षा अच्छी है । किन्तु ४ ८-९-१४-३० तिथि भौमवार रो उ ३ चि इननक्षत्रों पर पशुओं की यात्रा या स्थिरकाल तक किसी के पास रखना अच्छा नहीं ॥ ३ ॥ (दवा करना व सूचीकर्म)

भैषज्यं सन्मृदुलघुचरे मूलभे द्व्यङ्गलग्ने शुक्रेन्दिज्ये विदि च दिवसे चापि तेषां रवेश्च। शुद्धे रिफद्युन-मृतिगृहे सत्तिथौ नो जनेर्भे सूचीकर्माप्यऽदितिवसुभे त्वाष्ट्रमित्राऽश्विपुष्ये ॥ ४ ॥ ऽश्वि मृ पुं ति ह चि स्वा ऽनू मृ श्र धं श रे यह नक्षत्र द्विस्वभाव (मिकं धं मी) लग्न में, चं वु जी शुक्रहोने पर, और सू चं वु जी शुक्रवार पर तथा ७ ८ १२वे घर में काई ग्रह न होने पर, तथा शुभति-थियों होने व जन्मतारा न होने पर भैषज्यकी काम अच्छी है। तथा ऽश्वि पुं ति चि अनू धं पर सूचीकाम करना अच्छी है ॥ ४ ॥ (नाडी खुलाना व जुलाभा करना)

त्वाष्ट्रान्मित्रकभाद्द्वयेऽम्बुपलघुश्रोत्रे सिरामोक्षणं भौ-मार्केज्यदिने विरेकवमनाद्यं स्याद्बुधार्की विना ॥ ५ ॥

ऽश्वि रो मृ ति ह चि स्वा अनू ज्ये पर, सू भौ जीववार पर नाडीखुलाना, और बु शनिवार के विना जुलाबखानादिक काम भी अच्छा है ॥ ५ ॥ (रोग होने का फल)

स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसर्पभे मृतिर्ज्वरेऽन्त्यमैत्रे स्थिरता भवेद्रुजः। याम्यश्रवोवारुणतक्षभे शिवाघस्रा हि पक्षोऽर्धपार्कवासवे ॥ मूलाग्निदस्रे नव पितृभे नखाँ बुध्न्यार्यमेज्याऽदितिधातृभे नगाः। मासोऽब्जवैश्वेऽथ यमाहिमूलभे मिश्रेशपित्र्ये फणिदंशने मृतिः ॥ रौद्राहिशाक्राम्बुपयाम्यपूर्वा द्विदैववस्वऽग्निषु पापवासरे। रिक्ताहरिस्कन्ददिने च रोगे शीघ्रं भवेद्रोगिजनस्य मृत्युः ॥ ६ ॥

आर्द्राऽश्ले पू ३ स्वा ज्ये पर ज्वर हो, तो मरण। अनू रेवती पर रोग की चिरता। भ चि श्र श पर रोग

ग्याराह दिन रहे। ह वि धं पर पक्ष तक रहे। अश्वि कृ मूलपर नौ दिन रहे। मघापर वीस दिन रहे। रो पुं ति उफा उभा पर सातदिन रहे। और मृ उषा पर रोग हो, तो मास तक रहेगा। यदि भ कृ आर्द्रा-ऽश्ले वि मू पर सांप काटेगा तो मरेगा॥ तथा भ कृ आर्द्राऽश्ले पू ३ वि ज्ये धं श पर, ४-६-६-१२-१४ तिथियों पर और सू भौ शनिवार पर रोगी हो, तो मरजायेगा॥ ६॥ (रोगों से मुक्तोंका स्नान)

व्यऽन्त्याऽदितिध्रुवमघाऽनिलसार्पधिष्ण्ये रिक्ते तिथौ चरतनौ विकवीन्दुवारे। स्नानं रुजाविरहितस्य जनस्य शस्तं हीने विधौ खलखगैर्भवकेन्द्रकोणे॥ ७॥ (११ १४७१० ९५)

रो पुं ऽश्ले म उ ३ स्वा रेवती के विना चं शुक्रवार

के विना चर (मे क तुं मं) लग्न व रिक्तातिथि पर तथा निर्बल चन्द्र और पापग्रह १ ४ ५ ७ ६ १० ११ घर में होने पर रोग से मुक्त होई पुरुष को स्नान करना अच्छा है ॥७॥

(खेत को हल चलाना) मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रै-र्विनाऽर्क शनिं पापैर्हीनवलैर्विधौ जललवे शुक्रे विधौ मांसले । लग्ने देवगुरौ हलप्रवहणं शस्तं न सिंहे घटे कर्कोऽजैणघटे तनौ क्षयकरं रिक्तासु षष्ठ्यां तथा ॥८॥ ऽश्वि रो मृ पुं ति म उ ३ ह चि स्वा वि ऽनू मू श्र धं श रे यह नक्षत्र चं भौ वु जी शुक्रवार पापग्रह निर्बल हो जलराशि व उसको नवांश में चन्द्र व शुक्र बलिष्ट हो, बृहस्पति लग्न में हो और सिं कुं लग्न न होने पर हल चलाना अच्छा है। परन्तु मे क मं तुं लग्न व ४ ६ ६ १४ तिथि हो , तो क्षेत्र नष्ट हो जायेगा ॥ ८ ॥ (बीज बोना) एतेष्वऽश्रुतिवारुणाऽ-

दितिविशाखोडूनि भौमं विना बीजोप्तिर्गदिता शुभा
त्वऽशुभतोऽष्टौऽ^{३}ग्नीन्दु^{१}रा^{३}मेन्दवः^{१} । रा^{३}मेन्दू^{१}ऽग्नि^{३}युगा^{४}न्यऽ-
सच्छुभकराण्युप्तौ हलेऽर्कोज्झिताद्धाद्रा^{३}माऽष्टनवा^{९}ऽष्ट-
भानि मुनिभिः प्रोक्तान्यऽसत्सन्ति हि ॥ ९ ॥

पुं वि श्र श इन चार नक्षत्र के विना हलचलाने के नक्षत्रों ऽश्वि रो मृ ति म उ ३ ह चि स्वा अनू मू धं रे पर भौम-वार के विना बीज बोना अच्छा है परन्तु राहुयुक्तनक्षत्र से ८-३-१-३-१-३-१-३-४ चार नक्षत्र अशुभ व शुभ हैं ॥ तथा हलचलाने पर सूर्ययुक्तनक्षत्र के दूसरे से ३-८-९-८ आठ नक्षत्र अशुभ व शुभफल देते हैं ॥ ९ ॥ (शय्या)

हस्ताऽदितिब्रह्मगुरूत्तराणि पौष्णयाऽश्विमूलेन्दुभचि-
त्रकानि । वारेषु जीवेन्दुसितेन्दुजानां शय्यासमारम्भ-

णमुत्तमं स्यात् ॥ १० ॥ ऽश्वि रो मृ पुं ति उ ३ ह चि मू रे नक्षत्र पर, चं बु जी शु वार पर बिछौना की काम अच्छी है ॥ १० ॥ (वगी घोडा और हाथीः आदि पर चडना) पौष्ण्यप्रजेशाऽदितिभद्वयानि हस्तादिषट्कश्रवणोत्तराणि । दोलादिमातङ्गतुरङ्गमाणामारोहणेऽभीष्टफलप्रदानि ॥ ११ ॥ रो पुं ति उ ३ ह चि स्वा वि ऽनू ज्ये श्र रे इन नक्षत्रों पर बगी हाथी और घोडे आदि सवारी पर चडना अच्छा है ॥ ११ ॥ (धान्य काटना) तीक्ष्णाऽजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दुस्वातीमघोत्तरजलाऽन्तकतक्षपुष्ये । मन्दाऽर्करिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभे विलग्ने ॥ १२ ॥ भ कृ मृ आर्द्रा ति ऽश्ले म उ ३ ह चि स्वा

ज्ये मू श्र धं श रे इह नक्षत्रों पर औ शनिवार व रिक्ता-
तिथि व स्थिर (वृ-सिं-वृं-कुं) लग्न भी छोड के धान्य
काटना अच्छा है ॥ १२ ॥ (नवाऽन्न खाना)

नवान्नं स्याच्चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ शुभम् । विना
नन्दा - विषघटी—मधुपौषाऽर्किभूमिजान् ॥ १३ ॥

ऽश्वि मृ पुं ति ह चि स्वा ऽनू श्र धं श रे यह नक्षत्र और
शुभलग्न पर नन्दा (१-६-११) विषघटी वक्ष्यमान और चैत्र
व पौषमास तथा भौम शनिवार को छोडके नवान्न खाना
अच्छा है ॥ १३ ॥ (विषघटिका) स्वरांमतोऽन्त्याऽ-
दितिवह्निपितृभे खवेदतः के रदतश्च सर्पभे । खबाँ-
णतोऽश्वेधृतितोऽर्यमाऽम्बुपे कृतेर्भगत्वाष्ट्रभजीवविश्वभे ॥
भैनोद्धिदेवाऽनिलसौम्यशाक्रभे कुपक्षतश्चैव करेऽष्टितोऽ-

जभे । युगाँऽश्वितो बुध्न्यभतोययाम्यभे खचन्द्रतो मित्रभवासवश्रुतौ ॥ मूलेऽङ्गबाणाद्विषनाडिकाः कृता वर्ज्याः शुभेऽथो विषनाडिका ध्रुवाः । निघ्ना भभोगेन खतर्कभाजिताः स्पष्टा भवेयुर्विषनाडिकास्तथा ॥ १४ ॥

रे पुं कृ मघा को ३० तीसघटी से । रो को ४० से । ऽश्ले को ३२ से । ऽश्वि को ५० से । उफा-श को १८ से । पूफा-चि-ति-उषा को २० से, वि-स्वा-मृ-ज्ये को १४ से, ह को २१ से, पूभा को १६ से, उभा-उषा-भ को २४ से, ऽनू-धं-श्र को १० से और मू को ५६ घडी से शेष ध्रुवविषघटी नियमित किये हैं शुभकाम पर छोडना । पूर्वोक्त विषघटी को नक्षत्रभोग से गुण कर साठ से भाग देकर स्पष्टघटियां होंगे ॥ १४ ॥

(अथ संक्रान्तिव्रतधारण को भक्ष्य) यवान्न-शाक-शृङ्गा-

टपिष्ट-क्षीराँणि-शर्करम् । दधि-जातीफलमाऽज्यं-गोधूमं सलिलं तथा । नवमन्नं-फलं भक्ष्यं मार्गशीषादिसंक्रमे ॥ १५ ॥ (सर्वाङ्क देखना) तिथिं वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् । द्वित्रिचतुर्भिर्गुणितं रससप्ताऽष्टभाजितम् ॥ आदिशून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये रिपोर्भयम् । अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वाङ्के विजयो भवेत् ॥१६॥ (चन्द्रकी अवस्था) षष्टिघ्नं गतभं भुक्तघटीयुक्तं युगाँहतम् । शराँब्धिहल्लब्धतोऽर्के शेषेऽवस्था क्रियाद्विधोः ॥ प्रावासनाशौ मरणं जयश्च हास्या रतिः क्रीडितसुप्तभुक्ताः । ज्वरांख्यकम्पस्थिरता अवस्था मेषात्क्रमान्नामसदृक्फलाः स्युः ॥ १७ ॥ (वार्ताक आदि नवफल

खाना) हस्तः पुनर्वसुर्मैत्रं स्वातिर्मूलमृगाश्विनः । उत्तरा वैष्णवं चित्रा रोहिणी च फलप्रदा ॥ द्राक्षादौ नवपुष्पेषु वार्ताकादिफलेषु च । नवान्ने नवमद्ये च शोभनानि स्मृतान्यलम् ॥ १८ ॥ ऽश्वि रो मृ पुं उ ३ ह चि स्वा ऽनू मू श्र इन पर अंगूर वाङ्गन आदि नईफल, गुलाभ आदि नईफूल, मकी आदि नईधान्य और मद्य आदि नई पीने वास्तुओं पर अच्छे हैं ॥ १८ ॥ (हिसाभ का आरम्भ) शतद्वयेऽनुराधाद्रारोहिणीरेवती करे । पुष्ये जीवे बुधे कुर्यात्प्रारम्भं गणितादिषु ॥ १९ ॥ रो ऽर्द्रा ति ह ऽनू श पुभा रे पर और बु जीव वार पर गणित आदि का शिरो करना ॥ १९ ॥ (शिल्पविद्या) हस्तत्रये श्रवणर्क्षे त्र्युत्तरे रोहिणीमृगे । रेवत्यामऽ-

श्विनीपुष्ये पुनर्वस्त्वऽनुराधयोः ॥ शस्ते तिथौ शुभे वारे शिल्पविद्यां समाचरेत् ॥ २० ॥ (कोष्ठ में धान्य रखना) पुनर्भे मृगशीर्षेऽन्त्येऽनुराधाश्रवणत्रये । हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्ये रोहिण्यामुत्तरात्रये ॥ गुरौ शुक्रे रवीन्द्वोः सत्कोष्ठादौ धान्यरक्षणम् ॥ २१ ॥ (सोने की काम) श्रवत्रयेऽश्विनीपुष्ये मृगहस्तचतुष्टये । कृत्तिकायां पुनर्भे च शुभलग्नतिथ्यादिषु । सुवर्णकारक्रिया शस्ता हित्वा बुधशनैश्चरौ ॥ २२ ॥

(लग्न को गुणदायक दोषहारक योग) हिबुंकधर्मसुतोदयकर्मसु त्रिदशगुरौ शशिजे यदि वा सिते । यदऽशुभं शुभतां समुपैति तच्छुभफलं नितरामऽभिवर्धते ॥

दोषाणां शतमपहन्ति सोमपुत्र इति च (पृ ४४-१२)

लग्न में १, ४, ५, ६, १०मस्थान में बुध जीव या शुक्र हो, तो जो अनिष्ट स्थानस्थित ग्रहों का दोष हो, उस को नष्ट और शुभफल को पुष्ट करते हैं ॥ १ ॥

(स्वल्पदोष से लग्न की हानी नहोना कहता है) समस्तगुणसम्पदां न खलु लब्धिरल्पैर्दिनैर्गुणप्रचुरता ततो बहुमता च दोषाल्पता । न भूरिगुणसञ्चये प्रभवतीह दोषोऽल्पको ह्युदर्चिषि हुताशने सलिलबिन्दुरेको यथा ॥ १ ॥

सब गुणों का होना कम समय में न होने के कारण लग्न में गुणों की अधिकता और दोष की स्वल्पता सम्भव भी आचार्यों ने अच्छे ही स्वीकार किई हैं, क्योंकि प्रज्वलित अग्नि में जलबिन्दु सा बहुतगुणों

में कमदोष नष्ट होजाता है ॥ १ ॥

(त्र्यह त्रिस्पृक् का स्वरूप व फल) यत्रैकः स्पृशति तिथिद्वयावसानं वारश्चेद्ऽवमदिनं तदुक्तमार्यैः । यः स्पर्शाद्भवति तिथित्रयस्य चाह्नां त्रिद्युस्पृक् स पुनरिदं द्वयं च नेष्टम् ॥१॥ शुक्लप्रतिपदोऽन्त्यार्धात्सप्तमे सप्तमे दले । भद्राऽर्कसंक्रमाऽद्यऽन्तनृपनाड्यश्च निन्दिताः ॥२॥

वारों का प्रमाण सूर्योदय से सूर्योदय तक होने के कारण जिस दिन की वार, बीच में सूर्योदय न होने के कारण दो दिनों की अन्त को गृहण करे, उस को अवम (त्रयहः) आचार्य कहते हैं क्योंकि तीन तिथियों की संगति एक ही वार में होती है ॥ जैसा रवौ द्विदि १। १४ त्र्यहः । चन्द्रे, चशे ३। २७ याने रविवार में सूर्योदय के पीछे एक घटी और चौदाह

१४ पल तक द्वितीया तिथि थी, उपर तृतीया का आरम्भ होवा। चन्द्रवार में चतुर्थी रविवार की शेष ३। २७ होने पर प्रारम्भ होई। ऐसे द्वितीया तृतीया और चतुर्थी तीन तिथियों की संगति (त्र्यहः) एकही रवि-वार में है। तथा तीन वारों की संगति को त्रिस्पृक् कहते हैं। जैसा रवौ द्विशे २। २४ त्रिस्पृक् चन्द्रे द्विदिं ३। ३०। याने शनिवार के दो घडी चौवीस पल शेष होने पर द्वितीया का प्रारम्भ हुई, रविवार सम्पूर्ण और चन्द्रवार के ३। ३० समय पर द्वितीया समाप्त होती है ऐसे शनि, रवि, और चन्द्र यह तीन वारों की संगति द्वितीया तिथि में है, यह दो अपने २ भाग में याने प्रवेश से निर्गम तक,

(भौमार्कशनिवारेषु त्र्यहस्पृक्दिवसो यदि। कार्यं निष्फलतां याति शुभे शोभनमादिशेत्॥) इति वचन से

सू, भौ, शनिवार के साथ अनिष्ट हैं अन्यवारों पर नहीं ।१। शुक्लप्रतिपदा के पश्चिमदल से गिनती कर के सप्तम २ दल, याने शुक्लचतुर्थी एकादशी का और कृष्ण तृतीया दशमी का पश्चिमदल । तथा शुक्लाष्टमी, एकादशी कृष्णसप्तमी और चतुर्दशी का प्रथमार्ध भद्रानामक करण अनिष्ट है ॥ और निरंशभास्कर याने संक्रान्ति समय से पूर्व १६ सोला पीछे १६ सब वतीस ३२ घडियां शुभकार्य पर त्याज्य हैं ॥ २ ॥ (तिथिनिर्णय)

दर्शश्च पौर्णमासी च पित्रोः सांवत्सरं दिनम् । पूर्वविद्धमकुर्वाणो नरकं प्रतिपद्यते ॥ १ ॥ पूर्वाह्णे दैविके श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम् । एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम् ॥ २ ॥ यां तिथिं समनुप्राप्य प्रयात्यऽस्तं दि-

वाकरः । सातिथिः सकला ज्ञेया स्नानदानादिकर्मसु ॥ ३ ॥ दैवकार्ये तिथिर्ज्ञेया यस्यामऽभ्युदितो रविः । पितृकार्ये तिथिर्ज्ञेया यस्यामस्तमितो रविः ॥४॥ अमावस्याष्टमी षष्ठी तृतीयैकादशी तथा । त्रयोदशी चतुर्दश्यौ देवकार्ये परिश्रिता ॥ ५ ॥ तिथेः प्रान्तं सुराणां तु उपोष्यं मुनयो विदुः । पित्र्यं मूलं तिथेः प्रोक्तं धर्मज्ञैः शास्त्रचिन्तकैः ॥ ६ ॥ यथा द्वादशभिर्मासैर्मासो वृद्धो मलिम्लुचः । तथा तिथिस्त्वऽहोरात्रावृद्धिः प्रोक्ता मलिम्लुचः ॥ ७ ॥ यथा मलिम्लुचः पूर्वो मासो दैवस्तथोत्तरः । त्याज्या तिथिस्तथा पूर्वा ग्राह्या चैव सदोत्तरा ॥ ८ ॥

पर्वतन्त्र पर आमावसी पूर्णिमा और पितरों का सां-
वत्सरिक आदि श्राद्ध पूर्वविद्ध न करने वाला नरक को
पाता है ॥ १ ॥ दैवकर्म पर दिन का प्रथमभाग, एको-
द्दिष्ट कर्म पर मध्यमभाग, और पितृकर्म पर पीछला-
भाग और उत्सवकर्मों पर प्रातःकाल उत्तम कहा है॥२॥
जिस तिथि में सूरज अस्त करे, वह स्नान दानादिक
कर्मों पर दिवा याने खण्डित भी सम्पूर्ण ही जानना ॥३॥
जिस में सूर्य उदय करे वह तिथि देवकर्मों पर, जिस में अस्त
करे वह पितृकर्मों में खण्डित भी पूर्ण ही जानना ॥४॥ अ-
मावसी अष्टमी षष्ठी तृतीया एकादशी त्रयोदशी और चतु-
र्दशी देवकर्मों पर याने उदययुक्त ही शुद्ध हैं ॥ ५ ॥ तिथि
का निर्गम को देवव्रत पर औरतिथि प्रवेश को पितृव्रत पर
मुनि श्रेष्ठ कहते हैं ॥ ६ ॥ बाराह मासों से मलमास जैसा
अधिक है, वैसा व्रत तिथियों में भी त्र्यस्पृक् अधिक

मलतिथि है ॥७॥ मलमास के समान दैवकर्मों पर पूर्वविद्ध छोडना और उत्तरविद्ध याने दूसरा ही तिथि करना। पितृकर्म पर पूर्वविद्ध ही ॥८॥

इति मुहूर्तखण्डम् ॥

अथ वर्षपत्रखण्डम् ॥

(वर्षप्रवेश लाने की रीति) जन्माब्दहीनेष्टसमो गताब्दस्त्रिधा सपादोऽर्धमितश्च सार्धः। युक्तस्तथा जन्मगवारपूर्वैः स्फुटा भवेदऽब्दप्रवेशवेला ॥

जन्मकालीनवत्सर अभीष्टवत्सर से काट के शेष गताब्दसंज्ञक दिनात्मक कल्पना करके त्रिधा [याने] प्रथम वारादिक, दूसरा आधा घट्यादिक, तीसरा डेडा पलादिक कल्पना कर के एकट्ठा वर्षसारणी होती है। और जन्मीय वार और इष्टकाल घटी पलों से युक्त करके वर्षप्रवेश

समय जन्मकालीन संक्रान्ति अंशों पर प्रकट होजाता है। जैसा सप्तर्षिसंवत् ५०१२ वैशुदि अष्टम्यां बुधे मेषांशाः १७ उदयादिष्टं ४६ । ४२ एतस्मिन्समये सूर्यस्फुट ०।१६।२३।३५ श्रीमतो हरीश्वरजन्म ॥ उस का वर्षपत्र संवत् ५०१३ का बनाना ॥ यहां इष्टसंवत् ५०१३ जन्माब्द ५०१२ से ऊनित होआ १ गताब्दसंज्ञक। यह दिनात्मक प्रथमसवा १।१५ वार व घटी होवा , दूसरा आधा ०।०।३० घटी व पल होवा । तीसरा डेडा ०।०।१।३० पल व विपलात्मक इकट्ठा यथायोग्य करके हुई वर्षसारणी १।१५।३१।३० उसको जन्मकालीन बुधवार रविवार से गिनती करके ४ इष्टकाल ४६।४२ घटिकादिक युक्त करके होवा ६।२।१३।३० अब नक्षत्रपत्री से मेषांश १७ पर देखना शुक्रवार है या नहीं , देखकर वहीवार है, इस लिये उसी दिन २।२३।३० इस इष्ट पर वर्षप्रवेश स्फुट हुवा है ॥

सूर्यांश कभी एक या दो भी फर्क से आते हैं, परंतु वार कभी नहीं बिगडती, इसलिये वार पर ही निःसन्देह रहना, किन्तु सूर्यस्फुट जन्मसूर्यसमान होना यह नियम है॥

वर्षलिखने की रीति यह है ॥ संवत् ५०१३ वैवदि पञ्चम्यां शुक्रे शुमूप्र ७। ३४ पंप्र २। ५५ स्थिरः। रार्धं १३। १८ रात्रि २६। ३६ दिनं ३३। २४ मेषांशाः १८ सूर्योदयादिष्टं २। १३ एतस्मिन्समये हरीश्वरस्य गताब्दः १ प्रवेशाब्दः २ शुभदोऽस्तु ॥

(नक्षत्रपत्री से तात्कालिक स्पष्ट करना) गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नी खषड्हृता। लब्धमंशादिकं योज्यं शोध्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः ॥ २ ॥ स्वेष्टकोष्ठकाल से होनेवाले ग्रहस्पष्टकोष्ठ तक दिनादिक अन्तर से गुणित ग्रह

(वर्षसारणीयम्) इकाई की कोष्ठ हैं

१	२	३	४	५	६	७	८	९	कोष्ठ
१	२	३	५	६	०	१	३	४	वार
१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	घटी
३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	पल

दहाई की कोष्ठ हैं

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	कोष्ठ
५	४	२	१	६	५	४	२	१	वार
३५	१०	४५	२१	५६	३१	६	४२	१७	घटी
१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	पल

गति को साठ से भाग देकर पाई हुई अंशादिक फल नक्षत्रपत्री को, स्पष्टकोष्ठ गत होने पर जोडना, और गम्य होने पर काट कर तात्कालिकस्पष्ट होता है क्योंकि ग्रह वक्री होने पर उलटा करना॥ जैसा वर्षप्रवेशदिन का कोष्ठ १६ इष्ट २। १३ युक्त १६। २। १३ इसी कोष्ठ में सूर्य व चन्द्र का स्पष्ट अर्धरात्रिक होने के कारण आधरात का मिश्राख्य इष्ट ४६। ४२ युक्त कोष्ठाङ्क १६। ४६। ४२ उन का अन्तर ०।४४।२६ आधरात से इष्ट कम होने की कारण गम्यसंज्ञक से सूर्यगति ५८। १० गोमूत्रिका से गुण कर साठ से भाग देकर हुवा गम्यफल अंशादिक ०। ५३। ६ पञ्चांग के सूर्य ०। १७। ६। २६ कोकाट कर होवा तात्कालिकसूर्य ०। १६। २३। २३ जन्म-सूर्य ०। १६। २३। ३५ को समान है॥ वैसा चन्द्रगति ७४१। २४ से चन्द्रफल अंशादिक ६। ६। ४२ पञ्चाङ्ग के चन्द्र

स्पष्ट ८ । १४ । ३० । ५५ से काट कर होवा तात्कालिक ८ । ५ । २१ । १३ ऐसा भौमादिकों का स्पष्ट प्रभातिक होने से स्पष्टकोष्ट २० । ० ।० स्वेष्टकोष्ट १६ । २ । १३ का अन्तर गम्यसंज्ञक ० । ५७ । ४७ से गतकोष्ट की गति ३ ।५७

अथ तात्कालिकाः सूर्यादीनां स्फुटाः

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	रा	के
०	८	७	१	६	११	११	७	१
१६	५	६	१	५	२३	४	२४	२४
१३	२१	५२	३७	२४	३७	३१	२७	२७
३५	३	४०	५८	५२	२७	३१	५६	५६
५८	७४१	व३	३६	४	२४	६	३	३
७	२४	५७	३६	२	४२	१८	११	११

गुणित २२८।५७ साठ से भाजित ०।३।४८ अंशादिफल ऋण है वक्री होने से कोष्ठस्थस्पष्ट ७।६।४८।५२ को धन करके होवा तात्कालिक भौमस्पष्ट ७।६।५२।४० ऐसा और ग्रहो को भी गतकोष्ठ की गतियों से स्पष्ट यह होई हैं॥

(अयनांशों का साधन) शाको वेदाब्धिवेदोनः षष्टिहृदंशकः फलम्। शेषं कलास्तु सूर्यर्क्षं पञ्चघ्नं विकला मताः॥ १॥

चारसौ चुन्तालीस ४४४ शाका से काट कर साठ से भाग देकर लब्ध अंश, शेष कला, और पांछ से गुणित सूर्यराशि विकला वाला अयनांशहोता है॥ जैसा चारसौ चुन्तालीस ४४४ शाकः १८५९ से काट के १४१५ साठ सेलब्ध २३ अंश शेष ३५ कला, और सूर्यराशि० पांछ से गुणित ० विकला वाला अयनांश

०।२३।३५।० होता है ॥ १ ॥

(लग्न का साधन) तात्कालार्कः सायनस्तस्य भोग्यैर्भागैर्निघ्नाः स्वोदयाः खाग्निभक्ताः। भोग्यं जह्यादिष्टनाडीपलेभ्यः शेषादऽग्र्यान्स्वोदयांश्चात्यशेषम्। त्रिंशन्निघ्नमऽशुद्धाप्तं भागाद्यं मेषपूर्वकैः। अशुद्धात्प्राक्ग्रहैर्युक्तं लग्नं स्याद्व्ययनांशकम् ॥ २ ॥

अयनांश ०।२३।३५।० से तात्कालिक सूर्य ०। १६।२३।३५ युक्त १।६।५८।३५ कर के भुक्तभाग ६। ५८।३५ तीस ३० से काट के २०।१।२५ हुई भोग्यभागों से गुणित वृषोदय २३३ होवा ४६६०।२३३। ५८२५ साठ से लब्ध उपर देकर होवा ४६६५।३०।५। अंशस्थान पर तीस से लब्ध १५५।१५।३०।५ भोग्य-

काल कल्पित इष्टकाल १०।१३ पलों ६१३ से काट कर रहा ४५७।१४।२६।५५। इस से और मिथुनोदय २६६ काट के रहा १६१।१४।२६।५५ इस से कर्कोदय ३५० न कटा, इस लिये, शेष १६१ तीस ३० गुणित ४८३० नीचले फल १४ युक्त ४८४४ से अशुद्धकर्कोदय ३५० से लब्ध १३ अंश है, शेषको २६४।२६।५५ साठ से गुणित १७६४० नीचले फल २६ युक्त १७६६६ से अशुद्धोदय ३५० से लब्ध ५० कला है शेष १३६। ५५ से, एवं १६ विकला अशुद्धराशिकर्कट तक ३ राशिमिला कर ३। १३।५०।२६ अयनांश ०।२३।३५।० काट के हुवा लग्न २।२०।१५।२६ ॥ प्रथमभावसंज्ञक।

(भोग्यकाल से इष्टकाल कम होने पर लग्न साधन)

भोग्यतोऽल्पेष्टकालात्खरामाहतात्स्वोदयाप्तांशयुग्भा-

स्करः स्यात्तनुः। अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो युक्त-
मध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत् ॥

भोग्यकाल से इष्टकाल कम हो, तो तीस से गुणित इष्टकाल से अपने राश्युदय से पाईहुई अंश आदि युक्त सूर्य-स्पष्ट ही लग्न होवेगा। (लग्न से इष्ट लाना) सूर्य का भोग्यकाल लग्न का भुक्तकाल और मध्योदयों से युक्त इष्टकाल होवेगा॥ जैसा उपर का भोग्यकाल १५५। १५। ३०। ५ इष्टकाल २। १३ पलों १३३ से न कटता। इसलिये इष्टपल १३३ तीस से गुणित ३९९० सायन-सूर्यराशि १ वृषोदय २३३ से लब्ध अंशादिकों १७। ७। २८ से सूर्यस्पष्ट १। ६। ४८। ३५ युक्त १। २७। ६। ३ अयनांश ०। २३ ३५। ० हीन १।३।३१।३१ लग्नहोवा॥ लग्न से (इष्टकाल लाना) सायन सूर्यका भोग्यकाल १५५

५।१५।३१ सायनलग्न ३।१३।५०।२६ का अंशादिक १३।५०। २६ कर्कोदय ३५० से गुणित ४५५०। १७ ५००। १०१५० नीचे साठ से उपर तीस से भाग देकर पाया लग्न· भुक्तकाल १६१ । १४ । ३० सूर्यभोग्यकाल १५५ । १५ । ३० और वृष के कर्क तक मध्यममिथुनोदय २९६ युक्त होवा ६१३ इष्टकाल पलात्मक साठ से घट्यादिक १० । १३ यह है॥

(सायनसूर्य व लग्न एकराशिस्थित होने पर इष्टकाल लाना)

यदि तनुदिननाथावेकराशौ तदंशान्तरहत उदयः स्यात्खाग्निहृत्त्विष्टकालः । इनत उदय ऊनश्चेत्स शोध्यो द्युरात्रान्निशितु सरसभार्कात्स्यात्तनूरिष्टकाले ॥

सायनसूर्य व लग्न दानों एकराशिस्थित हो, तो तदंशान्तर से गुणित राश्युदय को तीस से भाग देकर इष्टकाल होवेगा॥ तथा सूर्य से उदय कम होने पर साठघडियों से काट

कर इष्टकाल होवेगा ॥ तथा रात्रीष्टकाल होने पर छःराशि युक्त सूर्यस्पष्ट से लग्न साधना चाहिये।।(जैसा इष्टलाना)सायनसूर्य १।६।५८।३५ सायन लग्न १।२६।५८।३५ इन के अन्तर से २०।०।० वृषोदय २३३ गुणित ४६६० को तीस से भाग देकर होवा पलात्मक इष्टकाल १५५ ॥ (सूर्य से लग्न कम होने पर) जैसा सूर्य १।२६।५८।३५ व लग्न १।६।५८।३५ का अन्तर से २०।०।० वृषोदय २३३ गुणित ४६६० को तीस से लब्ध १५५ साठ से भाग देकर घटिकादिक २।३५ साठ से काट कर होवा सूर्योदय से इष्टकाल ५७।२५॥ (रात्रीष्ट होने पर लग्न साधना) जैसा सायनार्क ७।६। ५८।३५ रात्रीष्ट होने से छःराशियुक्त १।६।५८।३५ से भोग्यकाल १५५।१५।३०।५ रात्रीष्ट १०।१३ प-

लों ६१३ से उक्तरीति से लग्न २।२०।१५।२६ हुवा॥

(काश्मीरिक राश्युदय) मेषे मीने वसुनेवरूपाः। वृषेकुम्भे शिखिशिखियमलाः। मिथुने मकरे षडगनवदस्राः। कर्केधनुषि खेन्द्रियरामाः। सिंहेवृश्चिके पञ्चरसाऽग्नयः। कन्यातौले वसुभूतगुणाश्च॥

(दशम लग्नोदय) मेषे मीने वसुभानि। वृषेकुम्भेगोश्रंङ्कदस्राः। मिथुने मकरे त्रिरदाः। कर्के धनुषि त्रिरदाः। सिंहे वृश्चिके गोश्रंङ्कदस्राः कन्या तौले वसुभानि॥ (दशम लग्न के वास्ते नत संज्ञक इष्ट लाना) रात्रेःशेषमितं युतं दिनदलेनाह्नोगतं शेषकं विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्च्युतं चोन्नतम्। यन्पूर्वो-

(राशियों के उदय)

कश्मीर में		लङ्का में	
मे	१९८	२७८	मी
वृ	२३३	२९९	कुं
मि	२९६	३२३	मं
क	३५०	३२३	धं
सिं	३६५	२९९	वृं
कं	३५८	२७८	तुं

न्नतषड्भयुक्तरवितः पश्चान्नता-
दित्यतो यल्लङ्कोदयकैश्च लग्नमिव
तन्मध्यं सषड्भं सुखम् ॥

नत, दिन में मध्याह्न के नीचे पूर्व, उपर पश्चिम और अर्धरात के नीचे पश्चिम उपर पूर्वसंज्ञक, ऐसे चार प्रकार की है ॥ याने आधरात से मध्याह्न तक पूर्व और मध्याह्न से आधरात तक पश्चिमनत है ॥ आधरात से उपर या नीचे इष्टकाल हो, तो दिनार्ध युक्त और मध्याह्न से नीचे या उपर इष्टकाल हो, तो दिनार्ध से अन्तर करके पूर्वनत और पश्चिमनत होती

है ॥ और ३० तीस से काटे हुई नत ही उन्नत होती है ॥ नियम है कि पूर्वोन्नत इष्टकाल हो, तो छःराशि युक्त सूर्यस्पष्ट से, पश्चिमनत हो, तो केवल सूर्य से लग्न सा लङ्कोदयों से दशमलग्न सिद्ध होता है ॥ छः· राशियुक्त करके चतुर्थभाव होता है ॥ जैसा इष्ट २।१३ मध्याह्न से नीचे होने से दिनार्ध १६।४२ और इष्ट का अन्तर होवा पुर्वनत १४।२६ तीस से काट कर होवा पूवोन्नत १५।३१ दशमलग्न का इष्टकाल । इस से दशमलग्न साधना (जैसा) सायनसूर्य १।६।५८। ३५ पूर्वोन्नत इष्ट होने से छःराशि युक्त ७।६।५८। ३५ उस के भोग्यभाग २०।१।२५ वृश्चिकोदय से २९९ गुणित ५९८०।२९९।७४७५ नीचे साठ से उपर तीस से भाग देकर लब्ध १९९।१७।२।३५ भोग्यकाल इष्ट.

१५। ३१ पलात्मक ६३१ से काट कर रहा ७३१। १२। ५६। २५ उस से धन्योदय ३२३ मकरोदय ३२३ काट के शेष ८५। १२। ५६। २५ से कुम्भोदय २६६ हीन न होने से अशुद्धोदय होवा। शेष तीस से गुणित २५५० नीचले अङ्क १२ युक्त को २५६२ अशुद्धोदय २६६ से लब्ध अंश ८ शेष १७० साठ से गुणित १०२०० नीचले अङ्क ५६ युक्त १०२५६ को अशुद्ध २६६ से लब्ध कला ३४ शेष ६०। से विकला १६ अशुद्ध कुम्भ १० राशियुक्त अंशादि १०। ८। ३४। १६ अयनांश हीन होघा दशमलग्न ६। १४। ५६। १६ छः राशियुक्त ३। १४। ५६। १६ होवा चतुर्थभाव॥ (शेष भाव साधन) लग्नोनसुखषष्ठांशं व्येकं दद्यात्तयोः पृथक्। सषड्भं च भवेद्भावमण्डलं सन्धिसंयुतम्॥ लग्न हीन चतुर्थ भाव का षष्ठांश

और एक से काटा हुवा षष्ठांश व्येकसंज्ञक, यह दो अन्तर अलग २ उन लग्न व चतुर्थभावों को देकर लग्न से षष्ठ तक

१		२	.	३		४		५		६	
१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	६	६
९	२०	१	१२	२३	४	१४	४	२३	१२	१	२०
५८	४८	३८	२८	१९	९	५९	९	१९	२८	३८	४८
३५	४२	४९	५७	४	११	१९	११	४	५७	४९	४२
७		८		९		१०		११		१२	
७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	०	०
९	२०	१	१२	२३	४	१४	४	२३	१२	१	२०
५८	४८	३८	२८	१९	९	५९	९	१९	२८	३८	४८
३५	४२	४९	५७	४	११	१९	११	४	५७	४९	४२

सन्धियुक्त छःभाव होते हैं। और वह सब छःराशियुक्त कर के, सप्तम से द्वादश तक सन्धियुक्त और छःभाव होते हैं। (जैसा) कल्पित लग्न १।६। ५८।।३५ से चतुर्थभाव ३।१४।५६।१६ ऊनित २। ५।०४४ का षष्ठांश ०।१०।५०।७।२० लग्न से, एकोनषष्ठांश ०।१६।६।५२।४० चतुर्थभाव से देकर सन्धियुक्त छःभाव होते हैं। और वह सब छःराशियुक्त कर के और छःभाव सन्धियुक्त बनते हैं। चक्र से स्पष्ट देखना ॥

(मुन्था) सैका गताब्दा विहृताः पतङ्गैस्तच्छेषभावी च मुथी जनोर्भात् ॥ जैसा गताब्द १ एक मिला कर २ बाराह से भाग देकर शेष २ जन्मलग्न धनु से आया दूसरा मकर में मुन्था लग्न लेखना ॥

१ (वर्षचक्र) वृलंबुके, वृंभौरा, धंचं, मंजीमुं, मीशुश, मेसू।

वर्ष पर हद्दाचक्रं (होरा)

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तुं	वृं	धं	मं	कुं	मी
मी ६	वृ ८	मि ६	वृं ७	मी ६	मि ७	मं ६	वृं ७	मी १२	मि ७	मि ७	वृ १२
वृ १२	मि १४	वृ १२	वृ १३	वृ ११	वृ १७	मि १४	वृ ११	वृ १७	मी १४	वृ १३	मी १६
मि २०	धं २२	धं १७	मि १९	मं १८	मी २१	मी २१	मि १९	मि २१	वृ २२	मी २०	मि १९
वृं २५	मं २७	वृं २४	मी २६	मि १४	वृं २८	वृ २८	मी २४	वृं २६	मं २६	वृं २५	वृं २८
मं ३०	वृं ३०	मं ३०	मं ३०	वृं ३०	मं ३०	वृं ३०	मं ३०	मं ३०	वृं ३०	मं ३०	मं ३०

२ (भावचक्र) १सूबु, २के, ७भौ, ८चं०रा, १०जी, ११श०, १२शु
३ (हद्दाचक्र) वृलंभौबुश, मिसूजी, धंचं, मेशु, ॥
४ (त्रैराशिकचक्र) मिलंचंशु, सिंसू, वृंभौशु, धंजी, मंश, ।
५ (मुसुल्लचक्र) कुंलंजीशुरा, वृचं, सिंसूशके, तुंभौ, मंबु, ॥
६ (जन्मचक्र) धंलंजीरा, कुंश, मेसूभौशु, वृबु, मिके, कचं, ।

(हर्षबलचक्र) नन्दात्रिषट्लग्नभवर्क्षपुत्रेऽव्ययौ इनाद्धर्षबलं स्वभोच्चम् । त्रिभं त्रिभं लग्नभतः क्रमेण स्त्रीणां नृणां रात्रिदिनेषु तेषु ॥ कुण्डली में सूर्यादिग्रहों को ९, ३, ६, १, ११, ५, १२ इन स्थानों में प्रथम ५ स्थानबल है । अपने राशियों में या उच्च में हो, तो दूसरा स्वभोच्चबल है । लग्न से तीन ३ घरों में क्रम से स्त्रीग्रह, और पुंग्रहों, याने, १, २, ३, ७, ८, ९, में 'चं, बु, शु, श' और ४, ५, ६, १०, ११, १२, में 'सू, भौ, जी' को, तीसरा स्त्रीपुंबल है ।

और रात्रि में वर्ष हो, तो स्त्रीग्रहों, दिन में हो, तो पुंग्रहों को चौथमा रात्रिबल, या दिनबल है। इन चार बलों के योग को हर्षबल कहते हैं ॥ चक्र में देखना।

(त्रिपताकाचक्र) रेखात्रयं तिर्यगऽथोर्ध्वसंस्थमऽन्योन्यविद्धाग्रगमेककोणात्। स्मृतं बुधैस्तत्त्रिपताकचक्रं प्राङ्मध्यरेखाग्रगवर्षलग्नात् ॥ १ ॥ न्यसेद्भचक्रं किल तत्र सैकं याताऽब्दसंख्यं विभजेन्नभोगैः। शेषोन्मिते जन्मगचन्द्रराशेस्तुल्ये च राशौ विलिखेच्छशाङ्कम् ॥ २ ॥ परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये स्थाने स्वराशेः खचरास्तु लेख्याः। स्वर्भानुविद्धे हिमगौ तु कष्टं तापोऽर्कविद्धे रुगिनाऽन्यविद्धे ॥ ३ ॥ महीजविद्धे तु शरीरपीडा शुभैश्च विद्धे जयसौख्यलाभाः। शुभा-

ऽशुभऽयोमगवीर्यतोऽत्र फलं च वर्षस्य वदेत्सुधीमान्
॥ ४ ॥ उपर तीन, टीडे तीन, रेखा रख के, एक-
कोण से आपस में मिले हुई नुकवाले चक्र को त्रिप-
ताकाचक्र कहते हैं। उस के उपर के मध्यरेखा से
वर्षलग्न लिखना ॥ फिर सैक गताब्द को नौ ९ से भाग देकर
शेष २ के समान जन्मलग्नराशि कर्कट से दो अन्तर
से कन्या में चन्द्र लिखना। और चार से भी दो ही
शेष रहता। इस लिये शेषग्रह भी जन्मचक्र के राशिया
से दोनों के अन्तर पर लिखना ॥ (फल यह है) चन्द्र
राहु से विद्ध हो, तो कष्ट, सूर्य से ताप, शनि से
रोग, भौम से देहपीडा, और शुभग्रहों से विद्ध हो,
तो जय, सुख और लाभ देता है ॥ (त्रिपताकाचक्र)
वृलं, मिसूभौशु, कबु, सिंके, कंचं, कुंजीरा, मेश ॥
(फलं) चन्द्र शनि से विद्ध होने के कारण रोगकी

पीडा होवे ॥ (वर्षदृष्टि) तृतीयैकादशे पादं दलं व्योमं
चतुर्थयोः । त्रिकोणे व्यङ्घ्रिः सप्तके पूर्णं पश्यति खेचरः॥
ग्रह ३ । ११ घर पर पाददृष्टि से ४ । १० पर आध दृष्टि से
५ । ६ पर पादोनदृष्टि और १ । ७ घर पर पूर्णदृष्टि से देखता
है ॥ (वर्ष पर नैसर्गिकशत्रुमित्रचक्रं) मित्राण्याऽर्कशशाङ्क-
शक्रसचिवा भौमाऽर्किदेवार्चिता जीवाऽर्कक्षणदाधिपाः
शनिसितौ चन्द्रार्कभूनन्दनाः । सौम्याऽदित्यभवौ शशा-
ङ्कजसितौ मन्दज्ञशुक्रा इमे सूर्यात्स्यू रिपुवस्तु ताजिकमते
शेषा बुधैश्चोदिताः ॥ (वर्ष पर तात्कालिकशत्रुमित्रचक्रं)
मित्रं तृतीयपञ्चमनवमैकादशगतोऽपि यो यस्य । धनरि-
पुमृत्युरिष्फेषु समो ग्रहः स्यादिति ज्ञेयम् । शत्रुस्तथैक-
चक्रे तुर्ये जायास्थाने तथा दशमे ॥ दोनों चक्रों में जो ग्रह

मित्र हो, वह 'अधिमित्र' दोनों में शत्रु 'अधिशत्रु' मित्र व शत्रु 'सम' मित्र व सम 'मित्र' सम व शत्रु 'शत्रुसंज्ञक' है ॥ यह पञ्चधा मैत्री चक्र से स्फुट है ॥ (पञ्चवर्गी) वीर्याऽज्ञानाद्दूषनाथं सिद्धं कर्तुं न शक्यते । पञ्चवर्गीमऽतो वक्ष्ये खेटानां वीर्यव्यक्तये ॥ तुङ्गं स्वगृहं हद्दां त्रैराशिकं मुसुंल्ल-श्चेति । पञ्च गृहाधिकारान्विनाऽधिकारं ग्रहो न बली ॥ (इन का बल प्रथम उच्च का लाना) नीचोनितो गृहः षड्भाऽधिको मण्डलशोधितः । शेषस्यांशा नन्दभक्ता बलमुच्चस्य जायते ॥ (जैसा) सूर्यस्पष्ट ० । १६ । २३ । २३ अपनेनीच ६ १० से रहित ६ । ६ । २३ । ३३ छःराशियों से जादा होने से बाराह १२ से काट कर होवा ५ । २३ । ३६ । ३७

इस के अंशों १७३ । ३६ । ३७ को, नौ ९ से भाग देकर होवा, कलादिक १९ । १७ सूर्य का उच्चबल। इसी रीति से और ग्रहों का भी करना ॥(और चक्रोंका बल)॥
त्रिंशत्स्वभे विंशतिरात्मतुङ्गे तिथिः सुहृद्भे दशकं त्रिकोणे । नवांशके पञ्च भवत्यथाऽशीतिरेवं युगांशाश्च विशोपकाः स्युः ॥ उक्ताः कलाः स्वर्च्चगते ग्रहेन्द्रे प्रत्येकवर्गे त्वधिमित्रगेहे । स्वाङ्घ्र्यंशहीना हितगेहसंस्थे स्वार्धोनिताः स्वाङ्घ्रिलवत्रयोनाः । समर्च्चगे शत्रुगृहोपयाते निजाष्टमांशप्रमितं बलं स्यात् । अधिद्विषद्भोपगते स्वकीये नृपांशलिप्ता इति वर्गवीर्यम् ॥ यथागतं तुङ्गबलं तु तेन समन्वितं वर्गबलं बलं स्यात् ॥ बाणैर्नष्टबलो ग्रहो दशमितैर्मध्यो विशोपै-

स्ततः । श्रेष्ठो घस्रमितैः सुखार्थजनकः प्रोक्तः खेंद-
स्रैर्भवेत् ॥ (त्रैराशिपतिचक्र) त्रैराशिपाः सूर्यसितौ-
ऽर्किशुक्रौ दिवा निशीज्येन्दुबुधक्ष्माजाः । मेषाच्चतुर्णां
हरिभाद्विलोमं नित्यं परेष्वाऽर्किकुजेज्यचन्द्राः ॥
(पञ्चाधिकारियोंमें वर्षेश्वर का विचार) जन्मलग्नपति-
रित्थहाधिपोऽहर्निशं रविशशाङ्कराशिपः । स्युस्त्रिरा-
शिपतिरब्दलग्नपः पञ्च हायनपतित्वयोग्यकाः ॥ लग्नं
प्रपश्यन्नऽधिवीर्य एषां वर्षेश्वरः स्यादथ दृष्ट्यभावे ।
वीर्याधिकोनाब्दपतिर्विवीर्यो लग्नं प्रपश्यन्नपि हायनेशः ॥
वीर्ये समानेऽपि तनुं प्रपश्यन्दृष्ट्याधिको वर्षपतिर्वि-
धेयः । दृष्टौ समायां वहुवोऽधिकारा यस्येषु वर्ग्यो
शरदीश्वरः स्यात् ॥ जन्मलग्नस्वामी, मुन्थेश्वर, दिन

में वर्षप्रवेश हो, तो सूर्याक्रान्तराशि का स्वामी 'दिनेश्वर' रात में हो, तो चन्द्राक्रान्तराशि का स्वामी 'रात्रीश्वर' और 'वर्षलग्नेश्वर' यह पांछ वर्षेश्वर होने के अधिकारी हैं। इन पाछों में से जो लग्न को देखता हुवा पञ्चवर्गी में बलिष्ठ भी हो, वह वर्षेश्वर है। क्योंकि, दृष्टि न होने पर जो बलिष्ठ हो, सो रखना। तथा लग्न को देखता होवा भी बलहीन वर्षेश्वर न होता है। और दो ग्रह समबल होने वालियों में से बहुत अधिकारी वर्षेश्वर होता है ॥(पञ्चाधिकारीं)

१ जन्मपः जीवः	३ दिनपः भौमः	५ वर्षपः शुक्रः
२ मुन्थापः शनिः	४ त्रैराशिपः शुक्रः	६ वर्षेश्वरः भौमः

(मास लाना) मासाऽब्दयोः सूर्ययोर्यदऽन्तरात्सूर्यभुक्तिहृत्। फलं संस्कृत्य तन्मिश्रे मासारम्भः स्फुटो भवेत् ॥ नक्षत्रपत्री पर माससूर्यस्पष्ट १।१६।५३।

२६ । वर्षसूर्यस्पष्ट ० । १६ । २३ । २३ स्वेष्टमासानुरूप एकराशियुक्त १ । १६ । २३ । २३ का अन्तर ० । ० । ३० । ६ को मासार्कगति ५७ । १५ से भाग देकर प्राप्त फल ३१ । १८ वर्षसूर्य कम होने से मिश्र को ४७ । ३४ काट के होआ । मासप्रवेश का इष्ट १६ । १६ (अब लिखने की रीति) सं ५०१३ ज्येष्टवदि षष्ठ्यां चन्द्रे इष्टं १६ । १६ सिंहोदये श्रीमतो हरीश्वरस्य द्वितीयमासप्रवेशः शुभदोऽस्तु ॥ (मासकुण्डली) सिलं, वृंभौरा, मंचंजीमु, मीश, मेबुशु, वृसूके ॥ "इसी रीति से सब मास बनाना" ॥ (सहमलाना) शोध्यर्क्षशुद्धाश्रयमन्तराले लग्नं न चेत्सैकभमेतदुक्तम् ॥ "सहमों पर यह नियम है" कि काटनीयग्रह और काटकग्रहों के राशियों में जब लग्नराशि न आवे, तो सहमस्पष्ट को सैकराशि करना (जैसा) पुण्यसहम

पर । काटकरवि ० । १६ । २३ । २३ काटनीयचन्द्र ८ । ५ । २२ । १७ से काट के होवा ७ । १८ । ५८ । ५४ लग्न १ । ३ । २७ । २० से युक्त ८ । २२ । २६ । १४ अब विचारना, कि सूर्यराशिमेष से, चन्द्रराशिधनु तक बीच में लग्नराशिवृष आये है, इस वास्ते एकराशि न मिलाकर होवा दिनेष्टवाले का पुण्यसहमलग्न ॥ (रात्रि हो) तो उलटा करना, जैसा) काटक चन्द्र ८ । ५ । २२ । १७ काटनीयसूर्य से ० । १६ । २३ । २३ काट कर ३ । ११ । १ । ६ लग्न से १ । ३ । २७ । २० युक्त ५ । १३ । २८ । २६ चन्द्रराशि से सूर्यराशि तक लग्नराशि न आने के कारण, एकराशिमेलाकर होवा, रात्रि में पुण्यसह-मलग्न ६ । १४ । ३७ । २६ ऐसी रीति से और सहम भी बनाना ॥ (और सहमों के नाम) पुण्यं, रवि-

श्चन्द्रात् शोध्यः । रात्रौ विलोमं, लग्नं क्षेप्यम् ॥
[२]मित्रं, पुण्यसहमं गुरुसहमाच्छोध्यं, रात्रौवि, लंक्षे ॥ गुरुः[३],
चन्द्रो रवेः, रात्रि, लंक्षेप्यं ॥ विद्यां[४], चन्द्रो रवेः,
रात्रौवि, लंक्षे ॥ यशः[५], पुण्यं जीवात्, रावि, लं ॥
माहात्म्यं[६], भौमः पुण्यात्, रात्रि, लं ॥ आशा[७],
शुक्रः शनेः, रात्रि, लंक्षेप्यं ॥ सामर्थ्यं[८], लग्नपो भौ-
मात्, रात्रि, लंक्षेप्यं ॥ राज्यं[९], रविः शनेः, रात्रौवि,
लंक्षे ॥ पितृं[१०], राज्यवत् । मातृं[११], शुक्रश्चन्द्रात्,
रात्रि, लंक्षे ॥ भ्रातृं[१२], शनिः जीवात्, रावि, लंक्षे ॥
पुत्रं[१३], चन्द्रः जीवात्, रात्रौ च, लंक्षे ॥ [१४]जीवितं,
जीवः शनेः, रात्रि, लंक्षे ॥ [१५]कर्म, बुधः भौमात्,
रात्रि, लं ॥ रोगं[१६], चन्द्रो लग्नात्, रात्रौ च, लं ॥

प्रसव[१७]:, बुधो जीवात्, रावि, लंक्षे ॥ शास्त्र[१८], शनिर्जीवात्, रात्रौ शनिर्बुधात्, लंक्षे ॥ मृत्यु[१९], चन्द्रोऽष्टमभावात्, रात्रौ च, ॥ अर्थे[२०], धनपो द्वितीयभावात्, रात्रौ च, लंक्षे ॥ कार्ये[२१], रविः शनेः, रविराशिपतिः क्षेप्यः। रात्रौ चन्द्रः शनेः, चन्द्रराशिपःक्षेप्यः। विवाहे[२२], शनिः शुक्रात्, रात्रौ च, लग्नं क्षेप्यं ॥ चन्द्रः शनेः, रात्रौ च, षष्ठभावः क्षेप्यः ॥ बलं[२४], पुण्यसहमंजीवात्, रावि, लंक्षे ॥ रिपु[२५], शनिभौमात्, रावि, लंक्षे ॥ उपाय[२६], जीवः शनेः, रावि, लंक्षे॥ शौर्य[२७], पुण्यं भौमात्, रावि लंक्षे ॥ कन्या[२८], चन्द्रो भृगोः, रावि, लंक्षे॥ जाया[२९], शुक्रः सप्तमेशाद्विशोध्यः रात्रौ विलोमं, सप्तमभावः क्षेप्यः ॥

इति सहमानि ॥

(मुद्दादशा) जन्मर्क्षसंख्यासहिता गताब्दा द्विरूनिता नंन्दहृते तु शेषात् । सूचंभौराजीशबुकेशुखेटगा मुद्दा दशा स्यात्फलदा स्वपाके ॥ जन्मनक्षत्रसंख्या युक्त दोहीन गताब्द को नौ से भाग देकर जो शेष बचे क्रम से वर्ष पर वह मुद्दादशेश्वर होता है ॥ (जैसा) गताब्द १ जन्मर्क्ष अश्लेष की संख्या ९ युक्त १० दो२ हीन ८ को नौ ९ से शेष भी यही रहा । क्रम से केतुकी प्रथम मुद्दादशा है ॥

(मुद्दादशा की दिन) स्युर्दशादिवसास्तेषां धृतिस्त्रिंशंच्च मूर्छनाः । वेदेषवो नागकृता मुन्यक्षाः क्षितिसायकाः ॥ मूर्छनाः षष्टिरेताभ्यो द्वादशांशेन मासजाः ॥

(मुद्दान्तर्दशा) वेदा नागाः शराः सप्त दिग्रसाऽङ्कु-

शरांशर्सा: । सूर्यादीनां च गुणकास्तैर्निघ्ना स्वदशास्वपि ॥ षष्ट्याप्ताऽन्तर्दशा तस्य जायतेऽतिपरिस्फुटा । ग्रह की मुद्दादशा के दिन अपने २ गुणक से गुण कर साठ से भाग देकर दिनादिक अन्तर्दशा सूर्यादि ग्रहों के क्रम से हुगी । चक्र में स्फुट है ॥

(मुन्था) स्वजन्मलग्नं रवितष्टयातशरद्युतं सा भमुखेत्थिहा स्यात् ॥ बाराह से गताब्द १, को भाग देकर शेष १ जन्मलग्न ८ । २७ । १३ । ८ को युक्त कर के हुवा राशि आदि मुन्थालग्न ॥ (मुन्थाफल योगों से) मुथहाधिपतिः षष्ठोऽष्टमगो वा द्वादशश्चतुर्थश्च । अस्तमितो वक्री वा क्रूरदृशा वीक्षितो युतः क्रूरैः ॥ क्रूराच्चतुर्थसप्तमसंस्थः क्रूरेणैव विजितः । भव्यो न भवति वर्षे चाष्टमभवनाधिपेन युग्दृष्टः ॥

क्रूरदृशा मरणसमं कष्टं योगद्वयेन मरणकरः ॥

जब मुन्थेश अष्टमभावेश्वर के युक्त वा क्रूरदृष्टि से देखा हुआ हो, तब इस योग पर मरणतुल्य दुःख देता है ॥ जब मुन्थेश षष्ठाष्टमगतत्व आदि योग युक्त भी होवे, तब दोनों योगों के होने पर मारेगा ॥ याने मुन्थेशदशा में अष्टमाधाशीन्तरदशा के समय पर मृत्यु कहना चाहिये ॥ (और भी) मुथहाधिपतिः षष्ठाऽष्टमाऽस्ताऽन्त्यगतोऽस्तगः । वक्रो वा निजधातूत्थव्याधिं दद्याद्दशासु च ॥ मुथहाधिपतिः केन्द्रे स्वोच्चमित्रस्वराशिगः । करोति विविधाऽर्थाप्तिं महत्सौख्यं विशेषतः ॥ दशमे चाये पुण्ये स्वामित्वकरी नृणां भवेन्मुथहा । लग्नाद्द्वितीयपञ्चमसहजे चोपक्रमाद्धनं दत्ते ॥ लग्नात्षष्ठचतुर्थद्वादशसप्तमाष्टगा नेष्टा ॥

(अब भावों का फल)

१आरोग्यं कायपुष्टिं च मनःशान्तिं नृपात्सुखम् । कीर्तिं शत्रुक्षयं कुर्यात्तनुस्था मुथहा नृणाम् । मिष्टा२शनं धनप्राप्तिं स्वेष्टलाभं रिपुक्षयम् । स्ववर्गसुखदं कुर्याद्धनस्था मुथहा सदा ॥ म३होद्यमी कार्यसिद्धिप्रापकोऽतिसुखास्पदः । सर्वोपकारी च भवेत्तृतीये मुथहा यदा ॥ रोग४युक्तं कृशदेहं निरुद्यमयुतं नरम् । गुप्तभयं शत्रुभीतं कुर्यान्मुन्था चतुर्थगा ॥ सद्बु५द्धिं धर्मवृद्धिं च यशः पुत्रादिभाजनम् । राजमानास्पदं दद्यान्नरं मुन्था सुतस्थिता ॥ रि६पुचौराऽमयग्रस्तं कार्यहीनं प्रमादिनम् । व्यसनाग्रस्तहृदयं कुर्यान्मुन्था रिपुस्थिता ॥ रोग७पीडां मनोमोहं कलत्रादिभयं व्यथाम् । करोति धनधीनाशं

मुन्था सप्तमगा नृणाम् ॥ दुष्टबुद्धिं कान्तिनाशं शत्रुभीतिं धनक्षयम् । चौरादिदुष्टभीतिं च मुन्था च निधने स्थिता ॥ भाग्योदयं धर्मवृद्धिं नृपमानं धनागमम् । स्ववर्गसन्तोषसुखं दद्यान्मुन्था च भाग्यगा ॥ स्वजनधर्मभाग्यार्थजन्यं सौख्यं सुचित्तताम् । यशःप्रवृद्धिं तनुते कर्मस्था मुथहा नृणाम् ॥ मनोरथाप्तिं स्वजनैः प्रीतिं राजकुलात्सुखम् । विशेषतोऽर्थलाभं वै कुरुते लाभगेत्थिहा ॥ विविधां रोगवृद्धिं च कार्पण्यं स्वजनैः सह । विवादं द्रव्यनाशं च दद्यान्मुन्था व्ययस्थिता ॥ (वर्षेश्वर सूर्य का फल) सूर्येऽब्दपे बालिनि राज्यसुखात्मजार्थलाभः कुलोचितभवः परिवारसौख्यम् । पुष्टिं यशोगृहसुखं विविधा प्रतिष्ठा शत्रुर्विनश्यति फलं निज-

खेटयुक्त्या ॥ (अर्थ) वर्षेश जन्मकुण्डली में सत्स्थान में शुभग्रह दृष्ट हो, तो शुभफल सम्पूर्ण देवे। अन्यथा होने पर फल भी विपरीत होवे, और मिश्र होने पर फल भी मिश्र होवे। मध्ये[2] रवौ फलमिदं निखिलं तु मध्यं स्वल्पं सुखं स्वजनतोपि विवादमाहुः। स्थानच्युतिर्न च सुखकृशतापि देहे भीतिर्नृपान्मुथाशिलो न शुभेन चेत्स्यात् ॥ सूर्ये[3] बलेन रहितेऽब्दपतौ विदेशे यानं धनक्षयशुचोऽरिभयं च दत्ते। लोकापवादभयमुग्ररुजोऽतिदुःखं पित्रादिभिश्च न सुखं सुतमित्रभीतिः ॥ (चन्द्र का) वीर्यान्विते[1] शशिनि वित्तकलत्रपुत्रमित्रालयादिविविधं सुखमाहुरार्याः। स्रग्गन्धमौक्तिकदुग्गूलसुखानुभूतिर्लाभः कुलोचितपदस्य नृपैः

सखिलम् ॥ वर्षाधिपे शशिनि मध्यबले फलानि मध्यान्यमूनि रिपुता सुतमित्रवर्गे । स्थानान्तरे गतिरथो कृशता शरीरे श्लेष्मोद्भवश्च यदि पापकृते सराफः ॥ नष्टेऽब्दपे शशिनि शीतकफादिरोगश्चौरादिभिः स्वजनविग्रहमप्युशन्ति । दूरे गतिः सुतकलत्रसुखात्ययश्च स्यान्मृत्युतुल्यमऽतिहीनबले शशाङ्के ॥ (भौमका) भौमेऽब्दपे बलिनि कीर्तिजयाऽरिनाशः सेनाधिपत्वरणनायकता प्रतिष्ठा । लाभः कुलोचितधनस्य नमस्यताऽपि लोकेषु मित्रसुतवित्तकलत्रसौख्यम् ॥ मध्येऽब्दपेऽवनिसुते रुधिरस्रुतिश्च कोपोऽधिको विविधशस्त्रहतिक्षतानि । स्वामित्वमाप्तगणतो

चलनैरत्वं मध्यं सुखं निखिलमुक्तफलं विचिन्त्यम् ॥

हीनेऽब्दपेऽसृजि भयं रिपुतस्करादेर्लोकापवादभयमात्मधिया विनाशः । कार्यस्य विघ्नगऽतिरोगभयं विदेशयानं त्वयोऽपनयतो गुरुदृष्ट्यऽभावे ॥ (बुध का) वर्षाधिपे बलिनि चन्द्रसुतेऽतिसौख्यं सेवाधनं लिखनतः पठनादिना वा । स्त्रीमित्रसौख्यमऽतुलं सुतत‌श्च नूनं वाणिज्यतो धनसमागमनं विलासः ॥ मध्यश्च सोमतनयो निजवाक्यदोषात्सर्वार्थहानिमशुभं प्रकरोत्यऽनर्थम् । स्त्रीपुत्रमित्रकलहं सुखमपि चाल्पं वैरोदयं नृपजनात्स्वजनाच्च तद्वत् ॥ नष्टे बुधे नृपभयोऽनृतसाक्षिता च क्लेशोदयः स्वजनतोऽर्थलयो विवादः । चौराद्भयं हृदि गलाऽमयकृत्स्वनेत्रपीडा भवेन्निखिलमन्यग्रहैश्च दृष्टे ॥ (जीव का) जीवेऽब्दपे बलयुते

परिवारसौख्यं धर्मो गुणग्रहिलता धनकीर्तिपुत्रैः । विश्वासिता जगति सन्मतिविक्रमाप्तिर्लाभो निधेर्नृपतिगौरवमऽप्यऽरिघ्नम् ॥ २ नाकेश्वरस्य सचिवे खलु मध्यवीर्ये लोकैर्विरोधमऽशुभं प्रकरोति भूपात् । वैरोदयं स्वजनतश्च परैर्विवादं कुर्यात्कुशलमऽतिचौरभयं सदाऽसौ ॥ ३ निन्द्ये गुरौ खलु भवेन्नृपतोऽर्थनाशो धर्माऽर्थहान्यऽसुखबन्धुविरोधपीडा । पादाऽक्षिगुल्फजठरे जघने च नृणां वाताऽर्तिकृत्परिभवं तनुसंक्षयं च ॥ (शुक्र का) १ शुक्रेऽब्दपे बलिनि नीरुजता विलासः सद्वस्त्ररत्नमधुराशनभोगतोषाः । क्षेमप्रतापविजयो वनिताविलासो हास्यं नृपाश्रयवशेन धनं सुखं च ॥ २ मध्ये नृपात्स्वजनतस्त्वरितो विरोधं श्लेष्मा-

ऽर्तिकृच्च सुतदारभयं च कष्टम् । कार्यार्थहानिमऽपि मोहरुजोदयं च कुर्यान्न सौख्यमिह स्वीयदशाप्रवेशे ॥ निन्द्ये सितेऽखिलजनात्कलहो नितान्तं स्याद्वैरिता नृपलनादऽसुखं च कष्टम् । सौख्यार्थहानिरतिशोक-भयं विवादो दग्धे स्वपाकविषयेऽमितसंचयं स्यात् ॥ (शनि का) मन्देऽब्दपे बलिनि नूतनभूमित्रेशमत्ते-त्राप्तिरऽर्थनिचयो यवनावनीशात् । आरामनिर्मिति-जलाशयतश्च सौख्यं पुष्टिः कुलोचितपदाप्तिगुणाश्च तद्वत् ॥ मध्यः शनिः स्वजनराजजनाद्विरोधं वाता-र्तिकृज्जठरगुल्फगले च नेत्रे । दारिद्र्यदुःखपरिपीडन-मऽत्र कुर्याद्वैराजमऽर्थपरिहानिसुहृद्विरोधम् ॥ निन्द्ये तु सर्वमऽधमं तु सुहृद्विपत्तिः कष्टं क्रियाविफलता-

ऽनिलरुग्विकाराः । कार्यार्थहानिरऽथपुत्रसुहृद्विपत्ति
दग्धेऽर्कजे भवति दंष्ट्रिभयं च मृत्युः ॥ (विशेष है)
सद्मोच्चगेषु परिपूर्णफलं खगेषु हृद्दात्रिभागकनवांशगतेषु
मध्यम् । नीचारिवेश्मसहितेषु च दग्धवीर्यमऽस्तादि-
गेषु खलु नष्टफलं समं तत् ॥ क्रूराक्रान्तः क्रूरयुतः
क्रूरदृष्टश्च यो ग्रहः । विरश्मितां प्रपन्नश्च स विनष्टो
बुधैः स्मृतः ॥

मुद्दादशेशों की अवधि वर्षादिक का चक्र

सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	१	१	१	१	०	२
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

वर्ष पर स्फुट मुद्दादशा का चक्र

	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	२	०	१	०	१	१	१	१
	२१	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१
१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४
०	१	३	३	४	५	७	८	१०	०
१७	८	८	२६	२६	१७	११	२६	२६	१७

(ग्रहों का फल लिखने की रीति) संवत् १३ मेषांशाः १७ केतुदशाप्रवेशः मास० दिन २१ फलम् । वर्षकुण्डली में लग्नस्थित केतु है उस का श्लोक "देहे मरुत्कृता पीडा" इह लिखना ॥ ऐसा ही और ग्रहों को भी लिखना ॥ (ग्रहों का भावफल, प्रथम सूर्य का)

बहुचिन्ता तथोद्वेगं शिरोऽक्षिमुखपीडनम् । बहुरोषोऽङ्गनापीडा वर्षादौ लग्नगे रवौ ॥ रिपुराजाऽनलैश्चौरैर्विवादं त्रिभवव्ययम् । कुटुम्बकलहं वर्षे द्वितीयो भास्करो यदि ॥ राजमानं तथाऽऽरोग्यं धनलाभं रिपुक्षयम् । सर्वोपक्रमसिद्धिश्च वर्षादौ तृतीये रवौ ॥ इष्टस्वजनविद्वेषं भयं भूपालसम्भवम् । चतुष्पदमनुष्याणां भयं सूर्ये चतुर्थगे ॥ पुत्ररुक्कामिनीकष्टं विवादं चातिमूढता । द्रव्यनाशः स्वेष्टदुःखं वर्षादौ पञ्चमे रवौ ॥ अन्नागमं तथैश्वर्यं राजमानं रिपुक्षयम् । सौख्यं कलत्रपुत्रादौ वर्षादौ षष्ठगे रवौ ॥ वस्तिचक्षुःशिरोरोगैः स्त्रीपीडा नगराटनम् । चित्तोद्वेगं वैमनस्यं वर्षादौ सप्तमे रवौ ॥ चक्षूरुग्धनहानिः

स्याद्बहुपीडा कलेवरे । पित्तजा विषभूपालव्यालजाऽ-
व्देऽष्टमे रवौ ॥ [९]भार्यापुत्रविवादं च मतिं धर्मक्रिया-
दिषु । चित्तोद्वेगाकुलं नित्यं वर्षादौ नवमे रवौ ॥
[१०]राजमानादिजं सौख्यं विद्याप्राप्तेः सुखं धनम् ।
प्रस्थानं वंशविस्तारं वर्षादौ दशमे रवौ ॥ [११]वाजिष्ट-
षादिद्रव्याप्तिः प्रमोदः स्वेष्टवर्गतः । नृपप्रसादमारोग्यं
वर्षादौ लाभगे रवौ ॥ [१२]दृष्टिरुग्द्रव्यहानिश्च विद्वेषो
बन्धुवर्गतः । देहे पित्तोद्भवा पीडा वर्षादौ व्ययगे
रवौ ॥ (चन्द्र का) [१]वेदनाऽक्षिविकारौ च कासश्वा-
सादिपीडनम् । देहे कफोद्भवा पीडा वर्षादौ लग्नगे
विधौ ॥ [२]इष्टस्थानगतं सौख्यं धनाप्तिः श्वेतवस्तुतः ।
शरीरे परमारोग्यं वर्षादौ द्वितीये विधौ ॥ [३]सुखं

लाभं जयं पुंसां धनागमं तु विक्रमात् । धर्मे बुद्धि-
र्भवेत्पुंसां वर्षादौ तृतीये विधौ ॥ सुहृद्बन्धुकलत्रादि-
सौख्यं चातिधनागमम् । गोमहिष्यादिप्राप्तिश्च वर्षादौ
तुर्यगे विधौ ॥ स्त्रीसुखं विजयं मानं राजपूजा धना-
गमम् । सुबुद्धिः सन्ततेः प्राप्तिर्वर्षादौ पञ्चमे विधौ ॥
वातश्लेश्मादिजा पीडा विद्वेषो बान्धवैः सह । नृप-
चौरोद्भवं दुःखं वर्षादौ षष्ठगे विधौ ॥ स्त्रीसुखं
नृपतेर्मानं लाभं ग्रामान्तराद्भवेत् । वाणिज्याज्जलमा-
र्गाच्च वर्षादौ सप्तमे विधौ । अष्टमस्थोऽल्पसन्तोषो द्रव्य-
नाशमुपद्रवः । श्लेष्मचक्षुर्विकारांश्च वर्षादौ कुरुते विधुः ॥
नवमे धर्मलब्धिश्च मनःसन्तोषमेव च । यशोवृद्धिर्नृपा-
न्मानो वर्षादौ चन्द्रमा यदि ॥ द्रव्यागमं शत्रुनाशो

रोगनाशं विशेषतः । प्रतिष्ठा कीर्तिलाभश्च वर्षादौ दशमे विधौ ॥ [11] वस्त्रपुत्रादिकप्राप्तिर्धनं स्वालयसम्भवम् । श्वेतक्रियाणकाल्लाभो वर्षे लाभस्थिते विधौ ॥ [12] द्रव्यक्षयं क्षुधाल्पत्वं नेत्ररुक्कलहं गृहे । वर्षकाले व्ययस्थाने चन्द्रः कुर्यादिदं फलम् ॥ (भौम का) मूर्धवक्त्रादिरोगाश्च कलहं च धनक्षयम् । रक्तपित्तप्रकोपश्च कुरुते लग्नगः कुजः ॥ वह्निचौरनृपादिभ्यो भयं वा विभवव्ययम् । दृशोरुक्कामिनीकष्टं धनस्थे धरणीसुते ॥ [3] नृपमानं धनप्राप्तिर्द्रव्यनाशो निरामयम् । गेहे महोत्सवो नित्यं तृतीये भूमिनन्दने ॥ देशाटनं सकष्टं च हृदि दुःखं सखक्षयम् । कुटुम्बकलहं चैव चतुर्थे भूमिनन्दने॥ पुत्रार्तिः कामिनीकष्टं व्याधिश्चैवोदरे नृणाम्।

दुर्मतिः स्वजनैर्वैरं पञ्चमे भूमिनन्दने ॥ ईष्टस्वजनतः
सौख्यं धनलाभं रिपुक्षयम् । प्रमोदः स्वमतेर्माणां षष्ठस्था-
नगते कुजे ॥ जायाकष्टं तथा हानिः पीडा ह्यात्मन
एव च । देशभ्रंशोद्भवां भीतिं कुर्याद्भौमस्तु सप्तमे ॥
रक्तपित्तप्रकोपश्च महापीडा धनव्ययम् । विपत्तिरिष्टव-
र्गस्य ह्यष्टमस्थे धरासुते ॥ पापलब्धिर्भवेत्पुंसामुद्वेगं विभ-
वव्ययम् । कलहं बन्धुवर्गैश्च नवमे धरणीसुते ॥ तेजोवृद्धि-
र्व्यापारं धनलाभश्च प्रसादं भूमिपालतः । जायापुत्रसुहृत्सौख्यं
स्तथाऽरोग्यं दशमस्थे धरासुते ॥ शत्रुनाशं नृपात्सौख्यं लाभगे
प्रतापो विभवागमः । भूमिनन्दने ॥ दृशोरोगं वपुःपीडा धननाशं नृपाद्भ-
यम् । सुतजायादिजं दुःखं हायने द्वादशे कुजे ॥

(राहु व केतु का) देहे मरुत्कृता पीडा कलहं विभ-व्ययम् । जायापुत्रादिजं कष्टं राहौ (केतौ) वर्षे विलग्नगे॥ [२]धनव्ययमनारोग्यं चिन्ता वस्त्यादिपीडनम् । वक्त्र-लोचनपीडा च राहौ (केतौ) वर्षे धनस्थिते ॥ [३]राजमानं तथैश्वर्यमारोग्यं विभवागमम् । शत्रुक्षयः सुहृत्सौख्यं राहौ (केतौ) वर्षे तृतीयगे ॥ [४]चिन्ता-दुःखं प्रवासश्च विवादः स्वजनैः सह । चतुष्पदः क्षयं यान्ति राहौ (केतौ) वर्षे चतुर्थगे ॥ [५]पुत्रसौख्यं सुतप्राप्तिर्दुर्मतिर्वैरिविग्रहः । नियतं जठरे पीडा राहौ (केतौ) पञ्चमगे सदा ॥ [६]नृपप्रसादमारोग्यं धनलाभो रिपुक्षयम् । कलत्रपुत्रजं सौख्यं राहौ (केतौ) षष्ठे तु हायने ॥ [७]प्रवासः पीडनं चाङ्गे स्त्रीकष्टं पवनो-

स्थरुक् । कटिवस्तौ भवेत्पीडा राहौ (केतौ) जाया-
स्थिते भवेत् ॥ धनव्ययमऽनारोग्यं विद्वेषो बन्धुभिः सह ।
स्त्रीकष्टं च प्रवासं च राहुः (केतुः) कुर्यात्तथाऽष्टमे ॥
विद्वेषश्च वपुःपीडा दैन्यं राजादिपीडनम् । धर्मकार्ये
विलम्बः स्यात् राहौ (केतौ) वर्षे तु धर्मगे ॥
[१०]व्यापाराद्धनहानिश्च भयं भूपालसम्भवम् । मुखे दैन्यं
प्रवासश्च राहौ (केतौ) वर्षे तु कर्मगे ॥ [११]शरीरारोग्य-
मैश्वर्यं स्त्रीसुखं विभवागमः । सङ्कीर्णवर्णतो लाभो
राहु (केतु) र्लाभगतो यदा ॥ [१२]धनव्ययं च कष्टं च
राजपीडा रिपोर्भयम् । जायापीडा भवेन्नित्यं राहौ
(केतौ) वर्षे तु द्वादशे ॥ (जीव का) [१]सौख्यं पुत्र-
कलत्रादेर्वपुरारोग्यसम्मतिः । लाभं सेवासुखं भूपान्मानं

लग्नगते गुरौ ॥ धनलाभं तथारोग्यं प्रमोदो बन्धुवर्गतः । प्रचण्डसदृशैर्भोगैर्देवेज्ये धनगे भवेत् ॥ लाभालाभौ सुखं दुःखं शत्रुमित्रैश्च सङ्गमम् । नृणां स्त्रीपक्षतः सौख्यं सेवायाश्च सुखे गुरौ ॥ जायापुत्रसुहृत्सौख्यं नृपमानं धनागमम् । भूमिवाहनविद्याप्तिश्चतुर्थे हायने गुरौ ॥ सुबुद्धिः सन्ततेः प्राप्तिः सौख्यं लाभो भवेन्नृणाम् । इष्टमित्रकृतं सौख्यं पञ्चमस्थे सुरार्चिते ॥ रिपुवृद्धिमनारोग्यं धननाशं बलक्षयम् । इष्टस्वजनविद्वेषं षष्ठे देवपुरोहिते ॥ वाणिज्याद्व्यवहाराच्च मार्गाच्चैव धनागमम् । स्त्रीसुखं राजसम्मानं सप्तमे सुरमन्त्रिणि ॥ धनव्ययमनारोग्यं जयापुत्रादिपीडनम् । वियोगं च विवादं च ह्यष्टमे देवपूजिते ॥

धनलाभो राजमानं धर्मकार्यं भवेत्सदा। प्राप्नोति वित्तधान्भोगान्देवेज्ये नवमस्थिते ॥ [१]संत्कीर्तिर्भूभृतो मानं धनलाभं महत्सुखम्। गेहे महोत्सवं नित्यं देवेज्ये दशमे यदि ॥ [११]आयुरारोग्यमैश्वर्यं जायापत्यसुहृत्सुखम्। नृणां चतुष्पदप्राप्तिर्लाभस्थाने यदा गुरुः ॥ [१२]स्वजनैर्विग्रहं दुःखं क्षयोत्पत्तिर्धनव्ययः। प्रवासो नृपतेर्भीतिर्देवेज्ये व्ययसंस्थिते ॥ (शनि का) [१]कफमारुतकोपं च शिरोजठरपीडनम्। इष्टद्वेषं वक्त्रपीडा वर्षे लग्नगते शनौ ॥ पीडा [२]वक्त्रे तथा नेत्रे धननाशो नृपाद्भयम्। पुत्रजायादिजं कष्टं द्वितीये रविनन्दने ॥ [३]सर्वदुःखादिमोक्षश्च राजमानं धनागमम्। वर्षकाले यदा सौरिस्तृतीये कुरुते नृणाम् ॥ [४]मातृपक्षैर्भवेत्कष्टं प्रवासं च

धनक्षयम् । असन्तोषो राजपीडा चतुर्थे रविनन्दने ॥ जायापत्यसुहृत्कष्टं दुष्टबुद्धिर्धनक्षयम् । उदरे वातपीडा च पञ्चमे रविनन्दने ॥ देहसौख्यं देहवृद्धिः प्रसादो भूमिपालतः । स्त्रीपुत्रजनितं सौख्यं वर्षे षष्टगते शनौ ॥ सततं गमने प्रीतिः सुहृत्कष्टं धनक्षयम् । प्रवासः शत्रुतो भीतिः सप्तमे सूर्यनन्दने ॥ रोगपीडा महाव्याधिः पुत्रजायादिपीडनम् । व्यसनं द्रव्यहानिश्च हायनेऽष्टमगे शनौ ॥ जायापुत्रसुहृत्कष्टं धननाशं नृपाद्भयम् । दुर्बुद्धिः पापबुद्धिश्च नवमे भास्करात्मजे ॥ व्यापाराद्धनहानिश्च भयं भूपालसम्भवम् । मुखे दैन्यं प्रवासश्च दशमे रविनन्दने ॥ द्रव्यागमं तथैश्वर्यमारोग्यं योषितां सुखम् । शूरस्वाम्याश्रितो लाभो वर्षे

लाभगते शनौ ॥ [12]पदान्तिहृदये पीडा नृविनाशं नृपा-
द्भयम् । कलहं बन्धुवर्गादौ कुर्यान्मन्दो व्ययस्थितः ॥
(बुध का) [1]देहे सौख्यं धियो वृद्धिर्नृपमानं धना-
गमम् । तेजोधैर्यातिवृद्धिश्च वर्षे सौम्ये विलग्नगे ॥
[2]शरीरे नीरुजं नित्यं द्रव्यलाभो नृणां भवेत् । इष्ट-
स्वजनजं सौख्यं रौहिणीये कुटुम्बगे ॥ [3]वर्षकाले यदा
चान्द्रिः सहजे कुरुते नृणाम् । स्ववर्गाल्पसुखं लाभं
सुहृद्बन्धुसमागमम् ॥ [4]मित्रस्त्रीबन्धुजं सौख्यं चतुरङ्घ्रि-
धनागमम् । वर्षे चतुर्थगश्चान्द्रिः कुरुते नियतं नृणाम् ॥
[5]जायापुत्रसुहृत्सौख्यं मानं भूपालसम्भवम् । प्राप्यते
सम्मतिः पुंसां पञ्चमे शशिनन्दने ॥ [6]शत्रुपक्षविवृद्धिश्च
विवादं स्वजनैः सह । शरीरे रोगजां पीडां कुर्या-

त्सौम्यस्तु षष्ठगः ॥ मार्गाल्लाभोऽङ्गनासौख्यं वाणिज्याच्च धनागमम् । चन्द्रजः कुरुते नित्यं हायने सप्तमे नृणाम् ॥ लाभं सौख्यं प्रमोदं च राजपूजां रिपुक्षयम् । विदधाति नृणां वर्षे सौम्यो मृत्युस्थितो यदा ॥ धर्मबुद्धिस्तथोद्वेगं दैन्यं जायादिपीडनम् । चन्द्रजः कुरुते वर्षे नवमस्थो यदा नृणाम् ॥ वाणिज्याद्राजवर्गाच्च धनलाभं सुहृत्सुखम् । बलं कान्तिविवृद्धिश्च हायने दशमे बुधः ॥ द्रव्यलाभं तथाऽरोग्यं प्रभुप्रीतिविवर्धनम् । शुभ्रक्रियाणकाल्लाभो लाभस्थाने यदा बुधः ॥ स्वल्पलाभमनारोग्यं बहुव्ययं नृपाद्भयम् । स्ववर्गे कलहं नित्यं कुर्यात्सौम्यस्तु रिष्फगः ॥

(शुक्र का) सौख्यं लाभं प्रमोदं च कुलवृद्धिर्भवेन्नृ-

णाम् । लाभं भूमिपतेर्दत्ते दैत्येज्यो लग्नगो यदा ॥ धनलाभं सुहृद्वृद्धिः स्त्रीसुखं शत्रुसंक्षयम् । कान्तिवृद्धिर्नृणां देहे दैत्येज्यो धनगो यदा ॥ तृतीयेऽल्पसुखं पुंसां धनव्ययमुपद्रवम् । विवादं स्वजनैः सार्धं वर्षे दैत्यपुरोहिते ॥ नृपमानमथैश्वर्यमारोग्यं विभवागमम् । भूमिवाहनविद्याप्तिर्हायने हिबुके भृगौ ॥ जायापुत्रादिजं सौख्यं सुबुद्धिं विभवागमम् । विद्याविज्ञानकौशल्यं पञ्चमे भृगुजे नृणाम् ॥ वातश्लेष्मोद्भवा पीडा क्षयोत्पत्तिर्धनक्षयः । महाभयं गृहे कष्टं वर्षे षष्टगते भृगौ ॥ दयितापुत्रजं सौख्यं वाणिज्याद्विभवागमः । मार्गाल्लाभं प्रमोदं च सप्तमे भृगुजे नृणाम् ॥ अल्पभाग्यमनारोग्यं कलहं मित्रवर्गतः । धर्मनाशं प्रवासं

च भृगुपुत्रेऽष्टमस्थिते ॥ शरीरे चैवमारोग्यं सुबुद्धिर्विभवागमम् । जायापुत्रादिजं सौख्यं नवमे भृगुजे भवेत् ॥ नृपमानं सुहृत्सौख्यं धनलाभं रिपुक्षयम् । सर्वारम्भाः प्रसिद्ध्यन्ति दैत्येज्ये दशमे भवेत् ॥ जलमार्गाद्धनप्राप्तिस्तथा शुभ्रक्रियागणकात् । प्रियागमस्तथारोग्यं लाभगे भृगुनन्दने ॥ मित्रस्वजनविद्वेषः सन्मार्गे विभवव्ययः । निःसङ्गत्वं प्रवासश्च द्वादशे भृगुजे नृणाम् ॥

इति वर्षखण्डं द्वितीयम् ॥ २ ॥

(अथ तीसरा जातकखण्ड)

(जन्मेष्टशुद्धि के लिये गर्भाधान लाना) कहाभी ॥

विज्ञायते ज्ञानिभिरत्र पुंसां शुभाऽशुभं जन्मफलं विलग्नात् । तदुच्यते ताजिकनायकोक्ता निषेककाला-

दिह तस्य शुद्धिः ॥ १ ॥ व्यब्जाङ्गाद्व्यङ्गचन्द्राच्च गृह्णीयाद्राशितः फलम् । हीनं युक्तं भागफलैर्गणो गर्भे भवेत्तिथिः ॥ जन्मगर्भीयलग्नाऽब्जसमत्वं चेष्टशुद्धिता ॥ २ ॥ विचन्द्रलग्न व विलग्नचन्द्र के राशियों के फल से गण व तिथियों के फल से अंशफल कम व अधिक कर के गर्भ में स्थिति का अहर्गण व तिथियां होते हैं ॥

उपर गणफल नीचे तिथिफल (कोष्ट राशियों से रखना)

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
२७३ १३	२७० ५६	२६८ ३९	२६६ २२	२६४ ६	२६१ ४९	२५९ ३२	२५७ १६	२५४ ५९	२५२ ४२	२५० २६	२४८ ९
२५० ०	२५२ १८	२५४ ३७	२५६ ५५	२५९ १४	२६१ ३२	२६३ ५२	२६६ १०	२६८ २८	२७० ४६	२७३ ५	२७५ २३

१७४(अशंफलज्या गणफल को जोडना तिथिफलको काटना)

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३६	४१	४६	५०
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५५	०	४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३६	४१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९			
१	१	१	२	२	२	२	२	गणको ऋण		
४६	५०	५५	०	४	९	१३	१८	तिथिको धन		

उन से आधानकालिक लग्न व चन्द्र की जन्मकालिक चन्द्र व लग्न की समानता ही जन्मेष्ट की शुद्धि होती हैं ॥ (जैसा) संवत् ५००७ श्रावदि ४ रवौ सूपूभाप्र ७। ४२ चप्र १०। ३३ अतिगण्डप्र ६। ४५ मीचंगि २५। १७ चरः रार्धं १२। ५५ कर्कांशाः १४ उदयादिष्ट ३०। ३५ ज्योतिषीशम्भूनाथजन्म (इष्टशुद्धि के वास्ते गर्भाधान लाना) शाकः १८५३ करणं ४११ चक्र ३७ अधिमास ४ ऊनाह २६ अहर्गण १६४८ अयनांश ०। २३। २६। १५ सूर्यस्फु ३। १६। ३। ४ चन्द्रस्फु ११। १। १०। ६ लग्न ८। २२। ६। ४६ (गण के वास्ते) विचन्द्र-लग्न ६। २०। ५६। ४० के राशियों ६ से उपर साराशि में गणफल २५२। ४२ को भाग २० फल १। ३६ कम कर के हुआ २५१। ६ गर्भ में स्थिति का गण, जन्माहर्गण १६४८। ३० से काट कर हुवा, चन्द्रवार पर गर्भा-

धान का द्युगण १३९७ । २४ ॥ (तिथि के वास्ते) विलग्न-चन्द्र २ । ६ । ३ । २० के राशियां २ से सरणि में नीचे तिथे फल २५४ । ३७ को भाग ६ फल ० । ४६ जोड के हुई, २५५ । २३ गर्भ में स्थिति की तिथियां , मासादि ८ । १५ । २३ गर्भाधान तक जन्मकाल से बीच में अधिमास होने के कारण सैक शुक्लपक्षादि सावणमान से गिनती कर के वैशाख से सावण तक जन्ममासादिकों ४ । १८ । ३१ से काट के हुई ८ । ३ । ८ वर्तमान अष्टम मगरमास की शुक्लतृतीया गत और वर्तमान चतुर्थी तिथी है । (अब) संवत् ५००६ के पत्री से मार्गशुदि चतुर्थ्यां चन्द्रे चंपूषांदि २४ । ५५ चदि २३ । १६ शूदि २ । २८ मंचंरा १६ । २ विष्टिशे ४ । २१ दि २३ । १६ उन्मूलं पूर्वागताऽहर्गण १३६७ से प्राभातिकसूस्प ७ । ७ । ५५ ३७ अयनों ० । २३ । २६ । ३५ से युक्त ८ । १ । २५

१२ के भोग्यांशों २८ । ३४ । ४८ का भोग्यकाल ३३० जन्मचन्द्र ११ । १ । १० । ७ सायन ११ । २४ । ३६ । ४२ कल्पितलग्न का भुक्तकाल १६३ मध्यस्थ मकर २६६ कुम्भ २३३ इन का योग १०२२ घट्यात्मक १७ । २ हुवा आधान का इष्ट, इस पर । सूस्फु ७ । ८ । १२ । ५५ चस्फु ८ । २५ । २ । ३१ लग्न ११ । ० । ५३ । ३ (नियम है) आधानचन्द्र जन्मलग्न से अधिक हो, तो आगतफल जन्मेष्ट को जोडना, कम हो तो, काटना । यहां जन्मलग्न ८ । २२ । ६ । ४६ आधानचंद्र ८ । २५ । २ । ३१ का अन्तर ० । २ । ५५ । ४२ अधिक है, इस लिये जोडना । सायनचन्द्र (कल्पितलग्न) की राशि ६ मकर के तीन अंशों का फल ३० जन्मेष्ट ३० । ३५ को अधिक कर होवा शुद्ध जन्मेष्टकाल ३१ । ५ है । (क्योंकि) इस पर जन्मचन्द्र ११ । १ । १० । १४ व

आधानलग्न ११ । १ । ७ । ११ और आधानचन्द्र ८ । २५ । १ । ५३ व जन्मलग्न ८ । १५ । ६ । ४६ को भी समता होती है (इति आधान लानी की रीति) ॥ (द्वादशभावो की संज्ञा) तनुर्धनं सहजं च सुहृत्पुत्रो रिपुर्वधूः । मृत्युश्च धर्मः कर्माऽयो व्ययोभावाश्च द्वादश ॥

संवत् ५००७ श्रावदि ४ रवौ शुद्धेष्टकाल ३१ । ५ पर सूर्यादिस्पष्ट सू ३ । १६ । ३ । ३२ चं ११ । १ । १० । १४ भौ ५ । ६ । ३१ । २१ बुध ४ । ७ । ४७ । १६ जी ३ । १२ । ३६ । ११ शु ३ । ७ । १७ । ५१ श ८ । २३ । २० । ३१ रा ११ । १५ । २३ । २८ लं ८ । २५ । ६ । ५० दशमलं ६ । १४ । २६ । ४७ । जन्मचंक्र ॥ धंलेश मीचंरा कर्सूजीशु सिंबु कुंभौके भावचंक्र । १ श ३ चंरा० ७ सू० जी० शु ८ बु० ६ भौके०

होराचक्र[२] । [१]कलंचंभौजीशुश , [२]सिंसूबु ॥

द्रेक्काणचक्र[३] । [१]सिंलंश [२]कंभौ [४]वृंसूजी [८]मीचं [१२]कंबुशु

सप्तांशचक्र[७] । [१]वृंलंश [५]कंचंबु [६]तुंजी [१०]कुंशु [१२]मेसूभौ

नवांशचक्र[९] । [१]वृंलंसूश [४]कुंभौ [८]मिबु [९]कंचं [११]कंशु [१२]तुंजी

द्वादशांशचक्र[१२] । [१]तुंलं [२]वृंभौबु [३]धंजी [४]मंसू [६]मीचं [१२]कंशुश

त्रिंशांशचक्र[३०] । [१]मिलंश [५]कंभौशु [९]कुंबु [१०]मीसूजी [१२]वृंचं

(बल के विचार विना जातक का फल न कह सकता है, इस लिये स्थान, दिक्, काल, निसर्ग, चेष्टा, दृष्टि से, छः प्रकार बल में (प्रथम) उच्च, सप्तवर्ग, युग्मायुग्म, केन्द्रादि, द्रेक्काण से (पञ्चधा) स्थान-बल में से उच्च व सप्तवर्गी का बल कहता है) नीचोनो भगणाच्च्युतः षडऽधिकः षड्हृत्तदोच्चं बलं, स्वर्क्ष-

ऽर्धं समभेऽष्टमस्त्रिचरणा मूलत्रिकोणे बलम् । मित्रच्च-ऽङ्घ्रिरऽधीष्टभे त्रय इभांशा वैरिभेऽष्ट्यंशको दन्तांशो-ऽध्यरिभे गृहाधिपवशात्खेटस्य सप्तैक्यजम् ॥

(उच्चबल) सूर्यस्पष्ट ३ । १६ । ३ । ३२ स्वनीच ६ । १० से हीन होवा ६ । ६ । ३ । ३२ छः से अधिक होने के कारण बाराह से ऊनित होवा २ । २३ । ५६ । २८ छः से लब्ध ० शेष २ साठ से गुणित १२० नीचले २३ । ५६ । २८ अंशात्मक होने के कारण दोगुणे फल ४७ ५२ । ५६ से युक्त १६७ । ५२ । ५६ छः से लब्ध २७ । शेष ५ साठ से गुणित ३०० नीचले ५२ । ५६ फल से युक्त ३५२ । ५६ छः से लब्ध ५८ शेष ४ साठ से गुणित २४० नीचले ५६ फलयुक्त २९६ छः से लब्ध ४९ शेष २ छोडना, लब्ध एकट्ठा ० । २७ । २८ । ४९ हुआ

सूर्य का उच्चबल, ऐसा औरों को भी उच्चबल बनाना॥ (सप्तवर्ग का बल) स्वगृह में एककला का आधा ३०।०' सम में अष्टमांश ७। ३० मूलत्रिकोण में तीन पाद ४५ मित्र में एकपाद १५ अधिमित्र में त्रिगुणा अष्टमांश २२। ३० शत्रु में सोलमा भाग ३। ४५ और अधिशत्रुगृह में बतीसमा भाग १।५२। ३० बल है परन्तु ग्रहों का बल "गृहाधिपवशात्" यानि जिस घर में ग्रह होवे, उस घर के स्वामी से सप्तवर्गी में बल रखना॥ (जैसा) जन्मकुण्डली में सूर्य कर्कट में है, उस का स्वामी चन्द्र मीन में है, मीन का स्वामी बृहस्पति चन्द्र का शत्रु है, इस लिये शत्रु का बल ३। ४५ आया है। ऐसा होरादिकों का भी बल रखना। एकट्ठा सप्तवर्गी बल होता है॥ यह पञ्चधामैत्रीचक्र से स्फुठ होता है॥

तत्रादौ (तात्कालिकशत्रुमित्र) अन्योन्यस्य धनव्यये

ऽर्यसहजव्ययांरबन्धुस्थिताः । तात्काले सुहृदः स्वतुङ्गभवनेप्येतेऽरयस्त्वन्यथा ॥ आपस में जन्मकुण्डली में २, ३, ४, १०, ११, १२ स्थानों में मित्र और स्थानों १, ५, ६, ७, ८, ९ में अपने उच्चराशि का भी स्वामी शत्रु हैं ॥ और पञ्चधा अधिमित्रादिचक्र भी नैसर्गिक व तात्कालिक मित्रादिचक्रों से कल्पना करना ॥ (नैसर्गिक) द्विधामैत्री, त्रिधामैत्री, और पञ्चधामैत्रीचक्र भी कर के सप्तवर्गी का बलचक्र करना ॥ अगले चक्र स्पष्ट एकट्ठा रखोंगा ॥

(दृष्टि) खैकांऽग्निद्विखंवेदंरामयंमेभूंखांश्रांभ्रंमेकांदिभे । दृष्ट्वा वर्जितदृश्यकस्य गुरुणा चेदष्टवेदे कृताः । मन्देनाऽङ्कंयंमेऽसृजा नंगगुंणेऽङ्का भादिजाः संस्कृताः भागघ्नत्ययवृद्धिखांऽनललवेनाऽब्ध्युंद्धृता दृग्भवेत् ॥

दृष्टा चन्द्र ११ । १ । १० । १४ से दृश्य रवि ३ । १६ ।

३। ३२ हीन होवा ४।१४।५३। १८ चार राशि का फल २। अग्रिम० अन्तर २ ऋणात्मक से भागादि १४। ५३। १८ गुणित २६। ४६। १६ तीस ३० से भाजित ०। ५६। ३२ आगतफल २ को ऋण कर के होवा १।०। २८ चार से भाजित होवा ०।१५ ७ सूर्य पर चन्द्रकी दृष्टि॥ इसी रीति से औरों की दृष्टि करना॥ (योगिनीदशा) स्वर्क्षं त्रिभिर्युतं चाष्टतष्टं शेषं दशा भवेत्। मङ्गला[1] पिङ्गला[2] धन्या[3] भ्रामरी[4] भद्रिका[5]ोल्किका[6]। सिद्धा[7] च सङ्कटा[8] चैकवृद्ध्या वर्षैर्दशेश्वराः। चन्द्रा[1]ऽर्क[2]सौम्य[3]भौमे[4]ज्य[5]सौरि[6]शुक्रा[7]ऽगवः[8] क्रमात्। शून्यं च संकटा ज्ञेया षट्त्रिंशद्वाजि-ताऽन्तरम्॥ वर्षादयः क्रमाद्दिग्भिः[10] खाब्धैः[20] खाभ्रेन्दु-भिर्हताः। विशेषे मङ्गलाभोगो ज्ञेयोऽसौ दिवसा-

त्मकः ॥ (जैसा) स्वर्क्ष पूर्वभाद्रपदा २५ तीन युक्त २८ आठ ८ से भाजित शेष चार आई भ्रामरी का स्वामी भौम की दश प्रथम वह लिखना। उस के पीछे और लिखना। अन्तर्दशा के वास्ते भ्रामरीका समय चारवर्ष है, उन के छःतीस से भाग देकर वर्ष आदि ध्रुवक निकलता है ० । १ । १० भ्रामरी अन्तर में लिखना, मङ्गला से शिरो करना, इसी रीती से भ्रामर्यां भ्रामरीविशेषदशा का ध्रुवक भी ० । ० । ४ । २६ । ४० करना चाहिये ॥ यद्वा भ्रामर्य-ऽन्तर ० । ५ । १० के वर्षादिकों को इन १० । ५० । १०० से गुणित ० । २५० । १००० साठ से नीचले लब्ध उपरि देकर हुवा यही दिनात्मक भ्रामरी विशेष का ध्रुवक ४ । २६ । ४० मङ्गला से शिरो करना (विंशोत्तरीदशा)

जन्मर्क्षसंख्या द्व्यूना स्यान्नवभक्ता दशापतिः । शेषं सूचंमराजीशबुकेशु इति नामकः ॥ षट् दशं

सप्तै धृतर्थः षोडशै नवेभूमयः । सप्तभुवः तथा सप्तै विंशतिश्च दशावधि ॥ आ पञ्चचत्वारिंद्धयातनाद्य-श्चतुर्गुणाः । दिना द्वादशमासोना ध्रुवकोऽयं दशा-भिधः ॥ वर्षाणि त्रिगुणीकृत्य मासाः पञ्चदशा-हताः । दिनार्धं प्रक्षिपेदूर्ध्वं ध्रुवकोऽन्तर्दशाभिधः ॥ क्रमतो हि सप्तैरऽथाऽदिमा जनिभस्था घटिकाः समाहताः । भभोगेन भक्ताः फलं भुक्तपाकस्तदूना दशा सा भवेद्भोग्यसंज्ञा ॥ (जैसा) जन्मर्क्ष पूर्भा की संख्या २५ दोनों २ हीन २३ नौ ६ से शेष रहा ५ हुई प्रथम जीव की दशा (काश्मीरिकसंस्कार) पञ्चतालीस तक चार से गुणित दिनात्मक नक्षत्रगतघटी बाराह १२ मासों से काटे हुई दशा का ध्रुवक, याने उस से गुणित जिस २ ग्रह के वर्ष हों उस २ ग्रह का दशामान होवे ।

किन्तु ४५ पञ्चतालीस से एक ही ध्रुवक रहेगा॥ (जैसा) नक्षत्रगतघटी ५५ । ३७ यहां पञ्चतालीस ४५ घटी चौगुणा १८० दिनात्मक है । मासात्मक ६ । ० बाराह १२ । मासों से हीन हुवा वर्षादिक ० । ६ । ० दशाका ध्रुवक । इस से सूर्य के छः वर्ष गुणित हुवा वर्षादि ३ । ० । ० चन्द्रके दसवर्ष १० गुणित हुई, वर्षादि ५ । ० । ० (इस पर नियम यह है) " रवीन्दू गीष्पतिः सौम्यो राहुः सौरः सितो रवेः । सध्रुवात्कुजकेतू चाऽग्रतः सर्वे पृथक्ग्रहाः " याने सूर्य ३ चन्द्र ५ का योग ८ जीवदशा है । तथा ध्रुव ० । ६ । ० युक्त जीव ८ से बुध ८ । ६ । ० से राहु ६ । ० । ० से शनि ६ । ६ । ० से शुक्र १० । ० । ० है और सूर्य ३ । ० । ० ध्रुव ० । ६ । ० युक्त ३ । ६ । ० भौम व केतु का दशापाक होता है ॥ (अन्तर्दशा) "जैसा" जीवदशा के वर्ष ८ । ० । ० त्रिगुण २४ मासादिक न होने से वही दिनादिक

ध्रुवक हुवा। उक्तरीति से सूर्य के छ वर्ष से गुणित १४४ वर्षादि ०। ४। २४ चन्द्र १० के गुणित ०। ८। ०। ० जीव १। ०। २४ बुध १। १। १८। ० राहु १। २। १२। ० शनि १। ३। ६। ० शु १। ४। ०। ० भौ ०। ५। १८। ० के ०। ५। १८। ०॥ (भुक्त भोग्य करणे की विधि यह है)

दशापति के वर्षों से गुणित नक्षत्रभुक्तघटियों के नक्षत्र भोगघटियों से भाजित का वर्षादिक फल भुक्तसंज्ञक होता है दशापति के वर्षों से काटकर शेष दशा का भोग्य काल होता॥ (जैसा) श्रावदि ४ रवौ पूभांप्र ७। ४२ इष्ट ३१। ५ भयात के वास्ते कल (ह्यस्तन) दिन तृतीया शनौ शतांप्र १। १६ रात्रिमान से २५। ४८ काटकर २४। ३२ इष्ट से ३१। ५ युक्तकर हुवा भयात ५५। ३७ और भभोग के वास्ते शतांप्र १। १६ व पूभांप्र ७। ४२ का अन्तर ६। २२ अगले भमान जादा होने के कारण साठ ६० से युक्त होवा ६६। २२ भभोग॥ अब भयातघटिका

५५। ३७ दशेश्वर जीव के दशा वर्षों १६ से गुणित ८८०। ७६२ सवर्णित को ५३५६२ भभोग ६६। २२ सवर्णित ३६८२ से भाग देकर पाये, वर्ष १३ शेष १८२६ द्वादश गुणित से २१६६२ पाये ५ शेष २००२ तीस गुणित से ६००६ पाये १५ दिन, शेष ३३० साठ से गुणित १६८०० से पाये घट्यादि ४। ५४ इकट्ठा होवा भुक्तकाल १३। ५। १५। ४। ५४ दशेश्वर वर्षों १६ से काटा आया दशा का भोग्यकाल २। ६। १४। ५५। ६ ऐसा ही और ग्रहों को भी भुक्त व भोग्यकाल लाना॥ (भावेशोंका फल प्रथमलग्नेश का) नीरोगो तनुपे लग्ने दीर्घजीवी महाबली। भूपतेर्भूमिलाभी स्यात् सुखी प्रथितसद्यशः ॥ १ ॥ लग्नेशे धनगे स्वाढ्यो दीर्घायुः स्थूलदेहयुक्। प्रतिष्ठां लभतेऽत्यर्थं सत्कर्मनिरतो भवेत् ॥ २ ॥ लग्नपे सहजे श्रेष्ठबन्धुमित्रादिसंगतः। धर्मी

दाताऽतिशूरश्च बलिष्ठः प्रभवेन्नरः ॥ ३ ॥ लग्नेशे तुर्यगे भूपप्रियं प्रचुरजीवितम् । स्निग्धं पित्रोर्भक्तिरतं नितरां कुरुते नरम् ॥ ४ ॥ लग्नेशे पञ्चमे पुत्रान्वितं वैरागिणं नरम् । प्रथितं सुस्थितं नृत्यगीतादिकलयाऽन्वितम् ॥ ५ ॥ लग्नेशे शत्रुगे स्वस्थो भूमिलाभी धनी बली । शत्रुघ्नो धर्मपत्नी च भवेत्स्वकुलदीपकः ॥ ६ ॥ लग्नेशे सप्तमे शीली तेजस्वी गुणभूषितः । तद्भार्यापि रूपवती सुशीला चतुराशया ॥ ७ ॥ लग्नेशे मृत्युगे स्वाढ्यः कृपणः स्वस्थआयुषा । क्रूरे काणः शुभैः पीनो विद्याविनयवर्जितः ॥ ८ ॥ लग्नेशे नवमे श्रीमान्बन्धुश्लाघी सुमित्रवान् । सुकृती च सुशीली च तेजस्वी ख्यातक-

र्मकृत् ॥ ९ ॥ लग्नेशे दशमे भूपमानी पण्डितधीरतः । गुरुमात्रऽर्चनरतो लाभैः सर्वैराधिष्ठितः ॥ १० ॥ लग्नेशे लाभगे पुत्रशौर्यधैर्यबलान्वितः । तेजस्वी व्यवहारेषु निपुणो जायते नरः ॥ ११ ॥ लग्नेशे द्वादशे तीक्ष्णभाषी सुनिष्ठुराशयः । बन्धुषु मलिनो नित्यं विदेशी दत्तभुक्तवान् ॥ १२ ॥ (धनेश का)

धनेशे लग्नगे श्रीशं कृपणं व्यवसायिनम् । सुकर्माणं भूपतुल्यभोगिनं नृपसंमतम् ॥ १ ॥ धनेशे धनगेऽनल्पभोगवित्तस्य भाजनम् । मणिरत्नधातुपरं करोति विविधार्थिनम् ॥ २ ॥ धनेशे सहजे सौम्ये बन्धुहीनं विवृत्तिकम् । क्रूरं भौमे भूपशत्रुं तस्करं च कुकर्मिणम् ॥ ३ ॥ धनेशे तुर्यगे सौम्ये पितृद्रव्या·

न्महोदयी । लक्ष्मीवान् कर्मनिष्णातः क्रूरे च व्यसनावृतः ॥ ४ ॥ धनेशे पुत्रगे स्वाढ्यः कर्मदक्षः कुकर्मवित् । व्यसनैर्दुःखभाग्नित्यं जायते पुरुषः खलु ॥ ५ ॥ धनेशे रिपुगे सौम्ये धनसंग्रहतत्परम् । रिपुघ्नं भूमिसंयुक्तं पापे तु धनवर्जितम् ॥ ६ ॥ धनेशे सप्तमे सौम्ये दानशौण्डं यशस्विनम् । तद्भार्या धनधीयुक्ता क्रूरे वन्ध्या भवेद्ध्रुवम् ॥ ७ ॥ धनेशे मृत्युगे त्वात्मघातको हस्तपात्रकः । उत्पन्नभुग्विलासी च परहिंसी स्वदैवभुक् ॥ ८ ॥ धनेशे नवमे सौम्ये वदान्यो बन्धुप्रीतिकृत् । क्रूरे दुर्गतितो भिक्षुर्विलम्बवृत्तिकारकः ॥ ९ ॥ धनेशे दशमे भूपमान्यो वन्द्योऽथवा नृपः । सौम्य ऋज्वाशयो मातृपित्रोश्च पालको

भवेत् ॥ १० ॥ धनेशे लाभगे ख्यातो व्यवहारी श्रियास्पदः । लोकौघपालको नित्यं परव्यसनहारकः ॥ ११ ॥ धनेशे द्वादशे क्रूरे भिक्षुकश्चटुलोऽलसः । कर्मण्यऽनिष्टभिक्षाशी सौम्येऽतिसुखितो भवेत् ॥ १२ ॥

(सहजेश का) भ्रात्रीशे लग्नगे वाग्मी लुम्पटः स्वजनार्तिहृत् । सेवारतः कूटकरो लोभी च जायते नरः ॥ १ ॥ भ्रात्रीशे धनगे क्रूरे भिक्षुर्व्यर्थोऽल्पजीविकः । बन्धुविरोधी सौम्ये तु धनवानीश्वरः पुमान् ॥ २ ॥ भ्रात्रीशे भ्रातृगे सर्वसुहृदं समसत्त्वकम् । देवगुर्वार्चनरतं नृपाल्लाभास्पदं सदा ॥ ३ ॥ भ्रात्रीशे तुर्यगे पाल्यः पितृबन्धुसहोदरैः । मात्राविरोधी स्वपितुर्वित्तस्य भोजको भवेत् ॥ ४ ॥ भ्रात्रीशे

Prthvi nath

पञ्चमे मान्यो बन्धुपुत्रसहोदरैः । दीर्घायुश्चोपकारी च तेजस्वी स्निग्धवाग्भवेत् ॥ ५ ॥ भ्रात्रीशे शत्रुगे बन्धु-विरोधी नेत्ररुग्युतः । मूलाभी भवत्यऽत्यर्थं मध्ये रोगैश्च पीडितः ॥ ६ ॥ भ्रात्रीशे सप्तमे सौम्ये भार्या शीलवती सती । सुरूपा सम्भवेत्क्रूरे देवरमऽनुगामिनी ॥ ७ ॥ भ्रात्रीशे मृत्युगे सौम्ये सोदरैरहितं नरम् । क्रूरे बाहो-र्विकलितं न जीवन्तं चिरन्तनम् ॥ ८ ॥ भ्रात्रीशे नवमे क्रूरे धर्मभ्रष्टस्तथा शठः । सौम्ये तु बान्धवैः श्लाघ्यः सुकृती सोदरादियुक् ॥ ९ ॥ भ्रात्रीशे दशमे भूपमान्यो भ्रातृसुखास्पदः । धनी यशस्वी मानी च निश्चितं जायते नरः ॥ १० ॥ भ्रात्रीशे लाभगे [illegible] च भूपपूजितः । भोगी सुहृद्-

तकरो जायते धर्मतत्परः ॥ ११ ॥ आत्रीशे व्ययगे मित्रैर्विरोधी बन्धुद्वेषकृत् । विदेशवासी सततं बन्धुभ्यो दुष्टशेमुषी ॥ १२ ॥ (तुर्येश का) तुर्येशे लग्नगे पितृपुत्रौ सुस्नेहसंवृतौ । पितृपक्षीयविद्वेषी पितृनाम्नैव विश्रुतः ॥ १ ॥ तुर्येशे धनगे क्रूरे द्वेषी बन्धुषु दुष्टधीः । सौम्ये पित्रोर्विधेयः स्यात्सर्वबन्धुषु संमतः ॥ २ ॥ तुर्येशे भ्रातृगे पितृमात्रोर्नित्यं हि दुःखदः । तद्बन्धुपालको वैरात्कुकर्मी नेष्टचेष्टकः ॥ ३ ॥ तुर्येशे तुर्यगे स्वाढ्यो भूपसम्मानसंश्रयः । विख्यातः पितृद्रव्याप्तः सुकर्मी सुसुखास्पदः ॥ ४ ॥ तुर्येशे पञ्चमे पितृभक्तमाढ्यं चिरायुषम् । कुटुम्बिनं धर्मयुक्तं कुरुते सततं नरम् ॥ ५ ॥ तुर्येशे शत्रुगे क्रूरे धननाशी

सुवैरिकृत् । नित्यं पित्रोर्दुःखदायी सौम्ये द्रव्यादि-सञ्चयी ॥ ६ ॥ तुर्येशे सप्तमे क्रूरे शुश्र्वोः सम्पी-डते वधूः । सौम्ये पालयति भक्त्या सिते भौमे सुशीलतः ॥ ७ ॥ तुर्येशे मृत्युगे क्रूरे रोगाक्रान्तं कुकर्मिणाम् । धनैर्हीनं चलं चित्ते प्रियापथ्यं सुदुः-खितम् ॥ ८ ॥ तुर्येशे नवमेऽसङ्गी पितरि समाशि-ल्पवित् । पितृधर्मसुसङ्ग्राही निरपेक्षश्च बन्धुषु ॥ ६ ॥ तुर्येशे दशमे पापे ससुतां दयितां त्यजेत् । म्रियते त्वन्यजायां तु पिता सौम्येऽन्यतत्परः ॥ १० ॥ तुर्येशे लाभगे धर्मी पितृभक्तः सुकर्मकृत् । बहुपुत्रश्चिरायुश्च नीरोगो वीतशत्रुकः ॥ ११ ॥ तुर्येशे द्वादशे पित्रो-र्मृत्युदश्च विदेशकृत् । क्रूरे त्वन्यपितुर्जन्म वाच्यं

दुष्कर्मदुर्मतिम् ॥ १२ ॥ (सुतेश का) सुतेशे लग्नगे तोकतनयैर्विरलः सुधीः । शास्त्रविद्गीतवित्सुष्टुकर्मकृच्च भवेन्नरः ॥ १ ॥ सुतेशे धनगे पापे गीताभ्यङ्गं गतं धनैः । व्यङ्गं भुजैः प्रतिष्ठाप्तं कुरुते मानुषं सदा ॥ २ ॥ सुतेशे सहजे स्निग्धवाचं सुजनविश्रुतम् । कुटुम्बिनं बन्धुहितं भक्त्या तैरपि समतम् ॥ ३ ॥ सुतेशे तुर्यगे सौम्ये पित्रोऽनिष्टरतं रहः । क्रूरे विरोधिनं पित्रोः साक्षात्तु जननीप्रियम् ॥ ४ ॥ सुतेशे पञ्चमे ख्यातं बुद्धिमन्तं सुमानिनम् । सुतवन्तं धनाढ्यं च वाग्मिनं कुरुते नरम् ॥ ५ ॥ सुतेशे शत्रुगे पापे शस्त्रतुल्याङ्गसंयुतम् । हीनं रोगैः सदा निःस्वं करोति त्यक्तबान्धवम् ॥ ६ ॥ सुतेशे सप्तमे जाया ससुता सुभगा

संती । देवद्विजगुरुभक्ता सुशीला चास्य भाविनी ॥ ७ ॥ सुतेशे मृत्युगेऽश्लीली कटुभाषी च निःस्वकः । नाट्यकर्मपटुर्व्यङ्गो बन्धुभिस्तनयैर्वृतः ॥ ८ ॥ सुतेशे नवमे भूपमान्यं धन्यं सुबोधिनम् । कविं सुगीतनिरतं नाटकेरसिकं नरम् ॥ ९ ॥ सुतेशे दशमे भूपकर्माणं भूपसम्मतम् । सत्कर्मनिरतं ख्यातं जननीहितकारकम् ॥ १० ॥ सुतेशे लाभगे शूरः सुतवान्सुकृतिप्रियः । गीतादिकुशलो राज्ञो लाभयुग्जायते नरः ॥ ११ ॥ सुतेशे द्वादशे क्रूरे निष्पुत्रोऽथ शुभे युतः । पुत्रैरपि तद्दुःखदो विदेशी विमनाः सदा ॥ १२ ॥ (षष्ठेश का) षष्ठेशे लग्नगे नीरुक् सबलोऽनेकधनवान् । कुटुम्बकोटकारी च वैरिघ्नः स्वैरवान्धवः

॥ १ ॥ षष्ठेशे धनगे दुष्टे रिपुव्याप्तोऽतिदुष्टधीः ।
व्याधिग्रस्तो भवेत्सौम्ये सुकृती शीतलाशयः ॥ २ ॥
षष्ठेशे सहजे क्रूरे दुष्टं स्वपितृघातकम् । युद्धोत्सुकं
कुमार्गस्थं सङ्ग्रामेष्वऽतिदुःसहम् ॥ ३ ॥ षष्ठेशे तुर्यगे
पितृतनयौ वैरिणौ मिथः । अस्य पिता गदैर्ग्रस्तो
लक्ष्मीं च लभते बहु ॥ ४ ॥ षष्ठेशे पञ्चमे क्रूरे
वैरिणोः पितृपुत्रयोः । मिथो मृतिस्तथा सौम्ये निःस्वो
दुःखी दुराशयः ॥ ५ ॥ षष्ठेशे शत्रुगे नीरुक् वैरी
भोगी कदर्यधीः । जन्मतोऽपि न सीदेत प्रतिष्ठां
लभते पराम् ॥ ६ ॥ षष्ठेशे सप्तमे क्रूरे भार्या चण्डी
सुदुःखदा । स्वैरचारी त्वथ सौम्ये वन्ध्या वा गर्भघा-
तिनी ॥ ७ ॥ षष्ठेशे त्वऽष्टमे सूर्ये सिंहात्सर्पात्कुजे

रुजः । शनौ वधोऽथ निःश्वासी जीवे शुक्रे च नेत्र-रुक् ॥ ८ ॥ षष्ठेशे नवमे क्रूरे बन्धुद्वेषी च याचकः । शास्त्रद्वेषी च दुष्कर्मा नितरां नीचकर्मकृत् ॥ ९ ॥ षष्ठेशे दशमे क्रूरे मातृद्विट् दुष्टकर्मकृत् । धर्मी पुत्र-कुटुम्बी च मातृपक्षीयवैरिकृत् ॥ १० ॥ षष्ठेशे लाभगे क्रूरे मरणं शत्रुतो भवेत् । तस्करैः कृतहानिः स्याच्च-तुष्पाल्लाभसंयुतः ॥ ११ ॥ षष्ठेशे द्वादशे धान्यद्रव्य-नाशकरः परम् । व्यापाराद्द्रव्यहानिः स्यात्तथा दैव-परं नरम् ॥ १२ ॥ (जायेश का) जायेशे लग्नगे स्तोकस्नेहमऽन्योत्सुकं प्रियम् । भोगिनं रूपयुक्तं च दयिताखण्डिताशयम् ॥ १ ॥ जायेशे धनगे दुष्टद-यितस्तद्दुःखितः सदा । अन्यस्त्रीहृतचित्तश्च तत्स्त्रीश्चा-

न्यरता भवेत् ॥ २ ॥ जायेशे सहजे स्वात्ममानी दुःखी सुहृद्धितः । तज्जायान्यरता दुष्टा क्रूरे त्वन्यकुटुम्बिनी ॥ ३ ॥ जायेशे तुर्यगे लोलः पितृवैरी परैर्वृतः । अस्य पिता च तद्भार्या सततं पाति धर्मतः ॥ ४ ॥ जायेशे पञ्चमे भोगी पुत्रैः पाल्योऽतिविश्रुतः । जायावैरी सदा पुत्रैः पालितस्त्री निरुत्सवः ॥ ५ ॥ जायेशे शत्रुगे जायावैरिणं दुष्टमार्गगम् । स्त्रीसङ्गात्त्वयिणं क्रूरे स्त्रीदोषान्मरणं भवेत् ॥ ६ ॥ जायेशे सप्तमे श्रीमान्दीर्घायुः प्रीतिवत्सलः । तेजस्वी च सुशीलश्च जायते मानवः सुधीः ॥ ७ ॥ जायेशे मृत्युगे वेश्यासक्तश्चाऽतिदुराशयः । परस्त्रीक्षीणवित्तश्च सर्वथा दुष्टचेष्टकः ॥ ८ ॥ जायेशे नवमे

सौम्ये सुशीला गुणग्राहिणी । जाया रूपवती क्रूरे कुरूपा दुष्टधीमती ॥ ९ ॥ जायेशे दशमे क्रूरे नृपदाम्भिकलुम्पटः । दुष्टान्तःकरणो दुष्टो नारीवशगतोधिकम् ॥ १० ॥ जायेशे लाभगे भक्ता रूपिणी शीलसंयुता । दयिता परिणीताऽस्य म्रियते प्रसवच्छलात् ॥ ११ ॥ जायेशे द्वादशे भार्या नास्तिका दुष्टवासना । लोला विक्षिप्तचित्ता च सङ्कल्पैः कलिता भृशम् ॥ १२ ॥ (मृत्युपति का) मृत्युपे लग्नगे विघ्नैरुद्विग्नो दीर्घरोगभृत् । दुष्टानुवादनिरतो लक्ष्मीं भूपादऽवाप्यते ॥ १ ॥ मृत्युपे धनगे स्वल्पजीवी वैरी च तस्करः । क्रूरेऽथ सौम्येऽतिशुभं किन्तु भूपान्मृतिर्भवेत् ॥ २ ॥ मृत्युपे सहजे बन्धुवैरी व्यङ्गो-

ऽतिदुष्टवाक् । लोलः सोदरहीनश्च जायते मनुजः कृशी ॥ ३ ॥ मृत्युपे तुर्यगे पितृवैरी पितृधनापहः । पिता-पुत्रौ तनू घ्नन्तौ पिता रोगान्वितो भवेत् ॥ ४ ॥ मृत्युपे पञ्चमे क्रूरे सुतैर्हीनः शुभे सुती । तस्य पिता न जीवेच्च जीवेच्चेन्नहि भाग्ययुक् ॥ ५ ॥ मृत्युपे शत्रुगे सूर्ये भूपाऽरिर्नेत्ररुक् गुरौ । शनौ रोगी भयं भौमे कष्टमऽन्यैर्ग्रहैर्भवेत् ॥ ६ ॥ मृत्युपे सप्तमे गुह्य-रोगी कुशीलवल्लभः । दुष्टो दुष्टे वनिताद्वेट् तद्द्वेषाच्च मृतिं लभेत् ॥ ७ ॥ मृत्युपे मृत्युगे रोगैर्ग्रस्तोऽति-कपटी नरः । दुष्टकर्मसु निष्णातो व्यवसायी च जायते ॥ ८ ॥ मृत्युपे नवमे वैरिघातकः मुखव्य-ङ्गकः । निर्बन्धुश्चैव तेजस्वी निःस्नेहो धर्मकृतिषु ॥ ९ ॥

मृत्युपे दशमे भूपकर्मा शाठ्यकलाप्रियः । आलसो वन्यभोगैश्च जीवति मातृपालकः ॥ १० ॥ मृत्युपे लाभगे बाल्ये दुःखी पश्चात्सुखी नरः । दीर्घायुश्च भवेत्सौम्ये पापे स्वल्पवयःस्थितिः ॥ ११ ॥ मृत्युपे व्ययगे दुष्टो नतस्कन्दो नचाऽतिरुक् । अङ्गहीनो मृतः काकैर्भक्ष्योऽतिनीचकर्मकः ॥ १२ ॥ (भाग्येश का)

भाग्येशे लग्नगे देवान्गुरूंश्च मानिको बली । कृपणो भूपकर्मा च स्वल्पग्रासी भवेत्सुधीः ॥ १ ॥ भाग्येशे धनगे ख्यातः सुशीलः सुकृती सुधीः । सभ्यश्चतुष्पदोत्पन्नपीडाज्ञो धनवान्नरः ॥ २ ॥ भाग्येशे सहजे दक्षस्तेजस्वी बन्धुवत्सलः । अक्षीणकर्मकृद्बन्धुहितकृत्सुकृती सुखी ॥ ३ ॥ भाग्येशे तुर्यगे पितृभक्तः

पितृहितो नरः । सुकृतैर्विदितो भोगी तेजस्वी च भवेन्नरः ॥ ४ ॥ भाग्येशे पञ्चमे देवे गुरौ भक्तः शुभाशयः । वपुषा सुन्दरो वाग्मी कन्यापुत्रकुटुम्बकः ॥ ५ ॥ भाग्येशे शत्रुगे शत्रुप्राणाकर्षी त्वऽधार्मिकः । क्रूरमतिर्निष्ठुरवाक् जननिन्दाप्रवर्तकः ॥ ६ ॥ भाग्येशे सप्तमे तस्य पत्नी सत्यवती सती । सुशीला सुविनेता च जायते पतिपोषका ॥ ७ ॥ भाग्येशे मृत्युगे यन्त्रविघाती गृहबन्धुहृत् । दुष्कृती पण्ठको नित्यं जनोद्वेगकरः पुमान् ॥ ८ ॥ भाग्येशे नवमे प्रीतिं बन्धुषु कुरुते दृढम् । दाता भोक्ता सुपूज्यश्च स्वकुटुम्बस्य पोषकः ॥ ९ ॥ भाग्येशे दशमे भूपकर्माणं नृपमानिनम् । पुण्यवन्तं मातृभक्तं शूरं ख्यातं नरं हितम्

॥ १० ॥ भाग्येशे लाभगे ख्यातो दीर्घायुर्बन्धुतत्परः । स्नेहलो नृपतेर्मानी सुकृती सुसुती भवेत् ॥ ११ ॥ भाग्येशे द्वादशे मानी विद्वान्सत्कर्मकारकः । देशान्तरेषु विख्यातः शुभे पापे च धूर्तकः ॥ १२ ॥ (कर्मेश का) कर्मेशे लग्नगे मातृद्वेषी जनकसेवकः । दुःखार्तो जनकश्चास्य मातान्यपुरुषे रता ॥ १ ॥ कर्मेशे धनगे मात्रा पालितो लोभसंकुलः । स्वल्पग्रासी नीचकर्मा मातुर्दुष्टकृतौ रतः ॥ २ ॥ कर्मेशे सहजे मातुर्विरोधी सुजनार्तिकृत् । सेवारतो विकर्मस्थो मातुलैः पालितश्चिरम् ॥ ३ ॥ कर्मेशे तुर्यगे पित्रोः पोषणेपूजने रतः । सुखी मानी धनी भोगी सत्कर्मनिरतो भवेत् ॥ ४ ॥ कर्मेशे पञ्चमे नृत्यगीतादि-

निरतः सदा । शुभकर्मी विडम्बी च तत्सुतान्पाति तत्प्रसूः ॥ ५ ॥ कर्मेशे शत्रुगे क्रूरे बाल्येऽपि दुःखभाग्भवेत् । परान्ननिरता माता तद्ध्यानान्मनसाऽसुखी ॥ ६ ॥ कर्मेशे सप्तमे पुत्रैः श्लाघ्या रूपवती वधूः । स्वयं कलत्ररागी च भवति मातृतत्परः ॥ ७ ॥ कर्मेशे निधने शूरं क्रूरं दुष्टं मृषावदम् । मातरि दुःखदं कुर्यात्स्वल्पवृत्तिं च कैतवम् ॥ ८ ॥ कर्मेशे भाग्यगे साधुशीलं सद्बन्धुसंयुतम् । तन्मातापि सुशीला स्याद्धर्मिणी साधुसेवकः ॥ ९ ॥ कर्मेशे कर्मगे मातुर्मातृपत्नीयस्वेष्टकृत् । बन्धूनां संगतिकरो विद्याविनयभूषितः ॥ १० ॥ कर्मेशे लाभगे मात्रोज्झितभर्त्रा च पालितः । दीर्घायुर्मातृसुखदः सुखी भोगी भवे-

न्नरः ॥ ११ ॥ कर्मेशे व्ययगे मातृद्रव्यभोगी बली सुखी । क्रूरे विदेशनिरतो व्यसनी च भवेन्नरः ॥ १२ ॥

(लाभेश का) लाभेशे लग्नगे शूरो भोक्ता दाताऽल्पजीविनः । जनैः प्रियः सौभाग्यवांस्तुच्छदोषान्मृतिं लभेत् ॥ १ ॥ लाभेशे धनगे स्वल्पभोजनः स्वल्पवृत्तिकः । नीचवृत्तिश्चौरकर्मी क्रूरे सौम्ये च रोगयुक् ॥ २ ॥ लाभेशे सहजे बन्धुपालको बन्धुसंमतः । रिपुवर्गपरिच्छेता शुभे तु नितरां भवेत् ॥ ३ ॥ लाभेशे तुर्यगे पितृस्नेही च चिरजीवितः । सुकर्मनिरतो लाभी नित्यं भोगी भवेन्नरः ॥ ४ ॥ लाभेशे पञ्चमे पितृसूनू स्नेहेन संयुतौ । तुल्यगुणावन्योन्यं स्तः सुजीवी सुकृती भवेत् ॥ ५ ॥ लाभेशे शत्रुगे वैरी

दीर्घरोगी विदेशगः। चौरान्मृतिमऽवाप्नोति क्रूरे सौम्ये तु सौख्यभाक् ॥ ६ ॥ लाभेशे सप्तमे शूरस्तेजस्वी शील-संयुतः । दीर्घायुश्चैकदयितो भोगी च भवति पुमान् ॥ ७ ॥ लाभेशे निधने क्रूरे स्वल्पजीव्यऽतिरोगयुक् । जीवन्मृत इव दुःखी सौम्ये सम्भवति मनाक् ॥ ८ ॥ लाभेशे भाग्यगे सौम्ये प्राप्तविद्यो बहुश्रुतः । धर्मैः प्रसिद्धः सद्भक्तः क्रूरे हीनो जनैर्धनैः ॥ ९ ॥ लाभेशे कर्मगे मातुर्भक्तः पुण्यः सुजीविकः । पितृद्वेषी धनी मानी चिरायुर्बलवान्सुखी ॥ १० ॥ लाभेशे लाभगे भोगी चिरायुः शीतलाशयः । सर्वाह्लादी कुटुम्बी च सत्कर्मनिरतो भवेत् ॥ ११ ॥ लाभेशे व्ययगे भोगी नस्थिरो मानवर्जितः । उत्पन्नभोजी रोगाप्तो विवि-

धार्तिसमाकुलः ॥ १२ ॥ (व्ययेश का) व्ययेशे लग्नगे षण्ठो विदेशनिरतः सुधीः । सुत्राक् कुसङ्ग-निन्दालुर्जायते मनुजो भृशम् ॥ १ ॥ व्ययेशे धनगे दीनो कटुवाक् कटुजीविकः । भौमे तु मृतिमाप्नोति नृपात्तस्करभीतितः ॥ २ ॥ व्ययेशे सहजे क्रूरे बन्धु-हीनो शुभे धनी । तत्सोदरः सुकृपणो बन्धुद्वेषी च दुर्मतिः ॥ ३ ॥ व्ययेशे तुर्यगे रोगैरर्दितो कृपणो घृणी । जीवन्मृतो महादुःखी मृत्युमाप्नोति दोषतः ॥ ४ ॥ व्ययेशे पञ्चमे क्रूरे निष्पुत्रः ससुतः शुभे । पितुर्द्रव्येन भोगिष्णुः स्वसामर्थ्यविवर्जितः ॥ ५ ॥ व्ययेशे शत्रुगे क्रूरे कृपणो दूषकः कुधीः । लभते परतो मृत्युं शुक्रे तु नेत्रवर्जितः ॥ ६ ॥ व्ययेशे सप्तमे

क्रूरे दुष्टकर्मा विरुद्धवाक् । निःस्त्रीको व्यसनी सौम्ये वेश्यासक्त्या विनश्यति ॥ ७ ॥ व्ययेशे निधने क्रूरे वृत्तिहीनोपि निष्क्रियः । द्रोहमतिर्भवेत्सौम्ये धनसंग्रहतत्परः ॥ ८ ॥ व्ययेशे नवमे सौम्ये तीर्थालोकी विद्वृत्तिकः । क्रूरे त तद्धनं व्यर्थं विनाशमुपगच्छति ॥ ९ ॥ व्ययेशे दशमे श्लाघी स्वस्त्रीप्रीतिरतः शुभः । सुती धनी कुटुम्बी च माताऽस्य दुष्टचेतना ॥ १० ॥ व्ययेशे लाभगे स्वाढ्यो दीर्घजीवी बहुप्रदः । प्रतिष्ठितोऽतिविख्यातः सत्यवचनतत्परः ॥ ११ ॥ व्ययेशे व्ययगे ग्रामनिवासी रतिमान् कृती । पशुमान्ग्राम युक्तश्च भूतिमाञ्छुभलक्षणः ॥ १२ ॥

इति तृतीयं जातकखण्डम् ॥ ३ ॥

[illegible]	मे	ह्र	भि	क्र	सिं	कं	तुं	ह्रं	धं	मं	ॐ	मी	न्यासः
	ह्र	भि	मी	ह्र	म	सि	क्र	ह्र	भि	मी	ह्र	मं	१०।०।०
	सिं	क्र	ह्र	भि	मी	ह्र	म	सिं	क	ह्र	भि	मी	२०।०।०
	ह्र	म	सि	क	ह्र	भि	मी	ह्र	म	सिं	क	ह्र	३०।०।०
[illegible]	मे	ह्र	भि	क	सिं	कं	तु	ह्रं	धं	मं	ॐ	मी	न्यासः
	सिं	क	सिं	क	सिं	क	सिं	क	सिं	क	सिं	क	१५।०।०
	क	सि	क	सि	क	सिं	क	सिं	क	सि	क	सि	३०।०।०
[illegible]	मे	ह्र	भि	क	सिं	कं	तु	ह्र	धं	मं	ॐ	मी	न्यासः
	मे	ह्र	भि	क	सिं	कं	तु	ह्र	ध	म	ॐ	मी	१०।०।०
	सिं	कं	तु	ह्र	धं	मं	ॐ	मी	मे	ह्र	भि	क	२०।०।०
	धं	मं	ॐ	मी	मे	ह्र	भि	क	सिं	कं	तु	ह्र	३०।०।०
[illegible]	मे	ह्र	भि	क	सिं	कं	तु	ह्र	ध	म	ॐ	मी	न्यासः
	मे	मं	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	३।२०।०
	ह्र	ॐ	ह्र	सि	ह्र	ॐ	ह्र	सिं	ह्र	ॐ	ह्र	सि	६।४०।०
	भि	मी	ध	क	भि	मी	धं	क	भि	मी	धं	क	१०।०।०
	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	१३।२०।०
	सिं	ह्र	ॐ	ह्र	सि	ह्र	ॐ	ह्र	सि	ह्र	ॐ	ह्र	१६।४०।०
	कं	भि	मी	धं	कं	भि	मी	धं	कं	भि	मी	धं	२०।०।०
	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	२३।२०।०
	ह्र	सि	ह्र	ॐ	ह्र	सि	ह्र	ॐ	ह्र	सि	ह्र	ॐ	२६।४०।०
	धं	कं	भि	मी	धं	कं	भि	मी	धं	कं	भि	मी	३०।०।०

सप्तांशचक्रम्												
मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
मे	वृ	मि	म	सिं	मी	तु	वृ	ध	क	कुं	कं	४।१७।८
वृ	ध	क	कुं	कं	मे	वृ	मि	म	सिं	मी	तु	८।३४।१७
मि	म	सिं	मी	तु	वृ	ध	क	कुं	कं	मे	वृ	१२।५१।२५
क	कुं	कं	मे	वृ	मि	म	सिं	मी	तु	वृ	ध	१७।८।३४
सिं	मी	तु	वृ	ध	क	कुं	कं	मे	वृ	मि	म	२१।२५।४२
कं	मे	वृ	मि	म	सिं	मी	तु	वृ	ध	क	कुं	२५।४२।५१
तु	वृ	ध	क	कुं	कं	मे	वृ	मि	म	सिं	मी	३०।०।०

द्वादशांशचक्रम्												
मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	२।३०।०
वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	५।०।०
मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	७।३०।०
क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	१०।०।०
सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	१२।३०।०
कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	१५।०।०
तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	१७।३०।०
वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	२०।०।०
ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	२२।३०।०
म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	२५।०।०
कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	२७।३०।०
मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	३०।०।०

त्रिंशांशचक्रम्

मे	मि	सिं	तु	धं	कुं	राशय	वृ	क	कं	वृ	मं	मी	राशय
मे	मे	मे	मे	मे	मे	५	वृ	वृ	वृ	वृ	वृ	वृ	५
कुं	कुं	कुं	कुं	कुं	कुं	१०	कं	कं	कं	कं	कं	कं	१२
धं	धं	धं	धं	धं	धं	१८	मी	मी	मी	मी	मी	मी	२०
मि	मि	मि	मि	मि	मि	२५	मं	मं	मं	मं	मं	मं	२५
तुं	तुं	तुं	तुं	तुं	तुं	३०	वृ	वृ	वृ	वृ	वृ	वृ	३०

वर्षचक्रम्



भावचक्रम् ॥ मुद्दाचक्रम्

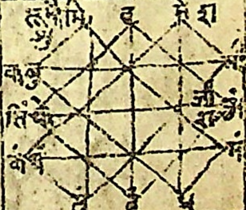




हर्षबलचक्रम्

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	स्था
५	०	५	०	०	५	०	स्व
५	०	५	०	०	५	५	स्त्री
५	०	५	०	५	०	०	दिन
१५	०	१५	०	५	१०	५	योग

पताकीचक्रम्



[illegible]

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	ग्रहाः
चंभौजी	सूबुजी	सूचंजी	शुश	सूचंभौ	बुश	बुशु	मित्राणि
बुशुश	बुशुश	बुशुश	सूचंभौजी	बुशुश	सूचंभौजी	सूचंभौजी	शत्रवः

[illegible]

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	ग्रहाः
चं	सू	जीशुश	जीशुश	भौबुशुश	भौबुजी	भौबुजी	मित्राणि
भौबुशुश	भौबुजी	सूचं	सूचं	सूचं	सू	सू	समाः
जी	शुश	बु	भौ	सू	चंश	चंशु	शत्रवः

[illegible]

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	ग्रहाः
चं	सू	जी	शुश	भौ	बु	बु	ऽधिमि०
भौ	भौजी	सूचं	+	चं	+	+	मित्राणि
जी	+	शुश	जी	सूचंशुश	भौजीश	भौजीशु	समाः
बुशुश	बु	+	सूचं	+	सू	सू	शत्रवः
+	शुश	बु	भौ	+	चं	चं	ऽधिशत्रु

[illegible]

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृं	धं	मं	कुं	मी	राशय
सू	शु	श	शु	जी	चं	बु	भौ	श	भौ	जी	चं	दिने
जी	चं	बु	भौ	सू	शु	श	शु	श	भौ	जी	चं	रात्रौ

वर्षेऽब्दबलांकाः	स्वगृह	अधिमि	मित्र	सम	शत्रु	अधिश	
	३०।०	२२।३०	१५।०	७।३०	३।४५	१।५२	क्षेत्र
	१५।०	११।१५	७।३०	३।४५	१।५२	०।५६	हुद्दा
	१०।०	७।३०	५।०	२।३०	१।१५	०।३७	त्रैराशि
	५।०	३।४५	२।३०	१।१५	०।३७	०।१८	मुसल्लह

तात्कालिकमैत्री		
मि	स	श
३	२	१
५	६	४
९	८	७
११	१२	१०

पञ्चवर्गीबलबोधकयन्त्रम्	सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	ग्रहाः
	स्व भौ ० ३० ०	स श ० ७ ३०	स्व भौ ० ३० ०	स जी ० ७ ३०	स जी ० ७ ३०	स श ० ७ ३०	स श ० ७ ३०	क्षेत्रबलम्
	० १५ ८	० ३ ५६	० ११ १५	० ५ १०	० ० ३०	० १५ ३८	० ५ ३	उच्चबलम्
	अमि शु ० ११ १५	स बु ० ३ ४५	स भौ ० ३ ४५	स भौ ० ३ ४५	अमि शु ० ११ १५	स शु ० ३ ४५	स भौ ० ३ ४५	हुद्दाबलम्
	स्व सू ० १० ०	स्व बु ० १० ०	स्व भौ ० १० ०	स्व बु ० १० ०	स्व जी ० १० ०	स्व भौ ० १० ०	स्व श ० १० ०	त्रैराशिबलम्
	स्व सू ० ५ ०	स श ० १ ५२	स श ० १ ५२	श सू ० ३ ३८	श सू ० ३ ३८	श सू ० ३ ३८	स्व सू ० ५ ०	नवांशबलम्
	० १५ ३८	० २६ ५५	० ५१ ५२	० ८ २०	० २१ २४	० ३४ २२	० २२ १८	द्रेष्काणबलम्
	० १८	० ६	० १३	० ६ ४५	० ७ २२	० १० २२	० ६ २०	चतुर्थांशाः

अधस्तादन्तराले मुद्दादशा तथा अन्तरदशाचक्रम्

सू ०।१।१२	चं ०।४।०	भौ ०।१।४५	रा ०।६।१८	जी ०।८।०	श ०।५।४२	बु ०।७।३६	के ०।१।४५	शु ०।६।०	मासादि
चं ०।२।२४	भौ ०।२।३०	रा ०।२।२६	जी ०।९।०	श ०।४।४८	बु ०।८।३३	के ०।४।१५	शु ०।२।६	सू ०।४।[illegible]	मासादि
भौ ०।१।३०	रा ०।३।३०	जी ०।३।३०	श ०।५।२४	बु ०।७।१२	के ०।४।४५	शु ०।५।६	सू ०।१।३६	चं ०।८।०	मासादि
रा ०।२।६	जी ०।५।०	श ०।२।६	बु ०।६।६	के ०।४।०	शु ०।५।४२	सू ०।३।२४	चं ०।२।४८	भौ ०।५।०	मासादि
जी ०।२।०	श ०।३।०	बु ०।३।०	के ०।४।३०	शु ०।४।४८	सू ०।३।४०	चं ०।६।४८	भौ ०।१।४५	रा ०।७।०	मासादि
श ०।१।४८	बु ०।४।३०	के ०।१।४५	शु ०।५।२४	सू ०।२।१२	चं ०।७।३६	भौ ०।४।१५	रा ०।२।२४	जी ०।१८।०	मासादि
बु ०।२।४२	के ०।२।३०	शु ०।२।६	सू ०।३।३६	चं ०।६।२४	भौ ०।४।४५	रा ०।५।५७	जी ०।२।३०	श ०।६।०	मासादि
के ०।१।३०	शु ०।३।०	सू ०।१।२४	चं ०।७।१२	भौ ०।७।०	रा ०।६।३९	जी ०।८।३०	श ०।२।६	बु ०।९।०	मासादि
शु ०।१।४८	सू ०।२।०	चं ०।२।४८	भौ ०।४।३०	रा ०।५।३६	जी ०।९।३०	श ०।५।६	बु ०।३।२४	के ०।५।०	मासादि
योग ०।१८।०	१।०।०	०।२२।०	०।२४।०	१।१८।०	०।२७।०	१।२१।०	०।२५।०	२।०।०	दशा
सूर्यस्य ४	चन्द्रस्य ८	भौमस्य ७	राहोः ७	जीव १०	शनेः ५	बुध ५	केतोः ५	शुक्र ६	गुणकः

जन्मनि सूर्यादीनां स्फुटाः								
सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	रा	के
३ १६ ३३ [illegible]	११ १ ५० २४	५ ६ ३१ [illegible]	७ ७ ४७ १५	२ १२ २६ ११	३ ७ १७ ५१	८ २२ २० ३१	११ १५ २३ २८	५ १५ २३ २८
५७ १०	७२७ ५५	२०	७५ ७	१२ ४०	७४ २	५७ २५	३ ११	३ ११





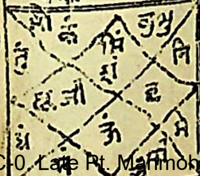
जन्मनि भावस्पष्टकम्

१	सं	२	सं	३	सं	४	सं	५	सं	६	सं
८ २५ ५६ ५०	८ १३ २२ ३७	१० १ ३५ २९	१० १४ ४८ १८	११ ८ [illegible]	११ २६ १३ ५७	० १७ २६ ५७	१ २६ १३ ५७	२ ८ १ ८	२ १४ ४८ १८	३ १ ३५ २९	३ १३ २२ ३७
७		८		[illegible]		१०		११		१२	
२ २५ ५६ ५०	२ १३ २२ ३७	४ १ ३५ २९	४ १४ ४८ १८	५ ८ १ ८	५ २६ १३ ५७	६ १७ २६ ५७	६ २६ १३ ५७	७ ८ १ ८	७ १४ ४८ १८	८ १ ३५ २९	८ १३ २२ ३७

होराचक्रम्



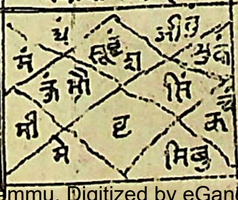
द्रेष्काणचक्रम्



सप्तांशचक्रम्



नवांशचक्रम्

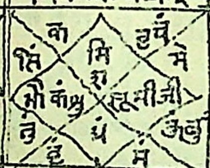


द्वादशांशचक्रम्	त्रिंशांशचक्रम्	उच्चबलम्

द्वादशांशचक्रम्



त्रिंशांशचक्रम्



उच्चबलम्

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श
०	०	०	०	०	०	०
२८	३८	१२	४८	५७	२६	३८
५८	३३	५०	३५	२८	३४	५३

तात्कालिकमैत्री

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	ग्रहाः
भौबु	श	सूबुजीशुश	सूभौजीशु	भौबु	भौबु	चंभौ	मित्रा
चंजीशुश	सूभौबुजीशु	चं	चंश	सूचंशुश	सूचंजीश	सूबुजीशु	शत्रवः

निसर्गमैत्री

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	ग्रहाः
चंभौजी	सूबु	सूचंजी	सूशु	सूचंभौ	बुश	बुशु	मित्रा
बु	भौजीशुश	शुश	भौजीश	श	भौजी	जी	समाः
शुश	०	बु	चं	बुशु	सूचं	सूचंभौ	शत्रु

पञ्चधामैत्रीचक्रम्

सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	ग्रहाः
भौ	+	सूजी	सूशु	भौ	बु	+	अधिमि
बु	श	शुश	भौजी	+	भौ	+	मित्रा
चंजी	सूबु	चंबु	+	सूचंबु	श	चंभौबुशु	समाः
+	भौजीशु	+	श	श	जी	जी	शत्रवः
शुश	+	+	चं	शु	सूचं	सू	अधिश

बलचक्रम्

[illegible]	स्वगृह	अधिमि	मि	सम	शत्रु	अधिश
०।४५।०	०।३०।०	०।२२।३०	०।१५।०	०।७।३०	०।३।४५	०।१।५२

द्विधा तात्का० मै०

२।३।४।१०।११।१२	मि
१।५।६।७।८।९	शत्रु

सप्तवर्गीबलैक्यचक्रम्

सू	चं	मौ	बु	जी	शु	श	ग्रहाः
श जी ०।३।४५	स चं ०।७।३०	अमि सू ०।२२।३०	स चं ०।७।३०	श जी ०।३।४५	श जी ०।३।४५	स चं ०।७।३०	क्षेत्रब
स्व सू ०।३०।०	स्व चं ०।३०।०	स्व चं ०।३०।०	स्व सू ०।३०।०	स्व चं ०।३०।०	स्व चं ०।३०।०	स्व चं ०।३०।०	होराब
स बु ०।७।३०	अमि मौ ०।२२।३०	अशी चं [illegible]	श जी ०।३।४५	स बु ०।७।३०	श जी ०।३।४५	अमि मौ ०।२२।३०	द्रेक्काणब
स्व मौ ०।३०।०	स्व बु ०।३०।०	स्व मौ ०।३०।०	स्व बु ०।३०।०	स श ०।७।३०	स शु ०।७।३०	स श ०।७।३०	सप्तांशब
मि श ०।१५।०	स्व चं ०।३०।०	स मौ ०।७।३०	स्व बु ०।३०।०	अमि बु ०।२२।३०	स्व बु ०।३०।०	मि श ०।१५।०	नवांशब
स बु ०।७।३०	स्व जी ०।३०।०	स्व मौ ०।३०।०	स्व मौ ०।३०।०	स्व जी ०।३०।०	मि मौ ०।१५।०	मि मौ ०।१५।०	द्वादशांशब
स्व जी ०।३०।०	अमि बु ०।२२।३०	मि शु ०।१५।०	स बु ०।७।३०	स्व जी ०।३०।०	मि शु ०।१५।०	श श ०।३।४५	त्रिंशांशब
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बलैक्यम्

दृष्टिचक्रम्												
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	राशयः
०	१	३	२	०	४	३	२	१	०	०	०	सू.चं.बु.शु
०	१	४	२	०	४	४	२	१	०	०	०	भौ
०	१	३	४	०	४	३	४	१	०	०	०	जी
०	४	३	२	०	४	३	२	४	०	०	०	श

योगिनीदशाक्रमः दशायोगावधिः ३६

आर्द्रा चि श्र	पुं स्वा ध	ति वि श	अश्वि अश्ले अनू पूभा	भ मज्ये उभा	कृ पूफा मू रे	रो उफा पूषा	मृ ह उषा	नक्षत्र
मङ्गला	पिंगला	धन्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	नाम
चं १।०	सू २।०	बु ३।०	भौ ४।०	जी ५।०	श ६।०	बु ७।०	रा ८।०	स्वामी
०।१०	०।२०	०।२०	०।२०	०।२०	०।२०	०।२०	०।२०	अन्तर

विंशोत्तरीदशाक्रमः योगावधिः १२०

सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	जी	श	बु	के	शु	दशेशाः
कृ उफा उषा	रो ह श्र	मृ चि ध	आर्द्रा स्वा श	पुं वि पूभा	ति अनू उभा	अश्ले ज्ये रे	म मू अश्वि	पूफा पूषा भ	जन्मनक्षत्रं
६।०।०	१०।०।०	७।०।०	१८।०।०	१६।०।०	१९।०।०	१७।०।०	७।०।०	२०।०।०	वर्षादि

आमिन्नोंदशाक्रमः

	आ	म	उ	सि	सं	मं	पिं	धं
	४ ० ०	५ ० ०	६ ० ०	७ ० ०	८ ० ०	१ ० ०	२ ० ०	३ ० ०
७ ३ १९	१५ ३ १५	१६ ३ १५	२२ ३ १५	२५ ३ १५	३७ ३ १५	३८ ३ १५	४० ३ ३५	४३ ३ १५

आमयैन्तरम्

	आ	म	उ	सि	सं	मं	पिं	धं
	० ५ १०	१ ६ २०	० ८ ०	० ९ १०	० १० ३०	० १ १०	० २ २०	० ४ ०
७ ३ १५	७ ८ २५	८ ३ १५	८ ११ १५	९ ८ २५	१० ७ १५	१० ८ २५	१० ११ १५	११ ३ १५

आमर्यो आमरी विदशा

	आ	म	उ	सि	सं	मं	पिं	धं
	औ	झी	श	ञु	रा	चं	सू	बु
	० ० १७ ४६ ४०	० ० २२ १३ २०	० ० २६ ४० ०	० १ १ ६ ४०	० १ ५ ३३ २०	० ० ४ २६ ४०	० ० ८ ५३ २०	० ० १३ ५० ०
७ २ १९ ० ०	७ ४ ६ ४६ ४०	७ ४ २९ ० ०	७ ५ २५ ४० ०	७ ६ २६ ४६ ४०	७ ८ २ २० ०	७ ८ ६ ४६ ४०	७ ८ १९ ४० ०	७ ८ २९ ० ०

मंगलायां मङ्गलोनो विदशा

मं	पिं	धं	आ	म	उ	सि	सं
० ० ० १६ ४०	० ० ० २३ २०	० ० ० ५० ०	० ० १ ६ ४०	० ० १ २३ २०	० ० १ ४० ०	० ० १ ५६ ४०	० ० २ १३ २०
पिं	धं	आ	म	उ	सि	सं	मं
० ० १ ६ ४०	० ० १ ४० ०	० ० २ १३ २०	० ० २ ४६ ४०	० ० ३ २० ०	० ० ३ ५३ २०	० ० ४ २६ ४०	० ० ० [illegible]
धं	आ	म	उ	सि	सं	मं	पिं
० ० २ ३० ०	० ० ३ २० ०	० ० ४ १० ०	० ० ५ ० ०	० ० ५ ५० ०	० ० ६ ४० ०	० ० ७ ५० ०	० ० [illegible] ०

भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं	पिं	धं
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
४	५	६	७	८	१	२	३
२६	३३	४०	४६	५३	६	१३	२०
४०	२०	०	४०	२०	४०	२०	०
भ	उ	सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
६	८	९	११	१	२	४	५
५६	२०	४३	६	२३	४६	१०	३३
४०	०	२०	४०	२०	४०	०	२०
उ	सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
१०	११	१३	१	३	५	६	८
०	४०	२०	४०	२०	०	४०	२०
०	०	०	०	०	०	०	०
सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ	उ
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
१३	१५	१	३	५	७	९	११
३६	३३	५६	५३	५०	४६	४३	४०
४०	२०	४०	२०	०	४०	२०	०
सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ	उ	सि
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
१७	२	४	६	८	११	१३	१५
४६	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३
४०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

पिंगलायां पिंगलान्तर्विदशा							
पिं	धं	भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
३	४	६	७	९	१०	१२	१
६	४०	१३	४६	२०	५३	२६	३३
४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०
धं	भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं	पिं
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
५	६	८	१०	११	१३	१	३
०	४०	२०	०	४०	२०	४०	२०
०	०	०	०	०	०	०	०
भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं	पिं	धं
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
८	११	१३	१५	१७	२	४	६
५३	६	२०	३३	४६	१३	२६	४०
२०	४०	०	२०	४०	२०	४०	०
भ	उ	सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
१३	१६	१९	२२	२	५	८	११
५३	४०	२६	१३	४६	३३	२०	६
२०	०	४०	२०	४०	२०	०	४०
उ	सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
२०	२३	२६	३	६	१०	१३	१६
०	२०	४०	२०	४०	०	२०	४०
०	०	०	०	०	०	०	०

सि	सं	मं	पिं	धं	आ	म	उ
०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	०	०	०	०	०
२८	८	३	७	११	१४	१९	२२
१२	६	५३	४६	४०	३३	२६	२०
२०	४०	२०	४०	०	२०	४०	०
सं	**मं**	**पिं**	**धं**	**आ**	**म**	**उ**	**सि**
०	०	०	०	०	०	०	०
१	०	०	०	०	०	०	१
५	४	८	१३	१८	२२	२६	८
३३	२६	५३	२०	४६	१३	४०	६
२०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०
मं	**पिं**	**धं**	**आ**	**म**	**उ**	**सि**	**सं**
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	३	४
३३	६	४०	१३	४६	२०	५३	२६
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

धन्यायां धन्यातो विदशा

धं	आ	म	उ	सि	सं	मं	पिं
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
७	१०	१२	१५	१७	२०	२	५
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
आ	**म**	**उ**	**सि**	**सं**	**मं**	**पिं**	**धं**
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
१३	१६	२०	२३	२६	३	६	१०
२०	४०	०	२०	४०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

म	उ	सि	सं	मं	पिं	धं	आ
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	१	०	०	०	०
२०	२५	२९	३	७	८	१२	१६
५०	०	१०	२०	१०	२०	३०	४०
०	०	०	०	०	०	०	०
उ	**सि**	**सं**	**मं**	**पि**	**धं**	**आ**	**म**
०	०	०	०	०	०	०	०
१	५	१०	०	०	०	०	०
०	०	०	५	१०	१५	२०	२५
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
सि	**स**	**मं**	**पिं**	**धं**	**आ**	**म**	**उ**
०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	०	०	०	०	०	१
१०	१६	५	११	१८	२३	२९	५
५०	४०	५०	४०	३०	२०	१०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
स	**मं**	**पि**	**धं**	**आ**	**म**	**उ**	**सि**
०	०	०	०	०	०	०	०
१	०	०	०	०	१	१	१
२३	६	१३	२०	२६	३	१०	१६
२०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०
०	०	०	०	०	०	०	०
मं	**पि**	**धं**	**आ**	**म**	**उ**	**सि**	**सं**
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	२	३	४	५	५	६
५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०
०	०	०	०	०	०	०	०

पिं	धं	भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
३	५	६	८	१०	११	१३	१
२०	०	४०	२०	०	४०	२०	४०
०	०	०	०	०	०	०	०

भ्रामर्यां भ्रामरीतो विदशा

भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं	पिं	धं
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	१	१	०	०	०
१६	२१	२५	०	४	४	८	१२
४६	१३	४०	६	३३	२६	५३	२०
४०	२०	०	४०	२०	४०	२०	०

भ	उ	सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा
०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	१	०	०	०	०
२७	३	८	१४	५	११	१६	२२
४६	२०	५३	२६	३३	६	४०	१३
४०	०	२०	४०	२०	४०	०	२०

उ	सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ
०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	०	०	०	०	१
१०	१६	२३	६	१३	२०	२६	३
०	४०	२०	४०	२०	०	४०	२०
०	०	०	०	०	०	०	०

सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ	उ
०	०	०	०	०	०	०	०
१	२	०	०	०	१	१	१
२४	२	७	१५	२३	१	८	१६
२६	१३	४६	३३	२०	६	५३	४०
४०	२०	४०	२०	०	४०	२०	०

सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ	उ	सि
०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	०	०	१	१	१	२
११	८	१७	२६	५	१४	२३	२
६	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३
४०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

मं	पिं	धं	भ्रा	भ	उ	सि	सं
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
१	२	३	४	५	६	७	८
६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०

पिं	धं	भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
४	६	८	११	१३	१५	१७	२
२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	१३
४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०

धं	भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं	पिं
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
१०	१३	१६	२०	२३	२६	३	६
०	२०	४०	०	२०	४०	२०	४०
०	०	०	०	०	०	०	०

भद्रिकायां भद्रिकातो विदशा

भ	उ	सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा
०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	०	०	०	०
४	११	१८	२५	६	१३	२०	२७
४३	४०	३६	३३	५६	५३	५०	४६
२०	०	४०	२०	४०	२०	०	४०

उ	सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ
० १ ३० ० ०	० १ २८ ३० ०	० २ ३ ४० ०	० ० ८ २० ०	० ० १६ ४० ०	० ० २५ ० ०	० १ ३ २० ०	० १ ११ ४० ०

सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ	उ
० २ ८ ३ २०	० २ ७ ४६ ४०	० ० ९ ४३ २०	० ० १९ ३६ ४०	० ० २९ १० ०	० १ ८ ५३ २०	० १ १८ ३६ ४०	० १ २८ २० ०

सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ	उ	सि
० २ २८ ५३ २०	० ० ११ ६ ४०	० ० २२ २३ २०	० १ ३ २० ०	० १ १७ २६ ४०	० १ २५ ३३ २०	० २ ६ ४० ०	० २ १७ ४६ ४०

मं	पिं	धं	भ्रा	भ	उ	सि	सं
० ० १ २३ २०	० ० २ ४६ ४०	० ० ४ १० ०	० ० ५ ३३ २०	० ० ६ ५६ ४०	० ० ८ २० ०	० ० ९ ४३ २०	० ० ११ ६ ४०

पिं	धं	भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं
० ० ५ ३३ २०	० ० ८ २० ०	० ० ११ ६ ४०	० ० १३ ५३ २०	० ० १६ ४० ०	० ० १९ २६ ४०	० ० २२ १३ २०	० ० २ ४६ ४०

धं	भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं	पिं
० ० १२ ३० ०	० ० १६ ४० ०	० ० २० ५० ०	० ० २५ ० ०	० ० २९ १० ०	० १ ३ २० ०	० ० ४ १० ०	० ० ८ २० ०

भ्रा	भ	उ	सि	सं	मं	पिं	धं
० १ २३ २३ २०	० ० २८ ४६ ४०	० १ ३ २० ०	० १ ८ ५३ २०	० १ १४ २६ ४०	० ० ५ ३३ २०	० ० ११ ६ ४०	० ० १६ ४० ०

उक्राथामु.क्रातो विदशा

उ	सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ
० २ ० ० ०	० २ १० ० ०	० २ २० ० ०	० ० १० ० ०	० ० २० ० ०	० १ ० ० ०	० १ १० ० ०	० १ २० ० ०

सि	सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ	उ
० २ २८ ४० ०	० ३ ३ २० ०	० ० ११ ४० ०	० ० २३ २० ०	० १ ५ ० ०	० १ १६ ४० ०	० १ २८ २० ०	० २ १० ० ०

सं	मं	पिं	धं	भ्रा	भ	उ	सि
० ३ १६ ४० ०	० ० १३ २० ०	० ० २६ ४० २	० १ १० ० ०	० १ २३ २० ०	० २ ६ ४० ०	० २ २० ० ०	० ३ ३ २० ०

मं	पि	ध	आ	म	उ	सि	सं
० ० १ ४० ०	० ० ३ २० ०	० ० ५ ० ०	० ० ६ ४० ०	० ० ८ २० ०	० ० १० ० ०	० ० ११ ४० ०	० ० १३ २० ०
पिं	धं	आ	म	उ	सि	सं	मं
० ० ६ ४० ०	० ० १० ० ०	० ० १३ २० ०	० ० १६ ४० ०	० ० २० ० ०	० ० २३ २० ०	० ० २६ ४० ०	० ० ३ २० ०
धं	आ	म	उ	सि	सं	मं	पिं
० ० १५ ० ०	० ० २० ० ०	० ० २५ ० ०	० १ ० ० ०	० १ ५ ० ०	० १ १० ० ०	० ० ५ ० ०	० ० १० ० ०
आ	म	उ	सि	सं	मं	पिं	धं
० ० २६ ४० ०	० १ ३ २० ०	० १ १० ० ०	० १ १६ ४० ०	० १ २३ २० ०	० ० ६ ४० ०	० ० १३ २० ०	० ० २० ० ०
म	उ	सि	सं	मं	पिं	धं	आ
० १ ११ ४० ०	० १ २० ० ०	० १ २८ २० ०	० २ ६ ४० ०	० ० ८ २० ०	० ० १६ ४० ०	० ० २५ ० ०	० १ ३ २० ०

सिद्धतयो सिद्धानो विदश							
सि	सं	मं	पिं	धं	आ	म	उ
० ३ ५ १६ ४०	० ३ १८ ५३ २०	० ० १३ ३६ ४०	० ० २७ १३ २०	० १ १० ५० ०	० १ २४ २६ ४०	० २ ८ ३ २०	० २ २१ ४० ०
सं	मं	पिं	धं	आ	म	उ	सि
० ४ ४ २६ ४०	० ० १५ ३३ २०	० १ ९ ६ ४०	० १ १६ ४० ०	० २ २ १३ २०	० २ १७ ४६ ४०	० ३ ३ २० ०	० ३ १८ ५३ २०
मं	पिं	धं	आ	म	उ	सि	सं
० ० १ ५६ ४०	० ० ३ ५३ २०	० ० ५ ५० ०	० ० ७ ४६ ४०	० ० ९ ४३ २०	० ० ११ ४० ०	० ० १३ ३६ ४०	० ० १५ ३३ २०
पिं	धं	आ	म	उ	सि	सं	मं
० ० ७ ४६ ४०	० ० ११ ४० ०	० ० १५ ३३ २०	० ० १९ २६ ४०	० ० २३ २० ०	० ० २७ १३ २०	० १ १ ६ ४०	० ० ३ ५ २०
धं	आ	म	उ	सि	सं	मं	पिं
० ० १७ ३० ०	० ० २३ २० ०	० ० २९ १० ०	० १ ५ ० ०	० १ १० ५० ०	० १ १६ ४० ०	० ० ५ ५० ०	० ० ११ ४० ०

आ	म	उ	सि	सं	मं	पि	धं
० १ १ ५ ४०	० १ ८ ५३ २०	० १ १६ ४० ०	० १ १४ २६ ४०	० २ २ १३ २०	० ० ७ ४६ ४०	० ० १५ ३३ २०	० ० २३ २० ०
म	उ	सि	सं	मं	पिं	धं	आ
० १ १८ २६ ४०	० १ २८ २० ०	० २ ८ ३ २०	० २ १६ ४६ ४०	० ० ८ ४३ २०	० ० १८ २६ ४०	० ० २९ १० ०	० १ ८ ५३ २०
उ	सि	सं	मं	पिं	धं	आ	मं
० २ १० ० ०	० २ २१ ४० ०	० ३ ३ २० ०	० ० ११ ४० ०	० ० २३ २० ०	० १ ५ ० ०	० १ ६ ४० ०	० १ २८ २० ०

सौंकृदायां संकदोतो विदशा

सं	मं	पिं	धं	आ	म	उ	सि
० ४ २२ १३ २०	० ० १७ ४६ ४०	० १ ५ ३३ २०	० १ २२ २० ०	० २ ११ ६ ४०	० २ २८ ५३ २०	० ३ १६ ४० ०	० ४ ७ २६ ४०
मं	पिं	धं	आ	म	उ	सि	सं
० ० २ १३ २०	० ० ४ २६ ४०	० ० ६ ४० ०	० ० ८ ५३ २०	० ० ११ ६ ४०	० ० १३ २० ०	० ० १५ ३३ २०	० ० १७ ४६ ४०

पिं	धं	आ	म	उ	सि	सं	मं
० ० ८ ५३ २०	० ० २२ २० ०	० ० १७ ४६ ४०	० ० २२ १३ २०	० ० २६ ४० ०	० १ १ ६ ४०	० १ ५ ३३ २०	० ० ४ २६ ४०
धं	आ	म	उ	सि	सं	मं	पिं
० ० २० ० ०	० ० २६ ४० ०	० १ ३ २० ०	० १ १० ० ०	० १ १६ ४० ०	० १ २३ २० ०	० ० ६ ४० ०	० ० १३ २० ०
आ	म	उ	सि	सं	मं	पिं	धं
० १ ५ ३३ २०	० १ १४ २६ ४०	० १ २३ २० ०	० २ २ १३ २०	० २ ११ ६ ४०	० ० ८ ५३ २०	० ० १७ ४६ ४०	० ० २६ ४० ०
म	उ	सि	सं	मं	पिं	धं	आ
० १ २५ ३३ २०	० २ ६ ४० ०	० २ १७ ४६ ४०	० २ २८ ५३ २०	० ० ११ ६ ४०	० ० २२ १३ २०	० १ ३ २० ०	० १ १४ २६ ४०
उ	सि	सं	मं	पिं	धं	आ	म
० २ २० ० ०	० ३ ३ २० ०	० १ १६ ४० ०	० ० १३ २० ०	० ० २६ ४० ०	० १ १० ० ०	० १ २३ २० ०	० १ ६ ४० ०

ति	सं	मं	पि	धं	आ	म	उ
०	०	०	०	०	०	०	०
३	४	१	१	१	२	२	३
१८	४	१५	१	१६	२	१७	३
५३	२६	३३	६	४०	१२	४६	२०
२०	४०	२०	४०	०	२०	४०	०

भुक्तभोग्यानां विंशोत्तरीदशा

गु	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
१३	२	१९	१७	७	२०	६	१०	७	१८
५	६	०	०	०	०	०	०	०	०
१५	१४	०	०	०	०	०	०	०	०
४	५५	०	०	०	०	०	०	०	०
५४	६	०	०	०	०	०	०	०	०
७	३२	२८	४५	५३	७२	७८	८८	९५	१३
३	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	३	३	३	३	३	३	३	३	३
०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
०	६	६	६	६	६	६	६	६	६

काश्मीरिकक्रमतो जन्मनक्षत्रगतघटियों से विंशोत्तरीका भुक्तभोग्य काल

घ	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
२	५ १० १२	९ ९ १०	६ १० ४	१७ ७ ६	१५ ७ २२	१८ ६ २८	१६ ७ १४	६ १० ४	१९ ६ २०
	५ ९ १८	९ ८ ०	६ ९ ६	१७ ४ २४	१५ ५ १८	१८ ४ १२	१६ ५ १	६ ९ ६	१९ ४ ०
	५ ८ २४	९ ६ २०	६ ८ ८	१७ २ १२	१५ ३ १७	१८ १ २६	१६ २ २८	६ ८ ८	१९ १ १७
	५ ८ ०	९ ११ १०	६ ७ १०	१७ ० ०	१५ १ १०	१७ ११ १०	१६ ० २०	६ ७ १०	१९ १० २०
	५ ७ ६	९ ४ ०	६ ६ १२	१६ ९ १८	१४ ११ ६	१७ ८ २४	१५ १० १२	६ ६ १२	१८ ८ ०
	५ ६ १२	९ २ २०	६ ५ १४	१६ ७ ६	१४ ९ २	१७ ६ ८	१५ ८ ४	६ ५ १४	१८ ५ १०

घ	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
१	५ ११ ६	९ १० २०	६ ११ २	१७ १९ २८	१५ १४ २६	१९ १४ १४	१६ १९ २२	६ ११ २	१९ १४ १०

घ	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
८	५ ५ १८	९ १ १०	६ ७ १६	६ ७ २४	१४ ६ २८	१७ ३ २२	१५ ५ २६	६ ४ १६	१८ २ २०
९	५ ४ २४	९ ० ०	६ ३ १८	१६ २ १९	१४ ४ २४	१७ १ ६	१५ ३ १८	६ ३ १८	१८ ० ०
१०	५ ७ ०	८ १० २०	६ २ २०	१६ ० ०	१४ २ २०	१६ १० २०	१५ १ १०	६ २ २०	१९ ९ १०
११	५ ३ ६	८ ९ १०	६ १ २२	१५ ९ १८	१४ ० १६	१६ ८ ४	१४ १२ २	६ १ २२	१९ ६ २०
१२	५ २ १२	८ ८ ०	६ ० २७	१५ ७ ६	१३ १० १२	१६ ५ १८	१७ ८ २७	६ ० २४	१७ ४ ०
१३	५ १ १८	८ ६ २०	५ ११ २६	१५ ४ २४	१३ ८ ८	१६ ३ २	१४ ६ १६	५ ११ २६	१७ १ १०

सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	घ
५ ० २४	८ ५ १०	५ १० २८	१५ ३ १२	१३ ६ ४	१६ ० १६	१७ ४ ८	५ १० २८	१६ १० २०	१४
५ ० ०	८ ५ ०	५ १० ०	१५ ० ०	१३ ४ ०	१५ १० ०	१४ २ ०	५ १० ०	१६ ८ ०	१५
४ ११ ६	८ २ २०	५ ९ २	१४ ५ १८	१३ १ २६	१५ ७ १५	१३ ११ २२	५ ९ २	१६ ५ १०	१६
४ १० १२	८ १ २०	५ ८ ४	१४ ७ ६	१२ ११ २२	१५ ४ २५	१३ ९ १४	५ ८ ४	१६ २ २०	१७
४ ८ ८	८ ० ०	५ ७ ६	१४ ४ २७	१२ ९ १८	१५ २ १२	१३ ७ ६	५ ७ ६	१६ ० ०	१८
४ ८ २४	७ १० २०	५ ६ ८	१४ २ १२	१२ ७ १४	१५ ५ २६	१३ ४ २८	५ ६ ८	१५ ९ १०	१९

ग्र	सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	के	ध्रु	सू	चं	भौ	बु	जी	शु	श	के	ध्रु
२०	४ ८ ०	७ ५ १०	५ ५ २७	१७ ० ०	१२ ५ १७	१४ ५ १०	१३ २ ३०	५ ५ १४	१९ ६ २०	४ २ १२	७ ८ ०	४ १० २४	१२ ७ ६	११ २ १२	१३ ३ १८	११ १० २५	४ १० २४	१४ ० ०
२१	४ ७ ६	७ ८ ०	५ ४ १२	१३ ५ १८	१२ ३ ६	१४ ६ २४	१३ ० १२	५ ४ १२	१५ ४ ०	४ १ १५	६ १० २०	४ ५ २६	१२ ४ २४	११ ० ८	१३ २ २	११ ८ १६	७ ५ २६	१२ [illegible] १०
२२	४ ६ १२	७ ६ २०	५ ३ १४	१३ ७ ६	१२ २ २	१४ ४ ८	१२ १० ६	५ ३ १४	१५ १ १०	४ ० २४	६ ९ १०	४ ८ २८	१२ ३ १२	१० १० ७	१३ १० १६	११ ६ ८	७ ८ २४	[illegible] ६ १७
२३	४ ५ १८	७ ५ १०	५ २ १६	१३ ४ २४	११ १० २८	१४ १ २२	१२ ७ २६	५ २ १६	१४ १० २०	४ ० ०	६ ८ ०	४ ८ ०	१२ ७ ०	१० ८ ७	१३ ८ ०	११ ४ ७	४ ८ ०	१३ ४ ७
२४	४ ४ २४	७ ४ ०	५ १ १८	१३ २ १२	११ ८ २४	१३ ११ ६	१२ ५ १८	५ १ १८	१४ ८ ०	३ ११ २५	६ ६ २०	४ ७ २	११ ९ १८	१० ५ २६	११ ५ १४	११ १ २२	७ २ २	१२ १ १०
२५	४ ४ ०	७ २ ३०	५ ० २०	१३ ० ०	११ ६ ३०	१३ ८ २०	१२ ३ १०	५ ० २०	१४ ५ १०	३ १० १२	६ ५ २०	४ ६ ६	११ ७ ६	१० २ २२	१२ २ २८	१० ११ १४	४ ६ ४	१२ १० २०
२६	४ ३ ६	७ १ १०	४ ११ २२	१२ ९ १८	११ ४ १६	१३ ६ ४	१२ १ २	४ ११ २२	१४ २ २०	३ ९ १८	६ ४ ०	४ ५ ६	११ ४ २४	१० १ १८	१२ ० २२	१० ९ ६	४ ५ ६	१२ ८ ०

घटी	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
३४	३ ८ २४	६ २ २०	७ ४ ८	१५ २ १२	१५ १५ ७	११ १५ २६	१० ६ २८	७ ७ ८	१२ ५ १०
३५	३ ८ ०	६ ६ ५०	७ ३ ५०	१५ ० ०	१५ १५ १७	११ ७ १०	१० ७ २०	७ ३ २०	१२ २ २०
३६	३ ७ १५	६ ० ०	७ २ १२	१५ १५ १८	१५ ७ ६	११ ४ २४	१० १२ १२	७ २ १२	१२ ० ०
३७	३ ६ १२	५ १० २०	७ १ १६	१० ७ ६	१५ ५ २	१५ २ ८	१० ० ४	४ १ १६	११ १५ १०
३८	३ ५ १८	५ १५ १०	७ ० १६	१० ४ २४	१५ २ २८	१० ११ २२	१५ ९ २६	४ ० १६	११ ६ २०
३९	३ ४ २४	५ ८ ०	३ ११ १८	१० २ १२	१५ ० २४	१० १५ ६	१५ ७ १८	३ ११ १८	११ ७ ०
४०	३ ७ ०	५ ६ २०	३ १० २८	१० ० ०	८ १० २०	१० ६ २०	१५ ५ १०	३ १० २०	११ १ १०
४१	२ २ ६	५ ५ १०	३ १५ २४	१५ १५ १८	८ ८ १६	१० ४ ४	१५ ३ २	३ १५ २२	१० १० २०
४२	३ २ १२	५ ४ ०	३ ८ २४	१५ ७ ६	८ ६ १२	१० १ १८	१५ ० २४	३ ८ २४	१० १५ ७
४३	३ १ १८	५ २ ३०	३ ७ ३६	१५ ४ २४	८ ४ ८	१५ ११ २	८ १० १६	३ ७ २६	१० ५ १०
४४	३ १ २४	५ १ १०	३ ६ ३६	१५ ३ १२	८ ३ ४	१५ ८ १६	८ ८ ८	३ ६ २९	१० ३ २०
४५	३ ० ०	५ ० ०	३ ६ ०	१५ ० ०	८ ० ०	१५ ६ ०	१५ ६ ०	३ ६ ०	१० ० ०

इस पञ्चचालीस ४५ से ज़ादा भी जन्मनक्षत्र के घटी हुने पर भी वह पंचतालीस की दशा ही नियमित है काश्मीरिक मत है इति

ह्र	चं	भा	ञु	औ	श्रु	ह्र	वाराः
ञ्छि	ष्टू	क्षे	ह	नू	ञ्चां	क्षे	आनन्दः
म	ड्डी	म	चि	ज्ये	मि	झू	कालदण्ड
क्रौ	डुं	फू	ला	मू	श्र	भां	धौम्रः
रो	तिं	फा	वि	फू	धं	रे	प्राजापत्य
ष्टू	क्षे	ह	नू	घां	शा	ञ्छि	सौम्यः
ड्डी	म	चि	ज्ये	मि	झू	म	ध्वांक्षः
डुं	फू	ला	मू	श्रं	भां	क्रौ	ध्वजः
ति	फा	वि	फू	धं	रे	रो	श्रीवत्सः
क्षे	ह	नू	घां	शा	ञ्छि	ष्टू	वज्रम्
म	चि	ज्ये	मि	झू	म	ड्डी	मुद्गरम्
फू	ला	मू	श्र	भां	क्रौ	डुं	छत्रम्
फां	वि	फू	धं	रे	रो	ति	मैत्रम्
ह	नू	घां	शा	ञ्छि	ष्टू	क्षे	मानसम्
चि	ज्ये	मि	झू	म	ड्डी	म	वाम्यः
ला	मू	श्र	भां	क्रौ	डुं	फूं	आलापक
वि	फू	धं	रे	रो	ति	फां	उन्मूलम्
ह्र	चं	भा	ञु	औ	श्रु	ह्रा	वाराः

ह्र	चं	भो	ञु	औ	श्रु	ह्रा	वाराः
नू	घां	शा	ञ्छि	ष्टू	क्षे	ह	मृत्युः
ज्ये	मि	झूम	म	ड्डी	म	चि	काण्डः
मू	श्र	भां	क्रौ	डुं	फू	ला	सिद्धिः
फूं	धं	रे	रो	ति	फा	वि	शूलम्
घां	शा	ञ्छि	ष्टू	क्षे	ह	नू	अमृतम्
मि	झूम	म	ड्डी	म	चि	ज्ये	गजः
श्र	भां	क्रौ	डुं	फूं	ला	मू	कुद्दलं
धं	रे	रो	ति	फा	वि	फूं	मातंग
शा	ञ्छि	ष्टू	क्षे	ह	नू	घां	क्षयः
झूम	म	ड्डी	म	चि	ज्ये	मि	वरः
भां	क्रौ	डुं	फूं	ला	मू	श्र	स्थिरः
रे	रो	ति	फां	वि	फूं	धं	प्रवर्धः
ह्र	चं	भो	ञु	औ	श्रु	ह्रा	वाराः

ग्रहाणां दृष्टयः

ग्रहाः	रविदृष्टि	चन्द्रदृष्टि	भौमदृष्टि	बुधदृष्टि	जीवदृष्टि	शुक्रदृष्टि	शनिदृष्टि	लग्नदृष्टि
ल	० ४९ ३३	० २५ ८	० २७ १६	० ३८ ४९	० ५१ १६	० ५२ ५१	० ० ०	० ० ०
श	० ४८ ३८	० ५५ ९	० ४२ ११	० ३६ ४४	० ५८ २०	० ५२ ३	० ० ०	० ० ०
शु	० ० ०	० ४५ ४५	० ५ ३६	० ० १४	० ० ०	० ० ०	० १६ ९	० ३५ ४४
जी	० ० ०	० ३४ २९	० ११ ५६	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० २८ ३५	० २५ ३८
बु	० ० ०	० ४८ ४२	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० १४ ४२	० २१ १९
भौ	० ० ०	० ४७ २८	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ४२ ११	० ४७ १९
चं	० १९ ९	० ० ०	० ५८ ११	० १३ १४	० १८ ३८	० ३३ ३६	० ३ ५०	० २ ८
र	० ० ०	० २६ ३६	० १० १४	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० २५ ३३	० ८ १९

आसीच्छिवार्चोऽन्नमतिः प्रसिद्धः सद्रामदेवस्त इति द्विजेन्द्रः । तस्याऽग्रविद्या ह्यऽभवन्नाम स्तनवत्तिषां ज्ञमोदाः
रव्यकृतस्तृतीयः ॥ १ ॥ तस्याऽत्मजो हायनजातकाख्य

तन्मुहूर्तशास्त्राद्युपयोगे सारभू ।
निर्मथ्य काश्मीरिकधर्मप्रीत्यै
संग्रहे केशवभट्टनामा ॥ २ ॥

यत्प्रेरितोऽहं कृतवानिमं संग्रहं
काश्मीरिज्योतिषगणस्य सुस्फुटम् ।
स एव देवः सुजनीयहृत्कजं
विलोक्य चेदं नयतु विकासिताम् ॥ ३ ॥
यस्माच्च्यनो जडमयो जीवसंघश्चिदायते ।
तस्यैव पूजा भवतु श्रमोऽयं ममतास्पदः ॥ ४ ॥
इति श्रीदैवज्ञकेशवभट्टसंग्रथितः काश्मीरिकज्योतिष संग्र- कुसुमाञ्जलिः स्विष्टदेवीचरणार्चनायां समाप्तिकृता र्थतां यायात् ॥ ॐतत्सद्ब्रह्म ॥

वस्त्रसुणादि[५९] । नष्टलाभादि[६०] । ऋण[६१] । अग्निवासाऽग्निकोष्ठौ । अग्न्याधान[६२] । सर्वारम्भ[६३] । पञ्चकवर्ज्य । त्रिपुष्कर[६४] । प्रेतदीपदान[६५] । क्षुत्फल[६६] । गोप्रसूति । गण्डान्त[६७] । गण्डान्तजात । अभुक्तमूल । वारवेला[७०] । मूलवृत्त[७१] । मूलपुरुष । मूलनिवास[७२] । वारवेलाचक्र[७३] । नक्षत्रवेला[७४] । मध्याह्न[७५]-रोहिणी-कुतप । वेलाचक्र[७६] । काश्मीरिकपञ्चाङ्गावलोकनविधि[७७] । संक्रान्तिचक्रादि[७८] । ग्रहफलविपाक[८१] । दुर्ग्रहशान्ति । रोगविषयग्रहफल[८२] । ताराफल[८३] । देवादिकृतदोषज्ञान[८४] । तच्छान्तिकदान । अष्टमाधिपफल[८६] । सूर्यभौमशनिवार (ईश-मङ्गल-बडशरवार) शनिचक्र[८८] । जातकेष्टि[८९] । दन्तजननफल[९०] । दोलारोहन । अन्नप्राशन[९१] । कर्णवेध[९३] । भानुमासमलमासं[९४] चूडादौ[९५] । यात्रिकप्रवेश । नौयात्रा[९७] । वृक्षारोपनराजदर्शनमद्यारम्भगोविक्रयादि । पशुयात्रा[९८] । औषध[९९] । सूचीनाडीमोचन रेचनादि । रोगफल[१०१] । बीजवापन[१०२] । शय्या[१०३]